

इस्लाम में मानव-सम्मान

मुहम्मद अज़हर मदनी

इन्सान का संबंध किसी भी धर्म से हो, इन्सान की हैसियत से सभी इन्सान बराबर हैं, समाज में गरीब की अहमियत वही होनी चाहिये, जो अहमियत मालदार की है, इस्लाम धर्म की मानवीय शिक्षाओं का सार यही है। इस्लाम की नज़र में सभी इन्सान एक आदम की औलाद हैं, इसलिये औलाद के बीच अन्तर करने का कोई औचित्य नहीं है, केवल जगह कबीले के आधार पर अन्तर नहीं होना चाहिये। इस्लाम की निगाह में अन्तर की सबसे बड़ी वजह अगर कुछ हो सकती है तो वह इन्सान का कर्म है जो इन्सान के स्वर्ग और नरक में ले जाने का कारण बनेगा। अगर कोई नेक है तो बिल्कुल साफ है कि उसको राहत भरा बदला मिलना चाहिये और अगर किसी का कर्म ठीक नहीं है तो मरने के बाद उसको उसके कर्म के अनुसार बदला मिलेगा। जाहिरी तौर पर कुंबे कबीले और खानदान का जो नाम रखा गया है तो यह एक दूसरे को पहचानने और बुलाने के लिये है। देखिये कुरआन किस इन्सान को सर्वश्रेष्ठ करार दे रहा है सम्माननीय इन्सान बता रहा है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: ऐ लोगो! हमने तुम को एक मर्द औरऔरत से पैदा किया है और हमने तुम्हारे कबीले बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको, बेशक तुम में अल्लाह के नजदीक सम्माननीय वह है जो अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाला है।” (सूरे हुजुरात:93)

इस्लाम ने इन्सान की इज्जत व सम्मान को केवल उसके जीवन तक ही सीमित नहीं किया है मरने के बाद भी उसको बड़ा सम्मान दिया है। यही वजह है जब कोई मरता है तो इस्लाम ने उसे बेहतर तरीके से स्नान कराने, खुशबू लगाने, पवित्र सफ़ेद कपड़ा पहनाने, और बड़े ही एहताराम के साथ उसको क़ब्रस्तान लेजाकर कब्र में अच्छे ढंग से तदफ़ीन करने का हुक्म दिया है। जब इन्सान ने एक मुर्दे के साथ इस तरह का व्यवहार करने का हुक्म दिया है तो अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि वह मानव सम्मान का कितना बड़ा झण्डा वाहक है। लेकिन अफसोस है कि कुछ लोग इस्लाम की गलत व्याख्या करके इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने की कुचेष्टा कर रहे हैं।

हज़रत उमर ने ईलिया के ईसाई वासियों से संधि की जिसमें सभी वासियों को मानव सम्मान की पूरी गारन्टी दी गई है। मुआहिदे (संधि) में ईलिया के वासियों के जान व माल की सुरक्षा, उनके धर्म शालाओं की सुरक्षा की जमानत, माल की हिफाज़त की जमानत दी गई है इसी तरह धर्म के मामले में किसी तरह की कोई जोर जबरदस्ती नहीं होगी, न किसी को किसी तरह का दुख दिया जायेगा। यह सब मानव सम्मान के आदर्श और उदाहरण है जिनका बाद के मुसलमानों ने व्यवहारिक नमूना पेश किया है, यह सब इस्लाम की शिक्षाओं का परिणाम है।

≡ मासिक

इसलाहे समाज

नवंबर 2024 वर्ष 35 अंक 11

जुमादिल उला 1446

संरक्षक

असगर अली 'सलफी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- ☐ वार्षिक राशि 100 रुपये
☐ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से
एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान
बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर
अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा
मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. इस्लाम में मानव-सम्मान 02
2. 35वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस का संदेश 04
3. इस्लाम और राष्ट्रीय एकता 08
4. उदारता का अर्थ 10
5. अमन व शान्ति की अहमियत... 12
6. भीक के खातमे में उमर बिन अब्दुल अजीज़
रह० का कारनामा 14
7. मानव सम्मान की सुरक्षा 16
8. इस्लाम, उदारता और संयुक्त समाज 17
9. मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस का परिचय 18
10. कांफ्रेंस के नाम महत्वपूर्ण हस्तियों
का संदेश 21
11. दाइश के खिलाफ अहले हदीस ओलमा
का सामूहिक फ़तवा 82
12. आतंकवाद के विरोध में मर्कज़ी जमीअत
अहले हदीस हिन्द का सामूहिक फ़तवा 86
13. हम आतंकवाद के निरन्तर विरोध में क्यों 89
14. गैर-मुस्लिमों के साथ मध्यम व्यवहार 92
15. अहले हदीस कांफ्रेंस (विज्ञापन) 94

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehaddeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

3

संसार के वजूद से लेकर अब तक मानव इतिहास में जिस हस्ती ने अपनी दया, कृपा और हमदर्दी से पूरे संसार को प्रभावित किया वह हस्ती अंतिम पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की है। जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया: “और हमने आप को पूरे संसार के लिये रहमत बना कर भेजा” (सूरे अंबिया)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रहमत पूरे संसार की हर वस्तु के लिये है केवल इन्सानों के लिये नहीं बल्कि संसार के एक-एक कण के लिये, पेड़ पत्थर के लिये वनस्पति, निर्जीव के लिये अपने दोस्त के लिये, और अपने खून के प्यासे के लिये भी। आप के प्यारे साथियों ने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि मुश्रिकीन (अनेकेश्वरवादियों) पर बददुआ कर दीजिये पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मैं लानत मलामत करने वाला बना कर नहीं बल्कि रहमत बना कर भेजा गया हूँ। (सहीह मुस्लिम २५६६)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस अरब क्षेत्र में पैगम्बर बना कर भेजे गये थे वहां के लोगों की परंपरा और तारीख थी कि उनके अन्दर वफादारी थी, वह झूठे, बैमान, दुराचार, गददार और धोकेबाज़ नहीं थे, अत्यंत नाजुक मोड़ पर भी मानवता, सज्जनता, और अमानतदारी का सुबूत देते थे। इसलिये आज इन्सानों का सबसे बड़ा मसला यह है कि वह अपने पालनहार का वफादार बने। यह वफादारी एक महान विशेषता है। अल्लाह तआला ने उन ईमान वालों की प्रशंसा की जिन्होंने अपने रब से किये गये वादों को पूरा किया। हर हाल में अल्लाह की खुशी के लिये प्रयासरत रहे।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम एक वफादार इन्सान बनें, हमारी वफादारियां सबसे पहले अपने रब के साथ हों अपने रसूल के साथ, कुरआन व इस्लाम के साथ, अपने करीबी रिश्तेदारों अपने प्रिय देश भारत और इसमें बसने वाले तमाम इन्सानों के साथ होनी चाहिए, यही हमारे पैगम्बर का सन्देश है। आप ने इन मानवीय मूल्यों को जीवन भर निभाया। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बच्चों के साथ, बेगानों के साथ प्रेम और दया करूणा करते थे, उन्होंने बच्चों से प्रेम करने में अपने और गैर के अन्तर को खतम कर दिया, उन्होंने सहाबा किराम की औलाद पर दया भरी निगाह डाली, आज मुसलमान बच्चों के साथ किसी कदर नमी का प्रदर्शन कर लेते हैं, मुस्कुरा देते हैं लेकिन दूसरों के बच्चों पर नज़र पड़ते ही हमारी सोच, हमारा मूड और भाषाशैली

बदल जाती है।

कुरबान जाइये पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एक यहूदी लड़का आप की सेवा कर रहा था बीमार पड़ गया, नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसका हाल चाल मालूम करने और बीमार पुरसी के लिये स्वयं उसके घर पहुंच गये, इस बच्चे को इस्लाम की दावत दी, बच्चा बाप को देखने लगा, बच्चे के बाप ने कहा कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मान लो, वह बच्चा मुसलमान हो गया आप ने फरमाया: अल्लाह की तारीफ जिसने इस बच्चे को नरक की आग से बचा लिया। (सहीह बुखारी)

यहूदी बाप ने इस नबी की मुहब्बत अपने बेटे के साथ देखी, वह पिघल गया, ऐसा इन्सान जो मेरे बेटे की इयादत के लिये मेरे घर आ गया, उसने अपने बेटे को पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मान लेनी की इजाज़त दे दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अमल से हमें यह पैग़ाम दिया है कि समाज के बच्चे को प्रेम

दो, बच्चे को समाज से जो मिलता है बड़ा हो कर वह अपनी मोहब्बत व प्यार का बदला देता है।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमीर गरीब के बीच अन्तर को बदल दिया। आप ने फरमाया असल चीज़ इन्सान का चरित्र है। अगर किसी मालदार के पास चरित्र और नैतिकता है तो आप ने उसको स्वर्ग में जाने की शुभ सूचना दी। उस्मान गनी रज़ियल्लाहो अन्हो को जन्नत की शुभ सूचना दी, और अगर यह चरित्र किसी गरीब के पास है तो उसको जन्नत की शुभ सूचना दी यह बलाल हैं जमीन पर चलते हैं लेकिन चलने की आहट जन्नत में सुनाई देती है। असल चीज़ आचरण एवं चरित्र है जिस मालदार इन्सान के पास नैतिकता नहीं वह गरीब है और एक गरीब अच्छे चरित्र वाला इन्सान सब पर भारी पड़ता है। इस जमाने में नमाज़ रोज़ा, उमरा आसान है लेकिन ध्यान रहे कि कभी अपने दिमाग में कारून जैसा घमण्ड न पैदा हो, अपने दिलों को सख्ती से, बख़ली से बचा लें और अपने किरदार

को नबी की सीरत के अनुसार ढाल लें और दिलों को दपर्ण की तरह साफ रखें। हसद जलन न हो, बल्कि पूरी मानवता से प्रेम और दया की भावना हो, समाज का कोई व्यक्ति हास्पिटल में हो, बधिर हो मजबूर हो, फालिज का मरीज हो किसी परेशानी में हो ऐसे व्यक्ति की बीमार पुरसी की जाये, उसके दुख में साझीदार बनें, अगर मोहल्ला पड़ोस का बीमार परेशान है, गरीब तड़प रहा है और इस की टीस दिल में महसूस न करें तो फिर अपने ईमान का जायज़ा लें।

आप का इस्लाम आप को मानवता से प्रेम सिखाता है बूढ़े बुजुर्ग, अर्ध पागल के साथ दया का पाठ देता है और उनकी दुआओं से और खुशी की इन आंसुओं से जो उनकी आखों में छलक रहे हैं, तुम्हारी जिन्दगी में बहार पैदा और रूठी रोनक लौट जायेगी, बरकतें नाज़िल होंगी और अल्लाह की रहमतों के पात्र हो जाओगे।

यह दौर बड़ी आजमाइशों का है, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उम्मत के नौजवानों को औरतों को बेटियों और

मांओं को इस्लाम से दूर करने की साजिश हो रही है, इस्लाम के पैगम्बर की शान में गुस्ताखी और विचित्र फोटो बना कर उनको आतंकवादी के रूप में पेश किया जा रहा है, हदीसों का मजाक उड़ाया जा रहा है, इसमें सन्देह पैदा किया जा रहा है, इसका इन्कार किया जा रहा है, सहाबा के स्थान एवं महानता को गिराया जा रहा है।

ऐसे हालात में सवाल यह पैदा होता है कि आप ने मुस्लिम नौजवानों को गुमराही से निकालने के लिये क्या किया? आपने पवित्र कुरआन की पवित्रता और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान की सुरक्षा के लिये कौन सा व्यवहारिक कदम उठाया? हदीसों की हिफाज़त किस अन्दाज़ से की? आप ने सहाबा के दिफा में कौन सी भूमिका निभाई? आज इस्लाम के प्रचार व प्रसार का सबसे बड़े केन्द्र मदारिस हैं, उनसे संपर्क करें शिर्क व बिदअत से दामन बचाने की अगर कोई महफूज जहग है तो वह हमारी मस्जिदें हैं, इन से जुड़ें और इनको आबाद करने की चिंता करें ओलामा और इमामों की

कद्र करें। यही वह लोग हैं जिन से इस्लाम का कुछ एतबार बाकी है, अपने दीनी संगठनों की बका व स्थिरता की चिंता करें क्योंकि यही हमारी पनाहगाह हैं और इसी के बुद्धिमान जिम्मेदारान तुम्हारे दीनी, राजनीतिक परिवारिक सुरक्षा के लिये परेशान एवं सक्रिय हैं।

जमीअत अहले हदीस के जियालो! आप का यह संगठन आप के पर्वजों की एमानात और उनके सपनों का साकार है यह देश की सब से प्राचीन संस्था है जिसकी बुनियाद १६०६ में कुरआन व हदीस के झण्डावाहकों के हाथों रखी गई और जिन्होंने समाज को सुन्नत का दर्पण दिखाया। इस संगठन ने कठिन और असहाय हालात में भी कुरआन व हदीस की शिक्षाओं को जीवित रखा, समाज व व्यक्ति को एकता की लड़ी में पिरोने और एक संगठित कौम की हैसियत से जीवन गुजारने की भरपूर कोशिश की।

आज जब इस संगठन ने महसूस किया कि इन्सान अपनी हैसियत खो चुका है, इन्सानों की प्रतिष्ठा और सम्मान खतम होता

जा रहा है ऐसे में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने देश की राजधानी दिल्ली में ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस का आयोजन करने का फैसला किया और इसका केन्द्रीय शीर्षक “मानवता का सम्मान और विश्व धर्म” रखा ताकि दुनिया के सामने सब से पहले यह स्पष्ट हो जाये कि इस्लाम कर्म में इन्सान की जान की कितनी कद्र व कीमत है, इन्सानों के अधिकार क्या हैं और इन अधिकारों के हनन से कितने खतरनाक परिणाम जाहिर होते हैं।

दुनिया में जितने धर्म और मत हैं उनकी शिक्षा मानवता के सम्मान पर आधारित है दुनिया का कोई भी धर्म किसी का नाहक खून बहाने या गर्दन उड़ा देने की इजाज़त नहीं देता है। इसलिये दुनिया के सामने मानव सम्मान, और इन्सान के स्थान को दुनिया के समाने पेश किया जाए, उन तमाम बातों का उल्लेख किया जाये जो इन्सान के जान व माल और इन्सान की अक्ल व चेतना को प्रभावित करती हैं। परिवारिक जीवन में आग लगती और अमन व शान्ति

के सूरज को ग्रहण लगता है। आज की सिसकती इन्सानियत को ऐसे उपाय की ज़रूरत है जो उसकी कठिनाइयों उलझनों का समाधान हो। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के ओलमा प्रचारकों और इन्सानियत से सच्ची मुहब्बत रखने वालों की यह जिम्मेदारी है कि वह एक स्टेज पर जमा हों और दुनिया को एकता, समता, न्याय का, मानव सौहार्द का सन्देश सुनायें, सभी धर्मों, धार्मिक गुरुओं और उनकी किताबों के सम्मान का एलान करें, उनके पूजा

स्थलों की सुरक्षा का उपदेश दें।

रिवायत के मुताबिक कांफ्रेंस के अवसर पर शीर्षक के अनुसार प्रसिद्ध लेखकों के मकालात और मज़मून प्रकाशित होते हैं जो मानव-सम्मान को बढ़ावा देने में लाभकारी साबित होंगे। यह सब लोगों की दिलों की आवाज़ है जिसमें लेखकों ने अपनी समझ के अनुसार अपने ख़्यालात प्रस्तुत किये हैं सबके सम्मान के बावजूद सबकी राय और विचार से और भाषाशैली से सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

इस अवसर पर अपने

सम्माननीय सलाहकार एवं कार्य समिति के सदस्यों का धन्यवाद अदा करना ज़रूरी है जिन्होंने हर मोड़ पर इखलास दर्दमन्दी के साथ हमारा साथ दिया, कठिनाइयां उठाई, सफर की परेशानियों को झेला, और जमीअत व जमाअत के साथ अपनी समबद्धता और वफादारी का सुबूत दिया। अल्लाह तआला इन सभी लोगों की नेकियों को कुबूल फरमायें, उनकी आखिरत को संवार दे, अपने नेक बन्दों में शामिल करले।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त जिम्मेदारी है।

इस्लाम और राष्ट्रीय एकता

मुहम्मद ताहिर हनीफ़

दुनिया का कोई भी धर्म नफ़रत नहीं बन्धुत्व और मानवता का पाठ सिखाता है। अल्लाह के बन्दों से प्यार मोहब्बत का उपदेश देता है और यह सिखाता है कि अपने दूसरे भाइयों के साथ मिल कर रहो हर इन्सान प्राकृतिक रूप से अपनी जन्म भूमि से प्यार करता है।

इस्लाम धर्म दया करुणा और अमन व शान्ति का झण्डावाहक है। उसने भाईचारा, समता, प्यार मोहब्बत, एक दूसरे से हमदर्दी की शिक्षा दी है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजे गये। जैसा कि कुरआन में भी अल्लाह तआला ने फरमाया: “और हम ने आप को पूरे संसार के लिये रहमत बना कर भेजा है” (सूरे अंबिया-८)

इस्लाम ने समाज के हर वर्ग को अधिकार दिये हैं और सह अस्तित्व की मिसाल काइम की है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाइयों के साथ एक मुआहिदा किया जिस में पैगम्बर

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाइयों को उनके धर्म के बारे में पूर्ण रूप से आज़ादी दी। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिना किसी विभेद के उनके बीच भाई चारा को विकसित किया और इन्सानों को गुलामी से आज़ाद किया बल्कि पूरी मानवता को एक डायनामिक अर्थ दिया जिस में रंग व नस्ल, धर्म और जाति व समुदाय के नाम पर कोई भेद भाव न हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: तुम में से हर एक आदम से है और आदम मिट्टी से पैदा किये गये।

राष्ट्रीय सौहार्द, धार्मिक उदारता और बन्धुत्व को विकसित करने के लिये फरमाया: अगर आज भी कोई हिलफुल फजूल जैसे मुआहदे की बात करता है तो हम इस तरह के मुआहदे (संधि) में शामिल होंगे। आप ने हिलफुल फजूल संधि में शामिल होकर इस्लाम के अनुयाइयों को यह सन्देश दिया है कि जब अमन व अमान और मानवता के कल्याण की बात हो रही हो तो

मुसलमानों को ऐसे नेक कामों में शामिल होना चाहिये।

ईलिया के वासियों से हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने जो संधि की थी उस में निम्न बातों की गारंटी थी:

१. ईलिया के वासियों को धर्म परिवर्तन के लिये मजबूर नहीं किया जायेगा।

२. उनके गिरजाघर को तोड़ा नहीं जायेगा।

३. उनमें मुसलमान रहने के लिये नहीं जायेंगे।

४. उनको पूर्ण रूप से धार्मिक आज़ादी होगी।

प्रोफेसर एम एस अख्तर राष्ट्रीय एकता का अर्थ बयान करते हुये लिखते हैं कि राष्ट्रीय एकता के लिये ज़रूरी है कि डाइवर्सिटी को स्वीकार किया जाये बल्कि हर व्यक्ति के द्वारा इसका सम्मान किया जाये। इसमें एक दूसरे को समझने और उदारता का वातावरण हो। सरकार के कानून के जरिये किसी अन्तर के बिना इन्साफ की बुनियाद पर अधिकारों की रक्षा हो।

एक दूसरे चिंतक कहते हैं:

“राष्ट्रीय सौहार्द, एकता और लगाव की एक ऐसी भावना का नाम है जिस में समाज के सभी लोग बराबरी के हकदार हों और हर एक हिन्दुस्तानी एक हिन्दुस्तान के धागे में पिरो दिया हो। यह एक ऐसी चेतना है जिस में हर एक हिन्दुस्तानी जात, धर्म, स्थान, संस्कृति की तक्सीम के बावजूद एकता की व्यवहारिक भावना से सरशर हो।

भारत जैसे विभिन्न धर्म, जात समुदाय, रंग व नस्ल वाले देश में जहां बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के बीच विभिन्न प्रकार की समस्याएं आती रहती हैं, वहां के साधारण और असाधारण को आपस में मिल जुलकर रहना चाहिए और एक दूसरे के साथ आपसी सहयोग और उदारता को बढ़ावा देना चाहिए। सभ्य कौमें आपस में लड़ती नहीं उनमें मतभेद होने पर आपस में बातचीत के जरिये समस्या का समाधान करती हैं। देशवासियों को समझ लेना चाहिये कि अगर एकता, मेल जोल और प्यार मोहब्बत से रहेंगे तो हमारा देश विकास करेगा, देश का हर वासी अपने देश से प्यार करता है इस के लिये कुर्बानियां देता है जब

किसी देश के लोग आपस में प्यार मोहब्बत से रहते हैं तो दुश्मन उनकी तरफ आंख उठाकर नहीं देखते और जिस देश के लोग धर्म, समुदाय, क्षेत्र और मानवता के नाम पर आपस में झगड़ते हैं एकता और मेल जोल के रास्ते के बजाये कपटाचार, और स्वार्थ अपनाते हैं दुश्मन तत्व उन्हें अपना गुलाम बना लेते हैं।

इसकी मिसाल यूं समझें कि हिन्दुस्तान के लोग आपस में बंटे हुए थे वह जात समुदाय, नस्ल, धर्म रंग और भाषा के नाम पर दूसरे से नफरत करते थे इसका फायदा अंग्रेजों ने उठाया और अपनी चालाकी और शातिराना चाल से तक्सीम करो और हुकूमत करो की पालीसी अपनाते हुए पूरे हिन्दुस्तान पर कब्जा कर लिया और दो सौल साल तक हमें लूटते रहे, हमारा खून चूसते रहे और हिन्दुस्तान जो सोने की चिड़िया कहलाती थी इसे फकीर और कंगाल कर दिया, हमारी दौलत बाहर भेजते रहे।

लेकिन ईश्वर की कृपा से आज हमारा देश आज़ाद है, हम लोकतांत्रिक तरीके से अपने कानून बनाते हैं और देश का हर विभाग अपना काम करता है बस ज़रूरत है कि

हम अपने इस प्यारे देश को प्यार व मुहब्बत से सजाएं, इसे तरक्की दें, और देश का हर वासी चाहे वह किसी भी धर्म का हो, रंग व नस्ल का हो किसी भी जात का हो, वह अपनी ताकत के अनुसार देश को सजाने संवारने में और तरक्की देने में हिस्सा ले।

देश के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है।

हमारा देश फूल के एक संग्रह (गुलदस्ते) की तरह है जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल लगे हुए हैं फिर भी वह एक गुल दस्ता है या इसकी मिसाल विभिन्न हीरे जवाहिरात से जुड़े एक हार की तरह है जिस में बेशुमार नगीने और जवाहिरात लगे हुए हैं। जो सब अपने चमक व दमक से हार की खूबसूरती में इज़ाफा करते हैं इन दोनों मिसालों से हिन्दुस्तान की विभिन्न संस्कृति, सभ्यता, कल्चर, रीति व रिवाज, धर्म के दर्मियान आपसी रवादरी और एकता और अधिक स्पष्ट होती है जिसे हम गंगा जमुनी सभ्यता कहते हैं हमें इसको विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए और नफरत के जरासीम को खत्म करना चाहिये।

उदारता का अर्थ

खुर्शीद आलम मदनी, पटना

इस्लाम वह दीन है जो दूसरे धर्मों के माबूदों को बुरा भला कहने से मना करता है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: मुसलमानो! तुम उन लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं पस वह बिना जाने समझे ज्यादाती करते हुए अल्लाह को गाली देंगे। हम ने इसी तरह हर जमाअत की निगाह में उनके अमल को मनोरम बना दिया है फिर उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है पस वह उन्हें उनके आमाल की खबर देगा (सूरे अंआम-१०८)

इसी तरह इस्लाम जबरदस्ती करने से रोकता है किसी को जोर जबरदस्ती इस्लाम में दाखिल करने से मना करता है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:

“दीन में कोई जोर जबरदस्ती नहीं है” (सूरे बक्रा-२८)

इस्लाम ने जोर जबरदस्ती की राह को बन्द करके उदारता की पाबन्दी करने का आदेश उस वक्त दिया जग इस्लाम को जड़ से मिटाने

के लिये धर्म विरोधी मैदान में उतर गये।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी के अध्ययन से मालूम होता है कि उदारता (रवादारी) का संबंध समाजी मामलात में सदाचार से है इसका संबंध आस्था से नहीं है अल्लाह के रसूल ने तमाम मुसलमानों को आदेश दिया है कि वह समाजी जीवन व मामलात में सदव्यवहार को अपनाएं और स्वयं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने जीवन में विधर्मी और मुशिरकों के अलावा अन्य धर्मों के मानने वालों साबियों, मजूसियों, ईसाईयों और यहूदियों सभी से वास्ता पड़ा लेकिन सीरत के उज्ज्वल पन्ने गवाह हैं कि आप ने इन तमाम के साथ शानदार सदव्यवहार के ज़रिये मानवीय इतिहास में धार्मिक उदारता की महान मिसाल काइम की।

सहीह उदारता वह है जिसकी शिक्षा हमें इस्लाम ने दी है। पवित्र कुरआन में हम से कहा गया है:

“और ऐ मुसलमानो! तुम उन

लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं, पस वह बगैर जाने समझे ज्यादाती करते हुए अल्लाह तआला को गाली देंगे, हमने इसी तरह हर जमाअत की निगाह में उनके अमल को प्रियदर्शी बना दिया है फिर उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है पस वह उन्हें उनके आमाल की खबर देगा” (सूरे अंआम-१०८)

पवित्र कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमाया:

“और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते हैं और जब किसी अप्रिय चीज़ से उनको सामना पड़ता है तो शरीफों की तरह गुजर जाते हैं” (सूरे फुरक़ान:७२)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: “ऐ मेरे नबी! आप कह दीजिये ऐ काफ़िरो! मैं उन बुतों की इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो।” (सूरे काफ़िरून १-२)

फरमाया: “ धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं” (सूरे बक्रा:

२५६)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:

“आप अपने रब की राह की तरफ हिकमत और अच्छी नसीहत के जरिये बुलाइये और उनसे बेहतरीन तरीके से वार्ता कीजिये निसन्देह आप का रब उन लोगों को खूब जानता है जो उसकी राह से हट गये हैं और वह सीधे मार्ग पर चलने वालों से पूरा वाकिफ़ है” (सूरे नहल:१२५)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: यही वह लोग हैं जिन्हें उनके सब्र की वजह से दोहरा अज़्र दिया जायेगा यह लोगों के ज़रिये बुराई को दफ़ा करते हैं और जो रोजी हमने उन्हें दी है उसमें से खर्च करते हैं और जब वह कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि हमारे कर्म हमारे लिये हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिये हैं। हम तुम्हें सलाम कहते हैं हम नादानों की दोस्ती नहीं चाहते हैं। (किसस ५४-५५)

प्रिय पाठक! इस देश में हिन्दू मुस्लिम संबंध का इतिहास इस प्रकार की उदारता और इन्सान दोस्ती का बेहतरीन आदर्श रहा है। सबने

एक दूसरे का एहताराम किया। मुस्लिम बादशाहों ने अपनी हिन्दू प्रजा के साथ उदारता और न्याय का वह व्यवहार किया कि जिससे उनका दिल जीत लिया। वह इस्लाम की उदारता के इस अर्थ से वाकिफ़ थे कि धर्म के मतभेद के कारण से किसी से नफरत की हरगिज़ इजाज़त नहीं है।

डा० तारा चन्द ने अपनी किताब “इस्लाम का भारतीय सभ्यता पर प्रभाव” में विस्तार से लिखा है कि “इस्लाम की उदारता और समता ही की बरकत थी कि नीची जाति के ग़ैर मुस्लिम, अछूत और अन्य कौमों परिवार के परिवार इस्लाम में दाखिल हुए, मुसलमान बने और समाज में इज़्ज़त पाई। हिन्दुओं और मुसलमानों में ऐसे सज्जन इन्सानों, की कमी नहीं थी जो अपने धर्म का पाबन्द रहने के बावजूद उदारता के झण्डावाहक थे एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते थे, एक दूसरे के सुख दुख में साझीदार रहते थे और एक अच्छे पड़ोसी बल्कि अच्छे परिवार की तरह ज़िन्दगी बसर करते थे और जिस पवित्र आचरण और प्रभाव ने इस देश को, प्रेम, अम्न व अमान, खैर व बरकात से भर दिया था और हमारा देश वास्तव

में सोने की चिड़िया बन गया था”

आज भी ज़रूरत है कि हर एक हिन्दुस्तानी आपस में संबंध दोस्ती, प्यार का रिश्ता मज़बूत करें, एक आदम की औलाद होने और इन्सान में एक होने की संकल्पना को विकसित करें, अपनी अपनी ख़ामियों का जायज़ा लें, उन्हें दूर करें और जो लोग संबंध बिगाड़ने की कोशिश करें, उनके खिलाफ़ मिल कर सख्त कानूनी कार्रवाई करें, उन्हें लगाम दें तामि उसे मुंह की खानी पड़े, इसी में अम्न व अमान है और यही इस देश की खूबसूरती है।

मानवता आज भी जीवित है, आज भी ऐसे लोगों की बड़ी तादाद मौजूद है, जिन के सीने में धड़कता दिल है, वह किसी भी प्राकृतिक आपदा और घटना के वक़्त मुसलमानों के काम आते हैं, उनके जान व माल की सुरक्षा के लिये तैयार रहते हैं, तंगी के वक़्त सहयोग करते हैं, बीमारी से कराहते मुसलमान पड़ोसी को हास्पिटल के एमर्जेन्सी वार्ड तक पहुंचाते हैं, ऐसे ग़ैर मुस्लिमों के साथ दुनियावी मामलात में समाजी रिश्ते काइम करना उदारता है और इसे बढ़ावा देना चाहिए।



अमन व शान्ति की अहमियत इस्लाम की नज़र में

अब्दुल मतीन मदनी वाराणसी

एक इन्सान इस धरती पर अपनी गतिविधियों की अदायगी के लिये जिन बुनियादी ज़रूरतों का मोहताज है उनमें अमन व शान्ति सबसे पहली ज़रूरत है। अमन व शान्ति के बिना जीवन बेमज़ा है, इसके बिना शिक्षा, विकास संभव नहीं, अमन व शान्ति के बिना रोज़गार की प्राप्ति और व्यवहारिक गतिविधियाँ नहीं, अमन के बग़ैर स्थिर सेहत व तन्दुरुस्ती नहीं, अमन के बिना दिल को सुकून नहीं, अमन व शान्ति के बिना इबादात और मामलात को अंजाम देना संभव नहीं, इसी लिये मानवीय समाज में साधारण रूप से और इस्लाम धर्म में विशेष रूप से अमन व शान्ति की बका को बहुत अहमियत दी गई है बल्कि धर्म के उद्देश्यों में से एक महत्वपूर्ण मक़सद क़रार दिया गया है।

इमाम मावरदी रह० लिखते हैं कि दुनिया के हालात की दुरुस्तगी के लिये छः चीज़ें ज़रूरी हैं ताकि दुनिया का कारोबार नियमित रूप से अंजाम

पाये और इसमें कोई खलल न पैदा हो, प्रचलित धर्म, शक्तिशाली शासक, न्याय का बोल बाला हो, अमन व शान्ति हो, रोज़गार की भरमाड़ हो और आशापूर्ण जीवन, जब अमन व शान्ति की नेमत खतम हो जाती है तो संसार की व्यवस्था अस्त व्यस्त हो कर रह जाती है और मानव समाज भय व अत्याचार का शिकार हो जाता है।

इमाम जुवैनी लिखते हैं किसी भी नेमत का आनन्द उस वक़्त तक नहीं मिलता जब तक कि मुसाफिर और फकीर अपने आप को खतरों से सुरक्षित न समझें, इसलिये अमन व सुख ही तमाम नेमतों का स्रोत है इसके बिना किसी भी नेमत की कोई कीमत और उसका आनन्द नहीं है।

ओलमा के इन कथनों से अमन व शान्ति की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि दीनी और दुनियावी एतबार से इस नेमत का पाया जाना कितना ज़रूरी है क्योंकि व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन की

गतिविधियाँ, इबादत व मामलात की अंजामदेही इसके बग़ैर संभव नहीं है। यह एक ऐसी नेमत है जिस की अहमियत व ज़रूरत इन्सान के साथ जानवर और पक्षी भी समझते हैं आम तौर से यह देखा गया है कि अगर कोई धमाकेदार आवाज़ कान के पर्दों से टकराती है तो पक्षी उड़ कर अपने घोंसलों का रुख करते हैं क्योंकि उनके लिये अमन व अमान (शान्ति, व सुख) की जगह वही है।

पवित्र कुरआन के टीकाकार अल्लामा राज़ी ने लिखा है कि किसी अलिम से पूछा गया कि अमन व शान्ति सर्वश्रेष्ठ है या सेहत व तन्दुरुस्ती तो उन्होंने अमन को सर्वश्रेष्ठ क़रार दिया और इसकी दलील यह दी कि अगर किसी बकरी की टांग टूट जाये तो अगरचे वह वक़्ती तौर पर चलने से बधिर हो गई और चरने के लायक न रही लेकिन जब स्वास्थ हो जायेगी तो स्वयं चरागाह (चरनी) जाने लगेगी लेकिन अगर एक दूसरी बकरी कहीं

बांध दी जाये और उसके करीब एक भेड़िया बांध दिया जाये तो वह भेड़िये के डर से खाना पीना छोड़ देने की वजह से मर जायेगी।

पवित्र कुरआन ने अमन व शान्ति को हर शहर, गांव की अहम ज़रूरत करार दिया क्योंकि इस जीवन की ज़रूरी व्यस्तताएँ अमन व शान्ति के बिना कैसे अंजाम पा सकती हैं इसी लिए अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के लिये अमन व शान्ति के लिये दुआ की। जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: “ऐ मेरे रब इस शहर को तू अमन व अमान वाला शहर बना दे और इसके वासियों को तू फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखते हैं। (सूरे बकरा-92८)

कहने का अर्थ यह है कि इन्सान जहां रहता है उसका शान्तिपूर्ण होना बहुत ज़रूरी है क्योंकि अगर अमन व शान्ति न हो तो उसकी जान माल, उसकी इज्जत व आबरू उसका घर बार, उसके रास्ते, उसकी तिजारात के स्थान, उसके पूजास्थल, उसके शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र

सब कुछ सुरक्षित नहीं रहेंगे वह कैसे निडर होकर अपने काम धाम करेगा, मजबूरन कैद होकर रह जायेगा और ऐसी जिन्दगी किसी प्रकोप और वबाल से कम नहीं।

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने अमन व शान्ति को एक ऐसी नेमत करार दिया जिसके माध्यम से दुख और कठिनाई के अवसर पर मुसलमानों के दिलों को इतमिनान होता है।

अल्लाह तबारक व तआला जिस तरह दुनिया में मुसलमानों को अमन व सुख की दौलत देता है उसी तरह क्यामत के दिन भी उनको अमन व सुख दे गा और भय से सुरक्षित रहेगा। (सूरे यूनुस ६२-६४)

हदीसों में भी अमन व शान्ति को बड़ी अहमियत दी गई है, इसे बड़ी नेमत करार दी गई है और हर वह अमल जिससे अमन को ख़तरा हो उससे मना किया गया है और साथ ही साथ इस नेमत को पाने और इसकी बका के लिये दुआएं सिखाई गई हैं।

एक हदीस में है आप स० ने फरमाया:

“तुम में से जिसने इस हाल

में सुबह की कि वह अपने घर में अमन व अमान से है, शारीरिक तौर पर स्वस्थ है और उसके पास उस दिन का गुज़र बसर का सामान है तो मानो उसके लिये दुनिया जमा कर दी गई है। (सुनन तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल स० ने अमन की राह में खलल पैदा करने से सख्ती से मना किया है बल्कि इसे ईमान के विपरीत करार दिया है।

फरमाया: अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह मुसलमान नहीं। पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल कौन? फरमाया: जिस का पड़ोसी उसकी बुराई से सुरक्षित न हो। (सहीह बुखारी)

किसी मुसलमान के लिये यह हलाल नहीं कि वह दूसरे किसी मुसलमान को नाहक भयभीत करे। (सुनन अबू दावूद)

यह हदीस इस बात की दलील है कि हर वह काम जिससे अमन व शान्ति प्रभावित होती है। दिल में भय पैदा होता है इस्लाम धर्म इसकी इजाज़त नहीं देता।

गैर मुस्लिमों का भरण-पोषण और भीक के खात्म में हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ रह० का कारनामा

अब्दुल मन्नान शिकरावी

हज़रत अबदुल्लाह अबू हदरद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि जब हम उमर बिन खत्ताब के साथ जाबिया पर आये वहां पर एक जिम्मी बूढ़ था जो खाने के लिये भीक मांग रहा था। हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को इसके बारे में पूछने के बाद हमने बताया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन यह एक जिम्मी है जो बूढ़ा और कमजोर हो गया है। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्होने इसका जिज़या मआफ कर दिया और कहा कि तुम ने इस पर जिज़या का बोझ डाल कर इतना कमजोर कर दिया कि वह भीक मांगने पर मजबूर हो गया फिर हज़रत उमर ने इस जिम्मी के लिये दस हज़ार दिरहम बैतुल माल से जारी कर दिये क्यों कि इसके पास बाल बच्चे भी थे। (तारीख़े दिमश्क)

जिम्मी ऐसे लोगों को कहा जाता

है जिनके जान व माल इज्जत व आबरू की मुस्लिम शासन ने सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ले रखी हो।

ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के खिलाफ़त काल इराक में हीरा वालों के सिलसिले में लिखा कि जो भी बूढ़ा शख्स काम करने की ताक़त न रखता हो या वह किसी मुसीबत का शिकार हो या पहले मालदार था फिर मोहताज हो गया हो यहां तक कि इसके धर्म वाले इसे सदका देने लग गये हों उसका जिजया मआफ कर दिया जाए और जब तक वह मदीना, और इस्लामी शासन में रह रहा है उस का खर्च बैतुलमाल से दिया जाये। (किताबुल खिराज, लेखक: इमाम अबू यूसुफ़)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने बसरा के गवर्नर अदी बिन अरतात को लिखा कि देखो तुम्हारे पास अगर कोई जिम्मी है

जो काफी बूढ़ा है और शारीरिक रूप से कमजोर है उसका काम धन्धा ख़राब हो गया है तो उसे मुसलमानों के बैतुल माल (कोषागार) से इतना दे दो कि उसकी हालत बेहतर हो जाए और अगर मुसलमानों में से किसी शख्स का कोई गुलाम हो और वह बूढ़ा हो गया हो, कमजोर हो गया हो, कमाने की ताक़त नहीं रखता है तो इस मालिक पर यह ज़िम्मेदारी है कि वह उसे खिलाए पिलाए यहां तक कि उसे मौत आ जाए या वह आज़ादी हासिल कर ले। (किताबुल अमवाल, लेखक: अबू उबैद कासिम बिन सलाम)

उमर बिन उसैद फरमाते हैं कि अल्लाह की क़सम हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ रह० का उस वक़्त तक इन्तेक़ाल नहीं हुआ जबतक कि लोगों की यह कैफ़ियत न हो गई कि कोई एक शख्स बड़ी मात्रा में माल लेकर आता और कहता कि इसे जहां चाहो खर्च कर दो, लेकिन

उसके माल को कोई लेने वाला नहीं मिलता और वह अपना पूरा माल वापस ले कर चला जाता। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह० ने लोगों को मालदार कर दिया था (सियरो आलामिन नुबुलह)

इमाम इब्ने कसीर रह० फरमाते हैं कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह० की जानिब से पुकारने वाला हर दिन पुकारता कि कोई कर्जदार है? कोई शादी का इच्छुक है? कोई गरीब है, कोई अनाथ है? कि मैं उन सबकी ज़रूरत पूरी कर दूँ। (अल बिदाया वन निहाया

उमर बिन अब्दुल अजीज रह० ने इराक के गवर्नर अब्दुल हमीद बिन अब्दुरहमान को लिखा कि लोगों को तोहफे दे दो जवाब आया कि सब लोगों को तोहफे देकर भी बैतुल माल में माल मौजूद है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज रह० ने फिर लिखा कि इससे कर्जदारों का कर्जा अदा कर दिया जाये। जवाब मिला कि यह भी किया जा चुका है फिर भी बैतुल माल में माल बाकी है फिर लिखा कि देखो जिस की शादी न हुई हो और माल न होने की

वजह से शादी न कर पा रहा हो इस माल में से उसकी शादी कर दो और महर भी अदा कर दो जवाब मिला सब कर दिया है लेकिन फिर भी कोषागार में माल मौजूद है फिर लिखा कि देखो अगर किसी के ज़िम्मे जिजया की आदयगी बाकी है? अगर वह आर्थिक स्थिति खराब होने की वजह से अदा न ही कर पा रहा है तो उसे कर्ज दे दो ताकि वह अपनी खेती बाड़ी को मजबूत कर सके और यह हम एक दो साल के लिये नहीं कर रहे हैं। (किताबुल अमवाल, लेखक: कासिम सलाम)

सारांश यह है कि इस्लाम ने भीक मांगना नापसन्द किया और इसके खाते के लिये बहुत से उपाय किये हैं कुरआन व हदीस में विभिन्न स्थानों पर इस के नुकसानात को बयान किया गया है और बताया गया है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को सर्वश्रेष्ठ सृष्टि बनाया है इसके बावजूद वह भीख मांगे तो यह मानवता का अपमान है।

भिक्षा की निन्दा की गई है और इसके आस्था पर पड़ने वाले प्रभाव को भी बयान किया गया है

इसके बाद रोज़गार कमाने की प्रेरणा दी गई है। अंबिया अलैहिस्सलाम का रोज़गार कमाने को आदर्श के तौर पर प्रस्तुत किया गया है जिस की कुरआन व हदीस में बड़ी फज़ीलत बयान की गई है फिर सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम की सीरत से इस का स्पष्टीकरण किया गया है यही नहीं मोहताजों, बधिर लोगों बेवाओं, अनाथों, गरीबों कर्जदारों के लिये आर्थिक फण्ड बनाया गया है जो ज़कात व सदकात से जमा किया जाता है और जरूरतमंदों पर खर्च किया जाता है जिसके बाद कोई भी ज़रूरत मन्द भीक मागने की ज़रूरत महसूस नहीं करता। इतिहास गवाह है कि जब हमारे पूर्वजों ने व्यवहारिक रूप से इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का पालन किया और बैतुलमाल को संगठित करके मुसलमानों को ज़कात सदकात देकर मदद की तो एक वक्त ऐसा भी आया जब लोग अपने सदकात ले कर पात्र लोगों की तलाश में निकलते थे लेकिन कोई लेने वाला नहीं मिलता था इससे मालूम होता है कि इस्लाम ने भीक के खाते में महत्वपूर्ण रोल निभाया है।



मानव सम्मान की सुरक्षा

रज़ी अहमद सनाबिली

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स० ने मानव सम्मान और इज़्ज़त व आबरू को पूर्ण रूप से सुरक्षा प्रदान की है इस्लाम धर्म में हर शख्स को एक स्थान प्राप्त है जिसे कोई व्यक्ति और समाज खतम नहीं कर सकता। अतः इस्लामी समाज में किसी के लिये कोई ऐसा काम करना जायज़ नहीं जिससे किसी के इज़्ज़त पर चोट पड़ती हो। इन्सान की इज़्ज़त पर चोट पहुंचाने के जितने तरीके हो सकते हैं कुरआन ने सबके नुकसानात को उजागर किया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:

“ऐ ईमान वालो! कोई कौम किसी कौम का मखौल न उड़ाये आश्चर्य नहीं कि वह इन मज़ाक करने वालों से बेहतर हो और न औरत औरतों पर हसें दूर नहीं कि वह इन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में ताना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो। (सुरे हुजरात-११)

पवित्र कुरआन की इस आयत

पर गौर करने से कई बातों का ज्ञान होता है।

१. मर्द एक दूसरे का मज़ाक नहीं उड़ा सकते।

२. औरत एक दूसरे की खिल्ली नहीं उड़ा सकती

३. मर्द और औरत एक दूसरे की हंसी नहीं उड़ा सकते।

४. कोई किसी को ताना नहीं दे सकता।

५. कोई किसी का नाम नहीं, बिगाड़ सकता।

अल्लाह ने इन तमाम बातों से इस लिये मना किया है कि यह इन्सान की इज़्ज़त के विरुद्ध और फितना व फसाद पैदा होता है।

अगर हम सीरत का अध्ययन करें तो देखेंगे कि अल्लाह के रसूल स० ने अन्य धर्मों के मानने वालों के साथ मानवता की सुरक्षा और अमन व शान्ति की स्थापना के लिये बहुत सी संधियां की ताकि अत्याचार का अन्त हो, खूरेज़ी को रोका जा सके, किसी को केवल इस लिये न

क़त्ल किया जाए कि वह अन्य धर्म का है या दूसरे कबीले और खानदान का है। बल्कि इन्सान की हैसियत से आपस में एक दूसरे का एहताराम करें इसके साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मानवता के दुश्मन पर कड़ी नज़र रखते थे ताकि कहीं कोई फ़साद सर न उठा सके और मानवता को कोई खतरा न हो।

सारांश यह है कि अल्लाह का कानून पूरी मानवता के लिये अमन की गारन्टी देता है आपने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से अत्याचार को जड़ से उखाड़ फेंका, यतीमों और बेवाओं को सहारा दिया, तलाक़ शुदा और बेवा औरतों को मानव समाज में ऊंच स्थान दिया, बूढ़ों और कमज़ोरों के अधिकार तय किये, पड़ोसियों के अधिकारों की रक्षा की, मुसाफ़िरो को सुहूलत उपलब्ध कराई, मरीजों और मजलूमों पर विशेष ध्यान दिया यहां तक जानवरों और मुर्दों के अधिकारों की सुरक्षा को अनिवार्य करार दिया।

इस्लाम, उदारता और संयुक्त समाज

जसीम फ़हीमुद्दीन मदनी

संयुक्त समाज में इस्लाम हर शख्स को अपनी आस्था और दृष्टिकोण पर अमल करने की आज़ादी देता है और किसी के साथ ज़बरदस्ती का मामला करने की इजाज़त नहीं देता। साहबज़ादा साजिदुर्रहमान लिखते हैं: इस्लाम हर धर्म व समुदाय से संबंध रखने वालों की अन्तरात्मा और इबादत की आज़ादी का जामिन है। पवित्र कुरआन की यह आयत “ला इक्राहा फिददीन” (बक्रा २५६)

“अर्थात् दीन में ज़बरदस्ती नहीं है” उदारता का सिद्धांत बयान कर रही है जो इस्लाम अपने मानने वालों में पैदा करना चाहता है। इस सिद्धांत के तहत सभी धर्म इस्लाम के साथ पूर्ण आज़ादी के साथ रह सकते हैं। इस्लाम न केवल दूसरे धर्मों को पूर्ण रूप से आज़ादी देता है बल्कि सामूहिक और राजनीतिक सीमाओं में उनकी हिफाज़त करता है। इस्लाम मानवता को उदारता की

बुनियाद पर एकजुट रहने का झण्डावाहक है। इस्लाम दुश्मनी को खतम, विश्वव्यापी सौहार्द और आपसी प्रेम को विकसित करना चाहिए। इस्लाम अमन व शान्ति का एक शास्वत निमंत्रण है। इस्लाम गैर मुस्लिम कौमों के साथ उदारता के दर्जे से आगे बढ़कर जिम्मेदारी का कर्तव्य लागू करता है। सरकार हो या समाज इस्लाम ने सभी धर्मों के मानने वालों और विभिन्न रंग व नस्ल और क्षेत्र से संबंध रखने वाले लोगों के विभिन्न अधिकारों की सुरक्षा की है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम और बाद के इस्लामी शासन काल की समीक्षा की जाये तो पता चलेगा कि मुसलमानों के अलावा अन्य धर्मों के मानने वालों के साथ उनके विभिन्न अधिकारों की सुरक्षा के लिये हर दौर हर काल में विभिन्न

मुआहिदे किये गये इस लिये कि इस्लाम में सह-अस्तित्व पर बड़ा जोर दिया गया है। पवित्र कुरआन में विशेष रूप से धर्म सम्मान का आदेश दिया गया है। लेखक हाफिज़ गुलाम हुसैन ने अपनी किताब में लिखा है पवित्र कुरआन की शिक्षाएं मानव सम्मान, धर्म सम्मान पर आधारित हैं। कुरआन में यह आदेश दिया गया है कि अन्य धर्मों के माबूदों (पूज्यों) को बुरा भला न कहो। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया: ऐ मुसलमानो! तुम उनके माबूदों को बुरा भला मत कहो जिन को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। इसका साफ मतलब यह है कि अन्य धर्मों पर लांछन करना बिल्कुल मना है। किसी भी धर्म के अनुयाई की धार्मिक भावनाओं पर किसी प्रकार का लांछन करके उन्हें आहत नहीं किया जा सकता (संदर्भ, इस्लामी हुकूमत में अल्पसंख्यक)



मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस का परिचय और उद्देश्य

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द हिन्दुस्तान की सबसे पराचीन मुस्लिम संगठन है जिसकी स्थापना १६०६ में हुई थी, अपने स्थापना दिवस ही से वह दीन, देश और समाज की सेवा उच्च स्तर पर करती रही है इसके संस्थापक देश के स्वतंत्रता सेनानी ओलमा थे जो देश को विखरने से बचाने के लिये और सामप्रदायिकता के नाम पर देश को टुकड़े टुकड़े करने वाली शक्तियों के खिलाफ थे और जात पात और धर्म की बुनियाद पर किसी भी बटवारे को निरस्त कर दिया था और हिन्दुस्तान के हक में मुसलमानों का वोट दिलवाया था। प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना अब्दुल मजीद हरीरी सऊदी अरब में पूर्व सफ़ीर, मौलाना अब्दुल वहाब आरवी आदि इसके सदस्य और अगुवा रह चुके हैं। स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अब्दुल कय्यूम रहमानी और हकीम अब्दुस्समद मुरादाबादी स्वतंत्रता सेनानी का अभी जल्द ही निधन हुआ है। आज भी इसके सैकड़ों नौजवान मुल्क की रक्षा में फौज़ी

की हैसियत से काम कर रहे हैं। जमाअते अहले हदीस के हज़ारों मदर्स व मस्जिदें देश भर में शैक्षिक गतिविधियाँ जारी रखे हुये हैं। जमीअत की २१ सूबाई शाखाएं हैं जिसके तीन करोड़ से अधिक लोग देश भर में समाज सुधारक कामों में लगे हुये हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ६-१० मार्च २०१८ को राम लीला मैदान में “विश्व-शान्ति की स्थापना और मानवता की सुरक्षा” के शीर्षक से ३४वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस का आयोजन कर रही है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सदैव देश और मानवता की सेवा में पेश पेश रही है और शान्ति के सन्देश को फैलाने पर विश्वास रखती है और इसमें इसके प्रयास बिलकुल स्पष्ट हैं। मुल्क दुश्मन तत्वों के किसी भी आमामनवीय कृत्य की निंदा करती रही है क्योंकि यह चीज़ उसके सिद्धांतों के विपरीत है। जमीअत अहले हदीस जिस कुरआन व हदीस को मानने की दावेदार है उसकी शिक्षाएँ इंसान दोस्ती और

देश की सेवा को अनिवार्य और फर्ज करार देती हैं। यही सन्देश अपनी कानफ्रेंसों, सेमीनारों सिम्पोजियमों कंवेन्शनों और अपने चारों भोंपू हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी पत्रिकाओं और दूसरी किताबों के द्वारा सार्वजनिक करती रहती है।

इसी जमाअत के संबंध में प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि “अगर हम तराजू के एक पलड़े में पूरे हिन्दुस्तान के सारे लोगों की खिदमात को रखें और दूसरे पलड़े में सादिक पुर (अहले हदीस) की खिदमात को रखें तो अहले सादिक पुर का पलड़ा भारी पड़ेगा”।

हमारी सरकार शिक्षा के मैदान में जो काम और प्रयास कर रही है उसमें हमारी जमाअत भी अपनी गाढ़ी कमाई से स्थापित मदर्सों के द्वारा भरपूर भाग ले रही है और इसके द्वारा हर तरह के समाज सुधारक काम कर रही है। खास तौर से गरीब और पिछड़े लोगों के उत्थान के लिये प्रयास करती रही है। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी इस संस्था

के कार्यकर्ताओं ने बहुत बड़े पैमाने पर काम किया है। देश भर में जमाअत अहले हदीस के अनेक टेक्निकल कालेज राष्ट्र के बच्चों को आधुनिक शिक्षा से लैस करने में लगे हुये हैं। यह जमाअत पहले की तरह आज भी मानवता की सेवा में व्यस्त है। आतंकवाद इस वक्त की सबसे बड़ी समस्या और देश के लिये सबसे बड़ी चुनौती है। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द आतंकवाद विरोधी संघर्ष में देश बन्धुओं के साथ बराबर की साझीदार है। वह अपने मदर्सों और मस्जिदों से आतंकवादी तत्वों की निंदा करती है और उनके मनोबल को तोड़ती है, देश में कहीं भी कोई आतंकी कार्रवाई होती है तो मर्कजी जमीअत उस की निंदा करती है प्रेस रिलीज जारी करके आतंक फैलाने वाले तत्वों के खिलाफ मेनडेट बनाती है इतना ही नहीं आज से दो साल पहले लगभग पचास ओलमा के हस्ताक्षर से फतवा जारी करके आतंकवाद को इस्लामी शिक्षा और मानवता के खिलाफ करार दिया था।

मर्कजी जमीअत ने १८ मार्च २००६ को दिल्ली में “आतंकवाद वक्त का सबसे बड़ा नासूर” के

शीर्षक से अंसारी आडीटोरियम जामिया मिल्लिया इस्लामिया में एक नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन किया था जिसमें आतंकवाद की निंदा की गयी थी इस सिम्पोजियम में पूर्व प्रधान मंत्री वी.पी. सिंह और तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल ने शिर्कत की। इसी तरह २३ जुलाई २००६ को दिल्ली में एक नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन किया गया था जिसका शीर्षक था “इस्लामी मदर्सों मानवता के सेवक हैं आतंकवाद के अड्डे नहीं” इसी तरह लगभग दरजन भर अहले हदीस मुफ्ती ओलमा के हस्ताक्षर से आतंकवाद के विरोध में फतवा भी जारी किया। इसके अलावा इस संस्था ने “दाइश और आतंकवाद के उन्मूलन में राष्ट्रीय सदभावना की भूमिका” के शीर्षक से १६ मार्च २०१७ को एक सेमीनार आयोजित कर चुकी है, इसी प्रकार १५ फरवरी २०१५ को “विश्व आतंकवाद, दाइश की स्वयंभू खिलाफत और इस्लाम का शान्ति सन्देश” के शीर्षक से राष्ट्रीय सिम्पोजियम आयोजित कर चुकी है और दाइश के खिलाफ लिखित फतवा दिया, २८ दिसंबर २०१५

को “सदभावना, सांप्रदायिक सौहार्द की महत्ता एवं आवश्यकता” पर राष्ट्रीय सिम्पोजियम का आयोजन किया आतंकवाद और दाइश के खिलाफ सबसे पहले लिखित सामूहिक फतवा मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने दिया जिसकी पूरी दुनिया में प्रशंसा और सराहना की गयी।

यह संगठन, जुमा, कानफ्रेन्स, सेमीनार और दूसरे समारोह के द्वारा समाज को सुधारने का काम करती है रोजाना हजारों परिवारिक और समाजी समस्यायें पैदा होती हैं, उनके समाधान में मदर्सों के रोल की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बहुत से समाज सुधारक काम इन्हीं मदर्सों और मस्जिदों की देन हैं, इस को सभी लोग स्वीकार करते हैं।

कुर्आन और हदीस के अनुसार हमारा यह ऐलान है कि जानी दुश्मन के साथ भी न्याय करो, प्रतिशोध की भावना से किसी को न सताओ। छोटों पर दया करो, और बड़ों के साथ सम्मान के साथ पेश आओ, गरीबों को खाना खिलाओ, अनपढ़ और गंवार लोगों की गलतियों को नजर अंदाज करो, भलाई का हुक्म दो,

बुराईयों से रोको, यह तुम्हारे अच्छे इंसान और अच्छी उम्मत होने की पहचान है।

इस्लामी शिक्षाओं की एक खूबी यह भी है कि वह हर जमाने के लिये है। उसकी तालीम है कि शिक्षा सुरक्षा और शान्ति को बढ़ावा दो, परिवारिक विद्वेष और भेद भाव की बुनियाद पर सारी नाइंसाफियों को निरस्त कर दो, इंसानियत दुश्मन रीति को समाज से मिटा दो, यह सारा काम अल्लाह की खुशी और मानवता की भलाई की भावना से होना चाहिये। इस्लाम की नजर में लूट खिसोट, घोटाला, दुश्मनी, घमंड, धूम्रपान आदि हaram हैं। इंसान दोस्ती और दूसरों के साथ हत्या लूट मार को शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के बाद सबसे बड़ा पाप माना जाता है। कुरआन में है जिसने एक जान को बिना जुर्म और फसाद के मार डाला तो समझो उसने सारे इंसानों को मार डाला और जिसने एक इंसान की जान बचाई समझो उसने सारे इंसानों की जान बचा ली। जंग में भी दुश्मन के बच्चों बूढ़ों औरतों पूजा करने वालों और पूजा स्थलों में मौजूद लोगों पर हाथ उठाना महा पाप है, खेती और दूसरी

सम्पदाओं को जलाना या नुकसान पहुंचाना हaram है। इस्लाम औरतों के अधिकार का सबसे बड़ा समर्थक है एक तरफ जहां एक बच्ची को तालीम देने पर जन्नत की खुशखबरी सुनायी जाती है वहीं यह पाठ दिया जाता है कि औरत हर हाल में सम्माननीय है, जन्नत उसके कदमों के नीचे है और बाप भाई और दूसरे मर्दों की तरह वरासत में हिस्सेदार है।

इस्लाम ने शान्ति, मानवीय अधिकार को समझने और मानवीय अधिकार को अदा करने के लिये कुछ बुनियादी सिद्धांत और नियम बनाये हैं और आस्था कानून व शरीअत चरित्र और प्रकृति के हवाले से बहुत जोर दिया है और फर्ज करार दिया है।

इस्लामी तालीम मानवतावादी और मानवीय अधिकार की सुरक्षा की गारंटी देती है, वह मानवीय अधिकार का समर्थक है इंसान की आखिरी जिंदगी महा परलय की जिंदगी है। एक इंसान सिर्फ एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने की वजह से जन्नत में जाने का पात्र हो गया और एक औरत बिल्ली को भूखा मारने की वजह से जहन्नम में चली गयी। इस्लाम की यह शिक्षा है कि किसी अरबी

को किसी अजमी पर कोई वर्चस्व (बरतरी) नहीं है। सब को अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया और सब एक बाप आदम की औलाद हैं।

आज आपसी भाईचारे को खत्म करने के लिये असमाजिक तत्वों की तरफ से लगातार प्रयास किया जा रहा है भेदभाव और वैमनष्यता फैला कर देश और हम सब को कमजोर करने की साजिश की जा रही है। इन हालात में कुरआन व सुन्नत की रोशनी में शिक्षा को बढ़ावा देने, सामप्रदायिक एकता और मानवीय मान्यताओं जिस पर हमारा विश्वास है उसकी यही मांग है कि कुरआन और हदीस की रोशनी में भाई चारे को इस्लामी शिक्षाओं से हर एक को अवगत कराया जाये, मानवता की भलाई के लिये देश में न्याय, उदारता और आपसी विश्वास का माहौल बनाने और विश्व शान्ति को काइम रखने और आतंकवाद की समस्या से निकलने का सहीह उपाय तय करें।

मौलाना मोहम्मद हारून सनाबिली

महा सचिव

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

35 वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस के अवसर पर विशेष आयोजन

35वीं आल इंडिया
अहले हदीस कांफ्रेंस
के अवसर पर
राजनैतिक, समाजी,
शैक्षिक विद्वानों और
मिल्ली संगठनों के
पदधारियों के
शुभ-सन्देश एवं
उद्गार



Ref. No. _____ الرقم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Dated **13/10/2024** التاريخ

پیام تبریک و تہنیت

جامعہ سرراج العلوم السلفیہ جھنڈانگر، نیپال اس کے مسؤلیں و ذمہ داران، اس کے اساتذہ و کارکنان، اس کے تمام شعبہ جات اور اس کے طلباء و طالبات میں اس وقت مسرت و انبساط کی لہر دوڑ گئی جب مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی طرف سے یہ اعلان منظر عام پر آیا کہ اس کے حوصلہ مند ذمہ داران نبی دلی کے رام لیلا میدان میں ایک عظیم الشان کانفرنس کے انعقاد کا فیصلہ کیا ہے۔

اس بار یہ کانفرنس نئی برسوں کے وقفہ کے بعد منعقد ہو رہی ہے جب کہ گزشتہ کئی برسوں کے دوران یہ معمول رہا ہے کہ تقریباً ہر دو سال پر اس طرح کی عالمی کانفرنسوں کا انعقاد کیا جاتا رہا ہے، جن میں پورے ملک ہندوستان کے ہر صوبہ اور چھپے چھپے سے قریب و دور کے علمبرداران شریک ہوتے رہے ہیں اور ملٹی ملکیوں سے بھی اہم شخصیات اس طرح کی کانفرنسوں کو رونق بخشتی رہی ہیں، ان کانفرنسوں کے ذریعہ کتاب و سنت کے ولولہ انگیز پیغام کے علاوہ عالمی امن و اخوت اور بین المذاہب خیر رجحانی کے قیام اور صبر و تحمل کے پیغامات دئے جاتے رہے ہیں، اس طرح کی کانفرنسیں مختلف عنوانات کے تحت منعقد ہوتی رہی ہیں اور ان کے اچھے اثرات محسوس کئے جاتے رہے ہیں۔

گزشتہ برسوں میں کوویڈ کی عالمی و پائی بیماری اور اس سے پیدا شدہ حوصلہ شکن حالات اور لاگ ڈاؤن اور نقل و حرکت پر پابندیوں کی وجہ سے کانفرنسوں کے تسلسل کو برقرار رکھنا ممکن نہ ہوا، لیکن اب جیسے ہی حالات معمول پر آئے جمعیت کے ذمہ داران نے ایک بہتم باطنان کانفرنس کے انعقاد کا فیصلہ کرنے میں دیر نہ کی جس سے فرزندمان توجید کے منتظر اور دینی مدارس و مکاتب میں خوشی کی لہر دوڑ گئی۔

ہمیں امید ہے کہ اس سال بھی یہ مجوزہ کانفرنس اپنی راہِ حق شان و شوکت اور تزک و اہتمام کے ساتھ منعقد ہوگی اور ہمارا پیغام توجید و اخوت عالمی سطح پر عام ہوگا۔ اس کانفرنس کے لئے جس موضوع و مرکزی عنوان کا انتخاب کیا گیا ہے وہ موجودہ وقت کا اہم تقاضا ہے، اس وقت ملک میں نفرت و عداوت اور مذہبی منافرت کی آگ جل رہی ہے، ضرورت ہے کہ اسلام کے عدل و انصاف اور اس کی رواداری پر مبنی تعلیمات کو برادران و عین تک پہنچایا جائے اور اس آگ کو بجھانے میں اپنا کردار ادا کیا جائے۔

اسی طرح عالمی حالات کا اگر جائزہ لیا جائے تو فلسطین و لبنان کے محاذوں پر اسرائیلی جارحیت کا جو مشاہدہ کیا جا رہا ہے اور اسرائیلی فلسطین و غزہ میں معصوم بچوں و عورتوں سمیت ہتھے شہریوں کے خون سے ارض فلسطین اور انبیاء کی سر زمین کو جس طرح رنگین کر رہا ہے اور اسپتالوں و مہمات گاہوں سمیت پورے غزہ کو تختہ برباد کیا ہے جس سے عالم اسلام اور انصاف پسند لوگوں میں شدید غم و غصہ پایا جا رہا ہے اور جس کے نتیجہ میں خطہ میں تباہی و جنگ کے خطرات پیدا ہوئے ہیں اور ایک اور عالمی جنگ کی طرف دنیا کو ڈھکیلا جا رہا ہے ان حالات کا بھی یہ تقاضا ہے کہ نفرت و تشدد کی آگ کو امن و مٹائی اور عالمی اخوت کے پیغام کے ذریعہ بجھانے کی کوشش کی جائے۔

ان نازک حالات میں مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی یہ کوشش کافی مستحسن و محمود ہے، اللہ کرے کہ اس کے اچھے نتائج برآمد ہوں۔

جامعہ سرراج العلوم السلفیہ جھنڈانگر، نیپال پورے ملک کی نمائندگی کرتے ہوئے اس کوشش کو خوش آئند قرار دیتا ہے اور اس کانفرنس کا تہ دل سے استقبال کرتا ہے، اور اس کے ذمہ داران اللہ سے دعا کو ہیں کہ یہ کانفرنس کامیابی سے ہم کنار ہو اور اس کے انعقاد کے چھپے جو مقاصد ہیں وہ پورے ہوں۔

ہم اس با مقصد اور نتیجہ خیز کانفرنس کے انعقاد کے لئے مرکزی جمعیت اہل حدیث کے تمام ذمہ داران و مہمیداران اور اس کے معاونین و کارکنان اور تمام منتظمین کو دلی گہرائیوں سے مبارکباد دیتے ہیں۔

والسلام

شمیم احمد ندوی
ناظم جامعہ سرراج العلوم السلفیہ جھنڈانگر
و صدر جمعیۃ علماء اہل حدیث نیپال



Address : Jhanda Nagar, P.O. Krishna Nagar, Distt. Kapilvastu (Nepal) Phone/Fax : 00977-76-520128/520582
e-mail : jamiarp@gmail.com, jamiarp@yahoo.com, www.jserajululoom.com



بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیغام

یہ جان کر مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی قدیم دینی و اصلاحی، سماجی تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دو روزہ کل ہند اہل حدیث کانفرنس بتاریخ 10، 9 نومبر 2024ء، بعنوان ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ رام لیلا میدان دہلی میں منعقد ہو رہی ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ دنیا کے سارے انسان امیر ہو یا غریب غرضیکہ ہر طبقہ و گروہ اور ہر صنف و نوع اصلاً افضل و اشرف ہے اور اس کی جان و مال، عزت و آبرو اور دین و عقیدہ کی حرمت و حفاظت کو دنیا کے ہر دین و مذہب نے متفقہ طور پر تسلیم کیا ہے۔ اسلام اور مسلمان اسی کے داعی و مبلغ ہیں۔ آج ملکی و عالمی سطح پر جو بے چینی، اضطراب اور کشمکش کی صورت حال پیدا ہو رہی ہے اس کی بڑی وجہ ان اہل قدر و ثواب سے ناواقفیت یا ان کی دانستہ و نادانستہ پامالی ہے۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ان مقاصد و مصالح کے فروغ و تحفظ اور حصول کو ترجیحی طور پر یقینی بنانے کی کوشش کی ہے۔ انسانیت کی تعمیر، اخوت کا فروغ اور قومی یک جہتی کے استحکام، حقوق نسواں کے تحفظ اور سماجی برائیوں کے خاتمے کی نہ صرف بات کی ہے بلکہ ان سماجی برائیوں کو ختم کرنے کی ہر ممکن جدوجہد کی ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس اپنے موضوع اور زمان و مکان کے لحاظ سے سنگ میل ثابت ہوگی اور اسلام کے پیغام امن و انسانیت، قومی یک جہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ و سماجی نا برابری وغیرہ کے خاتمے کیلئے اہم کردار ادا کرے گی۔

اس کانفرنس میں شرکت کی دعوت کیلئے میں بھیم قلپ آپ کا مشکور ہوں۔ میں ان تاریخوں میں ملک سے باہر ہوں گا۔ اسلئے کانفرنس میں شرکت سے معذور ہوں۔ میں کانفرنس کی کامیابی کیلئے دعا گو ہوں کہ اللہ عز و جل اس کانفرنس کو ملک و ملت اور انسانیت کیلئے مفید بنائے اور خدا آپ کی ملی و قومی اور انسانی خدمات کو قبول فرمائے۔ آمین یا رب العالمین!

دعا گو

سید احمد بخاری

شاہی امام جامع مسجد دہلی

بخدمت گرامی

حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

10 ماکتوبر 2024

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

23



پیغام

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم۔ اما بعد

موجودہ عالمی بحران بالخصوص سیاسی، سماجی، اقتصادی اور ماحولیاتی مسائل کی وجہ سے انسانیت کو ایک نئے چیلنج کے سامنا ہے۔ عالمی وبا، جنگیں، ماحولیاتی تبدیلیاں، غربت اور معاشرتی عدم مساوات جیسے مسائل نے دنیا بھر کے انسانوں کو شدید مشکلات میں مبتلا کر دیا ہے۔ اس بحران میں سب سے اہم سبق جو ہمیں سیکھنا چاہیے وہ احترام انسانیت ہے۔ یہ وہ بنیادی اصول ہے جو کسی بھی ترقی یافتہ معاشرے کی اساس ہے۔ گلوبلائزیشن کے موجودہ دور میں جب کہ مختلف قومیں، مذاہب اور ثقافتیں ایک گھر اور آئین کا حصہ بن چکی ہیں، باہمی احترام اور رواداری کی اہمیت مزید بڑھ گئی ہے۔

جنگوں اور تنازعات نے لاکھوں بے گناہ انسانوں کی جانیں لی ہیں اور ہزاروں لوگ اپنے گھروں سے محروم ہو چکے ہیں۔ ماحولیاتی تبدیلیوں نے غربت و افلاس میں مزید اضافہ کیا ہے۔ اس بحران نے یہ سبق دیا ہے کہ ہم بحیثیت انسان ایک دوسرے پر انحصار کرتے ہیں، اور اگر ہم نے احترام انسانیت کا خیال نہ رکھا تو دنیا مزید مشکلات میں گھر جائے گی۔

جب احترام انسانیت کی بات آتی ہے تو سب سے پہلے قرآن مجید اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی سیرت ہمارے سامنے ہونی چاہیے۔ چون کہ اسلام وہ مذہب ہے جس نے **وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَخَلَقْنَاهُم مِّنَ الْإِنسَانِ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ** کے ذریعہ انسان کی تکریم اور ان کی فطری بلندی کا اعلان کیا ہے۔

اسلام نے انسانوں کو ایک دوسرے کا احترام کرنے اور باہمی تعلقات کو خوش گوار بنانے پر بھی زور دیا ہے۔ اس نے واضح کیا ہے کہ تمام انسانوں کو اللہ نے پیدا کیا ہے، اس لئے ان سب کو اللہ ہی سے ڈرنا چاہئے۔ اس حوالے سے فرمایا گیا: **”لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ سِرَّ رَبِّهِمْ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ لَنِذَرَهُمْ نَارًا وَيَوْمَ لَا يُنصَرُونَ سِوَا اللَّهِ الْعَلِيِّ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ“** (سورۃ النساء)۔ اسلام نے اعلان کیا کہ دنیا کی تمام نعمتیں حق بھل شان نے انسانوں کے لئے پیدا فرمائی ہیں اور انسان کو اپنی عبادت کے لئے پیدا کیا ہے۔ مطلب واضح ہے کہ انسان کو اللہ رب العزت نے خود سے وابستہ کر کے انسانیت کی عظمت و توقیر کو ظاہر و باہر کر دیا۔

احترام انسانیت کا ایک اہم پہلو امن و سلامتی بھی ہے۔ اسلام ایک مکمل امن پسند مذہب ہے، سلامتی اور امن اُس کے نام کا جزو و عظم ہے، اس لئے اسلام کے نام پر بد امنی برگز برداشت نہیں کی جاسکتی۔ اسلام تو وہ انسانیت نواز مذہب ہے جس نے عین حالت جنگ میں بھی انسانی اقدار کی رعایت رکھنے اور بوڑھوں، عورتوں، بچوں اور غریبوں کے قتل ناحق سے تاکید منع کیا ہے۔ چنانچہ سیدنا حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتے ہیں کہ: **”ایک غزوہ میں ایک عورت مقتول پائی گئی، تو نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے جنگ میں عورتوں اور بچوں کو قتل کرنے سے منع فرمایا۔“** (مسلم شریف ج ۲ ص ۸۴)

اس بارے میں اسلامی تعلیمات فطری طور پر انسانیت کی بقا اور تحفظ کی ضمانت ہیں۔ درحقیقت رحمت و مودت،



شفقت و ملاطفت، دل جوئی، خیر پسندی، عفو و درگزر اسلام کی بنیادی اور نمایاں صفات ہیں، نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے صرف انسانوں ہی کے ساتھ شفقت و رحمت کی تعلیم نہیں دی بلکہ حشرات الارض کے ساتھ بھی رحمت و شفقت اور نرمی و ہمدردی کی تعلیم دی۔ احادیث اور سیرتی مصادر میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے خیر العالمین، خیر البشر، ملخ الناس اور خیر البریہ جیسے بے شمار الفاظ استعمال کے گئے ہیں۔ قرآن کریم میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی تمام جہتوں اور محاسن و مکارم کے تمام گوشوں کو اسوہ حسنہ کہا گیا ہے، اسوہ کا مفہوم نمونہ ہے، ایک ایسا نمونہ اور ایسا ماڈل جس کی نظیر دنیا پیش کرنے سے قاصر ہے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم ایک ایسے ماڈل ہیں جس میں بنی نوع انسان کی سکینت، طمانیت و تسلی اور قرار ہے، اس کی اقتداء سے ذہنی اضطراب پر قدغن لگ سکتی ہے، یہ اسوہ حسنہ ہر دور میں معاشرتی مسائل کا جواب اور عہد جدید کے ہر مسئلے کا حل ہے۔

اخیر میں ایک اہم گزارش

آج ہمارے سامنے بہت سارے مسائل ہیں، مصائب کی نوعیت میں بے شک فرق ہے، لیکن مصیبت سے کوئی قوم محفوظ نہیں، تاہم مسلمانوں کو حق ہے کہ وہ اپنی خوش نصیبی پر ناز کریں کہ اسلام کے نظریہ کمال نے جس طرح عیش و راحت کے وقت خاص قسم کے اخلاق کریمانہ کی دعوت دی ہے اور قوت و طاقت کی موجودگی میں "لا تثریب، علیکم الیوم اذهبوا انتم الطلقاء" کا مظاہرہ کرایا ہے، اسی طرح مصیبت و آلام کے تاریک اوقات میں بھی فاصدہر کما صبر اولو العزم من الرسل اور ان اللہ مع الصابرين کے جیسے عظیم الشان کردار اور اخلاق کی تلقین فرمائی ہے۔ چنانچہ ضبط و حمل استقلال عالی حوصلگی اور توجہ الی اللہ یہ ایسی طاقتیں ہیں جن کے سامنے بالآخر ہر ایک طاقت پر ڈال دیتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے اپنے کلام پاک میں انھیں طاقتوں سے امداد حاصل کرنے کی بار بار ہدایت فرمائی ہے۔ یَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ (سورہ بقرہ) اے ایمان والو، مدد حاصل کرو صبر سے اور نماز سے۔ اس لیے ایک مومن کی حیثیت سے ہمیں ناامیدی کے بجائے جہد مسلسل کرنی چاہیے اور ہماری کوششیں امت مسلمہ میں اتحاد و ہم آہنگی قائم کرنے پر صرف ہونی چاہئیں۔

ایک بار پھر یہ خاکسار امیر محترم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کو مبارک باد پیش کرتا ہے جن کی شبانہ روز جدوجہد سے یہ اجلاس شرمندہ تعبیر ہو رہا ہے اور اسلام کے ابدی اور حقیقی پیغام کو اس اجلاس کا موضوع بنا کر انھوں نے اسے ایک بابرکت مجلس بنا دیا ہے۔ فجزا کہم اللہ خیر الجزاء

والسلام

محمد

محمود اسعد مدنی

صدر جمعیت علماء ہند

۱۳ اکتوبر ۲۰۲۳ء



جَمَاعَتِ اِسْلَامِی ہند

91-9667 15 9667
91-9667 20 9667

Jamaat-e-Islami Hind

جماعت اسلامی ہند

D-321, DAWAT NAGAR ABUL FAZL ENCLAVE, JAMIA NAGAR, NEW DELHI - 110 025
e-mail : office@jih.org.in

www.jih.org.in
17-10-2024

Ref. No.

Date

محترم و مکرم مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی حفظہ اللہ

و علیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

یہ جان کر بے حد مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی جانب سے پینتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کا انعقاد ہو رہا ہے اور اس کانفرنس کا مرکزی موضوع ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ رکھا گیا ہے۔

ہمارے دور انسانی عز و شرف کے ہمہ گیر زوال اور اعلیٰ انسانی قدروں کے بحران کا دور ہے۔ شدت پسندی، عدم برداشت، نفرت و تفریق اور نسلی، مذہبی و تہذیبی تعصبات عالمی سطح پر سیاست کی نمایاں خصوصیات بنتی جا رہی ہیں۔ اس شرمناک طرز سیاست نے قتل و غارتگری، وحشت و سفاکی اور بدترین مظالم کو معمول بنا دیا ہے۔ معاشی احوال سرمایہ داریت کی جس انتہائی کیفیت کو اختیار کر رہے ہیں، اس نے انسان کو محض صارف بنا دیا ہے اور دولت و طاقت کو انسانی عزت کا معیار بنا دیا ہے اور کروڑوں لوگوں کو غربت و محرومی کی بدترین سطح پر پہنچا کر انسانیت کی تذلیل کا سامان کیا ہے۔ لگنا لگوئی نے انسانی تعلقات کو کم زور کر دیا ہے اور بے لگام میڈیا و سوشل میڈیا نے انفرادی عزتوں سے کھلوڑ کو نہایت آسان بنا دیا ہے۔ خاندانی اور جنسی قدروں کے زوال نے عورت کو کھلوڑا اور مرد کو ہوس کا پجاری بنا دیا ہے اور خود غرضی و مادہ پرستی نے انسان کو حیوانیت کی سطح پر لا کھڑا کیا ہے۔

یہ ہمہ گیر بحران سب کی توجہ چاہتا ہے لیکن سب سے زیادہ مذہبی رہنماؤں کی ذمہ داری ہے کہ وہ اسے اپنی سنجیدہ اور متحدہ کاوشوں کا موضوع بنائیں۔ لیکن بد قسمتی سے ملک کی سیاست میں مذہب کا سب سے زیادہ غلط استعمال ہو رہا ہے۔ اور بجائے مذہب کو ایک تعمیری اور اصلاحی قوت کے، محض سیاسی مقاصد کی خاطر تفریق و تقسیم کے لیے استعمال کیا جا رہا ہے۔

ان حالات میں قرآن و سنت کی تعلیمات کی علم بردار ایک معتبر دینی تحریک کی جانب سے یہ پہل بڑی اہمیت کی حامل ہے۔ امید ہے کہ ان شاء اللہ اس سے اہل مذاہب اپنی اصل ذمہ داری اور تعمیری کردار کی طرف متوجہ ہوں گے۔ مختلف مذاہب کے درمیان سنجیدہ اور با معنی مذاکرات میں بھی اس پہل سے مدد ملے گی اور سب سے بڑھ کر یہ کہ اسلام و فوہیہ اسلام کے تعلق سے غلط فہمیوں کے سیلاب کے درمیان اسلام کے پیغام کو عام کرنے اور اسلام کی حقیقی تعلیمات کو سامنے لانے میں بھی اس اقدام سے مدد ملے گی۔ ان شاء اللہ العزیز۔

میں اللہ تعالیٰ سے اس عظیم الشان کانفرنس کی کامیابی کے لیے دعا کرتا ہوں اور اپنی اور جماعت کی جانب سے ہر ممکن تعاون کی پیشکش کرتا ہوں۔

سید سعادت اللہ سنی
امیر جماعت اسلامی ہند

AK/E/Tanzeem(2023-27)/Letter AA

بسمہ سبحانہ

پیغام

برائے دوروزہ آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس
بعنوان: احترام انسانیت اور مذاہب عالم

از (مولانا) سید بلال عبد الحی حسنی ندوی
ناظم ندوة العلماء، لکھنؤ (یو پی) انڈیا

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على سيد المرسلين خاتم النبيين سيدنا محمد، وعلى آله وصحبه وعلى من
تبعهم بإحسان و دعاء بدعوتهم إلى يوم الدين، أما بعد:

"احترام انسانیت اور مذاہب عالم" کے موضوع پر یہ اجتماع انسانی سطح پر ایک اچھی پہل ہے، مجھے اس میں شرکت کرنا تھا، لیکن میں
انہیں تاریخوں میں پہلے سے اپنے طے شدہ پروگراموں کی وجہ سے میں حاضر نہیں ہو سکا۔

میں آپ حضرات کے اس اجتماع کو خوش آمدید کہتا ہوں، اور خاص طور پر اس لیے بھی کہ ملک میں جو اجتماعات ہوتے رہتے ہیں وہ کسی
سیاسی جماعت یا کسی مذہبی ادارے یا کسی خاص ثقافتی دائرے کے اندر رہتے ہوئے ہوتے ہیں، لیکن آپ یہ اجتماع ملک کے مشترک مقصد اور
ملک کے باشندوں کی مشترک مصلحت اور ملک و قوم کی ترقی اور کردار کی بلندی اور انسانیت کو نوازی جیسے اعلیٰ مقاصد کو پیش نظر رکھتے ہوئے، ملک و
قوم کے مشترک مفاد کے لیے تعمیری ذہن سے تبادلہ خیال کرنے کے لیے یہ نمائندہ اجتماع کر رہے ہیں۔ اس کے لیے میں آپ حضرات کو خوش
آمدید کہتا ہوں۔

حضرات! اس زمین پر بسنے والے سارے انسان اللہ رب العزت کی پیدا کی گئی مخلوق ہیں، ان کے خالق و مالک نے سب کو زندہ
رہنے اور امن و سلامتی کے ساتھ رہنے کا حق دیا ہے، اور ان کی امن و سلامتی کے لیے سب پر یہ ذمہ داری آتی ہے کہ ایک دوسرے کا خیال رکھا
جائے، کوئی کسی کے ساتھ زیادتی و ظلم نہ کرے، اور بلا وجہ تکلیف و اذیت نہ پہنچائے، ایک دوسرے کے حقوق کو پہچانے، انسانوں کی یہ دنیا اسی
وقت سلامتی اور امن کے ساتھ قائم رہے گی جب انسان اپنی انسانیت کو پہچانے کہ انسان انسان کا بھائی ہے، ایک آدمی کی سب اولاد ہیں، کوئی
چھوٹا بڑا نہیں، بڑا صرف وہی قرار پائے جو رب کو مانے اور اس کے حکموں پر چلے، اور اچھے اخلاق اختیار کرے۔ اس نے ہی سب کو پیدا کیا اور
دنیا کی یہ سب نعمتیں دیں، جن سے ہم سب فائدہ اٹھا رہے ہیں، اور ہماری ضرورت کا سامان ہم کو مل رہا ہے۔

اس وقت دنیا میں مال کی ہوس اور اپنی بڑائی و صرف ذاتی فائدہ کو بڑھانے کا جذبہ عام ہو گیا ہے، اس میں ایک دوسرے کے حق کو نظر
انداز کر کے فائدہ صرف اپنا دیکھا جاتا ہے، دلوں میں دوری اور خود غرضی عام ہو گئی ہے، جس کی وجہ سے ایک دوسرے سے محبت اور بھروسہ ختم
ہوتی جا رہی ہے۔ سب ایک ساتھ رہتے ہیں، وطن ایک، بلکہ شہر اور محلہ ایک، بازار اور کاروبار ایک، لیکن دل الگ الگ ہوتے جا رہے ہیں، صرف

Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

Nadwatul Ulama, P.O. Box No. 93,
Lucknow - 226007 - U.P. (INDIA)
Mobile: +91-9415328220
E-mail: bilalabulhaihasani@gmail.com

بیلال عبدالحی الحسنی الندوی

بیلال عبدالحی الحسنی الندوی

ندوة العلماء، ص ب ۹۳، لکناؤ (الہند)
الجوال: ۹۱-۹۴۱۵۳۲۸۲۲۰

Date:

التاریخ

اپنے اپنے ذاتی فائدے کی فکری فکری گئی ہے، اس کے لیے ظلم اور حق تلفی اور ہر طرح کی زیادتی کرنے میں کسی کو رکاوٹ نہیں معلوم ہوتی ہے۔ یہ سب باتیں بری ہیں، ہر مذہب میں ان کو برا کہا گیا ہے، اس حالت کو درست کرنے کا کام ہم سب کی ذمہ داری بنتی ہے تاکہ ہم انسانوں کی اچھی باتیں اختیار کریں، بری باتوں سے جن کو ہمارے خالق و مالک کی طرف سے برا کہا گیا ہے، ان سے بچیں، اور کوشش کریں کہ انسان انسانیت کی اچھی باتوں کو اختیار کرے، ایک دوسرے کو اپنی طرح ہی کا انسان سمجھے، اور ہمدردی اور آپسی تعاون کی زندگی اختیار کرے، ہم کوشش کریں کہ سماج سے برائیاں دور ہوں، اور سب ایک دوسرے کے ساتھ ہمدردی اور بھائی چارہ کے ساتھ زندگی گزاریں۔ یہ وہ پیغام ہے جس کی اس ملک کو اور اس کے سماج کو بڑی ضرورت ہے۔

اس آزاد نیکوکار اور جمہوری ملک میں مسلم اقلیت اور غیر مسلم اکثریت کے درمیان تعلقات میں وقتاً فوقتاً کسی مسئلہ میں تھپی پیدا ہو کر امن و امان کی بربادی تک پہنچ جاتی ہے، وہ عموماً موقع پرست رہنماؤں کی طالع آزمائی کا نتیجہ ہوتی ہے، وہ اس سے اپنے سیاسی مفادات کے حصول میں مدد لیتے ہیں، اور اکثریت کے قائدین میں سے کچھ لوگ اس کو مذہبی رنگ دیکر فرقہ وارانہ برتری کا مقصد حاصل کرنے کا اسے بہترین ذریعہ بنا لیتے ہیں، ورنہ دونوں فرقوں کے درمیان مذہبی فرق کے باوجود یہاں سابقہ زمانوں میں وطنی بنیاد پر برابر ہم آہنگی کا معاملہ رہا ہے، مذہب کے معاملہ میں رکاوٹ یا مداخلت نہیں تھی بکراؤ کی فضا کبھی جو بنی ہے تو اس کے پیچھے باہری طاقت کا ہاتھ رہا، ورنہ اس ملک کو مسلمانوں نے باوجود اکثریت میں نہ ہونے کے اپنا پسندیدہ وطن سمجھا، بلکہ اس ملک میں ان کا بڑا قیمتی رول رہا ہے۔

دنیا کے بھی مذاہب نے اچھی باتوں کی تعلیم دی ہے۔ احترام انسانیت کی تلقین کی ہے اور بھائی چارے کا سبق پڑھایا ہے۔ اسلام نے اس پر بہت زور دیا ہے۔ ہمیں اس پر توجہ کرنے کی خاص طور پر موجودہ حالات میں بہت ضرورت ہے۔

ہم جیسے کے منتظمین کی اس سلسلے میں فکرمندی کو سراہتے ہیں، مرکزی جمعیت اہل حدیث کی کوشش سے احترام انسانیت کا یہ اجلاس منعقد ہو رہا ہے، اللہ تعالیٰ کامیاب اور مفید بنائے، آمین۔

دعا گو

سید بلال عبدالحی

سید بلال عبدالحی حسنی ندوی
ناظم ندوة العلماء، لکناؤ (بریلی)

۱۴۴۶ھ/۲۰۲۴ء

۲۰۲۴/۱۰/۳۰

الرئيس العام لندوة العلماء، لکناؤ (الہند)، والأمين العام لحركة رسالة الإنسانية لعموم الهند

ورئيس مدرسة شباء العلوم ببنكيه سفلان، ميدانمور، راني بريلي، ومدير دار عرفات ببنكيه سفلان، راني بريلي (الہند)

Nazim (Rector) Nadwatul Ulama, Lucknow U.P. (INDIA), General Secretary All India Payam-e-Insaniyat Forum,
Rector Madrasa Ziyau Uloom, Maidanpur, Takiya Kalan, Raibareli (INDIA), Director Dare Arafat Takiya Kalan, Raibareli (INDIA)



الجامعة الإسلامية دار العلوم وقف دہلی دارالہند

DARUL - ULOOM WAQF DEOBAND -247554 (U.P.) INDIA

التاریخ

الوقت

بندہ مت کرامی قدر محترم القام بتاب حضرت مولانا امجد علی امام مہدی مقلی صاحب زید مجدد کم

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔

امید کہ مزاج کرامی بعافیت ہوں گے!

مورخہ ۹۔ ۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء کو مرکزی جمعیت اہل حدیث کی جانب سے بتقاضائے وقت منتخب شدہ عنوان ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ منقذ ہونے والی کانفرنس میں شرکت کے حوالے سے دعوت نامہ موصول ہو کر موجب شرف ہوا، یاد آوری پر ہنسیم قلب شکر گزار ہوں، اس میں کوئی شک نہیں مگر معاصر کے پس منظر میں کانفرنس کا موضوع اپنی اہمیت و ضرورت کے لحاظ سے شرکت کا متقاضی ہے لیکن موئے اتفاق کہ مذکورہ تاریخیں دیر سے طے شدہ ایک پروگرام میں وعدہ شرکت کے سبب مصروف ہیں البتہ موضوع کی حساسیت کو پیش نظر رکھتے ہوئے حسب احکام ادارہ کی جانب سے فراہم کی گئی کے لیے محترم جناب مولانا مقلی محمد رفاقت صاحب استاذ دارالعلوم وقف دیوبند جو کہ بھلا اللہ اپنی وسعت فکر و نظر کے سبب ماشاء اللہ قابل اعتماد علمی و فکری صلاحیت و استعداد کی حامل شخصیت ہیں منتخب کیا گیا ہے۔

قانون بنکون کے اعتبار سے یوں تو ہر ایک عہد و عصر کے اپنے کچھ ایسے اختصاصات ہوتے ہیں جو کہ مابین احقرین ظاہری و معنوی فرق کو بایں طور نمایاں کرتے ہیں کہ ماضی و حال کے ربط یا ہم کو عام فکری سطح پر بھی یا آسانی محسوس کیا جاسکتا ہے، لیکن بیسویں صدی کے انتہائے وقت سے آغاز شدہ عہد سائنس و ٹیکنالوجی اور ابلاغ عام کی فلسفاتی برق رفتار انقلابی انقلابات کے تسلسل اور بغیر کسی انقطاع کے سترہ اعزاز میں نمود و ظہور نے تو جیسے عصر حاضر کو اپنے ماضی اور اس سے وابستہ انسانی و اخلاقی اقدار کو ہر ایک سطح پر نئے معانی و مفہم سے متعارف کرا کے رکھ چھوڑا ہو، موجودہ دور میں انسانوں کے ہمہ جہت ذوق و مزاج اور فکر و نظر میں اس انقلابی تغیرات نے بایں طور جبکہ پائی ہے کہ حال کا اپنے ماضی سے مضبوط کنوٹی تسلسل کا گراف فکر معاصر میں اپنی ترقی و ترقی اہمیت کے حوالے سے رد و پھیل ہوا ہے اور موجودہ عہد کی زندگی نے ہر ایک زاویہ افکار و نظریات کی سطح پر اس انقلابی مسابقت کے بہت گہرے اثرات کو قبول کیا ہے نہایت بایں جاہل سید کہ نسل نو اپنی پیش رو نسل سے اپنے افکار و خیالات، خط و لذات، شوق و رغبات، اقدار و روایات، ذوق شرب و طعام، حسن و قبح اور رد و قبول کے معیارات، افعال و اعمال کو چاہیے اور پرکھنے کے مد رکات، سرور و انبساط اور پڑمردگی و ملال کے انداز و اطوار میں بالکل ہی منفرد و مختلف ہے غرض زندگی کی ہر ایک سمت و جہت کو دیکھ کر ایسا لگتا ہے کہ جیسے بہرہ و فلسفوں کے مابین ایک طویل و عیش ایسی شیعج حاصل ہوگئی ہے جس نے فکر و نظر کے مابین اجنبیت کی دیوار کھڑی کر دی ہو، بشرتی روایات کہن کے امین اکبر الہ آبادی مرحوم نے فلسفوں کے مابین نظری فاسطے کا اکھبار اپنے مخصوص طنزیہ و مزاحیہ انداز میں کچھ یوں کیا تھا:

ہم ایسی کل کتابیں قابل ضبطی سمجھتے ہیں

کہ جن کو پڑھ کے بیٹے باپ کو شبلی سمجھتے ہیں

ان کا یہ شعر اس دور سے کہیں زیادہ عہد رواں کے ذوق و مزاج کا عکاس ہے۔

بہر حال بایں ہمہ تفصیلات و احادیث سے مستبعد و مستخرج نتائج سے حاصل شدہ خالص حقیقت کی اساس پر تجزیہ کیا جائے تو تسلسل زمان میں یہ ایک فریب عصر ہے جس کے نمود و ظہور میں مشیت حق کے تحت خیر کے موجزن آثار ان شاء اللہ اپنے وقت پر ظاہر ہوں گے، البتہ اس دور کی مدت بظاہر تو اتنی حق جل جہدہ

Office : +91-8439412767, E-mail: rector@dud.edu.in / info@dud.edu.in , website : www.dud.edu.in



الجامعۃ الاسلامیہ دارالعلوم وقف دیوبند الہند

DARUL - ULOOM WAQF DEOBAND - 247554 (U.P.) INDIA

التاریخ میں ہی محفوظ ہے، لیکن مادیات کی چکاچوند روشنیوں میں پردہ پارسی نسل لوکی وینی تربیت، تہذیبی و فکری جہاں ایک طرف امت کے عہد و اہم کی حیثیت سے علمائے کرام کی ذمہ داری کا اہم ترین حصہ ہے وہیں دوسری طرف اس فرض کی حسن اداگی کے لیے فکر و محاسبہ کا متیق انسانی مطالعہ اور وہاں عہد کی نفسیات سے گہرائی کے ساتھ سنجیدہ واقفیت کا مسئلہ اس ذمہ داری کے تقاضوں میں ناگزیر اضافات کا طالب ہے اس کے بعد ہی ہم احترام انسانیت کی روشن اسلامی تراث و روایات پر اگلی نسل کو مطمئن اور متعلق کرنے میں کامیاب ہو سکیں گے۔ آج کیپوٹراور A.I. کی آغوش میں پردہ پارسی نسل کو دور دورہ چار جیسے بدیہی و منطقی دلائل سے ہی مطمئن کیا جاسکتا ہے، بہر حال منجملہ ان تمام فکری تعمیرات میں احترام انسانیت کے حوالے سے دین اسلام کے پابند و تابندہ درخشاں اصول ہیں جن کو فکر و محاسبہ کی ذہنی سطح کو ملحوظ خاطر رکھتے ہوئے عقلی استدلال کی اساس پر نسل کو نہ صرف متعارف کرانا بلکہ ان کو فکری اختیار سے اعتراف قلبی کی حدود تک لیکر آنا میں سمجھتا ہوں کہ یہ دور حاضر میں خدمت اسلام کی انتہائی اہم ترین جہت ہے، ذات حق جل مجدہ نے باقرین اویان و مذاہب بنی نوع انسانی کو فطری و ظہنی اور ذاتی و قدرتی فائق تر فطرت و استعداد اور صلاحیت و اہلیت کے ذریعہ انسانیت کی اعلیٰ اقدار کی اساس پر کائنات میں موجود مخلوقات پر تفوق سے نواز کر افضلیت کا منصب عظمیٰ عطا فرمایا ہے، لیکن احترام انسانیت کے اس رفیع المرتبت عہدہ کی بقا و استمرار کو ضابطہ اخلاق کے تحت ایک مکمل نظام کی حیثیت سے عقلی و نقلی استدلال سے مزین محکم و نتیجہ خیز اور دوامی بنیادیں صرف دین اسلام ہی فراہم کرنے کی صلاحیت رکھتا ہے اور یہ دعویٰ باخوف تر وید ہے کہ باقبل التاریخ سے لیکر مابعد التاریخ میں قیامت تک دنیا میں بود و تا بود حیثیت سے پائے جانے والے تمام مذاہب احترام انسانیت کی تحقیق و منظم تعلیمات سے خالی ہیں اگرچہ ضابطہ اخلاق و انسانیت کے حوالے جت جت باسند جو علمی و تربیتی نقوش مختلف مذاہب کی مذہبی تراث میں ملتے بھی ہیں تو وہ بھی انبیائے سابقین کی تعلیم و تربیت اور ہدایات کے نقوش رفتہ کے ہی آثار ہیں جس کو فکر انسانی کی تحریر ملی آیدش نے دوامی تاثیر و نتیجہ خیزی سے محروم کر دیا ہے، لیکن دین اسلام دنیا کا وہ واحد دین ہے جس نے صداقت و مطلق کی اساس پر احترام انسانیت کے بقاء و استمرار کو ایمان و عمل سے مربوط اس کی خشیت اساس کو مساعی عمل و جہود و معنوی پر ایک خاص توازن کے ساتھ برقرار رکھتے ہوئے دنیا سے لیکر آخرت تک دائمی صلاح و فلاح کے ثمرات سے جوڑ دیا ہے، قرآن کریم کے مضامین میں بذیل مقاصد انسانی احترام انسانیت کی قرار و احمیت اور اس کی وقعت و منزلت کو جگہ پر جگہ نمایاں کیا گیا ہے، طوالت عبارت کو مد نظر رکھتے ہوئے برسمیل مثال اس ایک آیت کا حوالہ بھی کافی ہے۔

﴿ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ﴾ (سورہ اتین)

مجوزہ کانفرنس کے انعقاد کے تعلق سے مصروف عمل جملہ شرکائے کار تبریک و تہنیت کے مستحق ہیں، بارگاہ رب ذوالکرم میں دعا گو ہوں حق تعالیٰ اس کوشش و کوش کو کامیابی و کامرانی سے سرفراز فرمائیں۔

و ما علینا الا البلاغ المبین

مرستیہ

محمد سفیان قاسمی

مہتمم دارالعلوم وقف دیوبند

مورخہ: ۲۹ ربیع الاول ۱۴۴۶ھ

مطابق ۳۱ اکتوبر ۲۰۲۳ء



Office : +91-8439412767, E-mail: rector@dud.edu.in / info@dud.edu.in , website : www.dud.edu.in



ALL INDIA MUSLIM MAJLIS-E MUSHAWARAT

(UMBRELLA BODY OF INDIAN MUSLIM ORGANISATIONS AND EMINENT PERSONALITIES)

ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस मुशावरात آل انڈیا مسلم مجلس مشاورت

Date: 11th October, 2024

Message

Dear Respected Maulana Asghar Ali Imam Mehdi Salafi Saheb,

Ameer, Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind, Delhi

Assalamu Alaikum wa Rahmatullah wa Barkatahu

On behalf of the All India Muslim Majlis-e-Mushawarat, the only confederation of Muslim organizations and personalities of eminence in India, we extend our heartfelt congratulations and warmest regards to the leadership, scholars, and members of Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind on your 35th All India Ahle Hadees Conference. The chosen theme, "Respect of Humanity and World's Religions," resonates deeply with the core values of Islam and reflects an urgent need of our times.

In an increasingly interconnected world, where misunderstandings and divisions often dominate discourse, this theme serves as a powerful reminder of the teachings of compassion, mutual respect, and unity. Islam, as the final message, encourages Muslims to honor the dignity of every human being and to respect all religions as pathways to coexistence and harmony. Your conference is a noble step toward cultivating this universal message, especially within the diverse social fabric of India.

May this convention inspire all in attendance to uphold these principles of humanity and interfaith respect, promoting peace and goodwill both within and beyond our communities. We are confident that your efforts will strengthen mutual understanding, reinforce solidarity, and foster unity among people of all backgrounds.

We pray for the success of this conference and for your continued contributions toward the betterment of our society. May Allah (SWT) bless your endeavors and grant success to all initiatives taken in the spirit of peace and respect for humanity. Was-Salam

With warm regards and prayers,

Feroze Ahmad

Advocate

President, All India Muslim Majlis-e-Mushawarat

D-250, Abul Fazal Enclave, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025

E-mail: aimmm.delhi@gmail.com, Web: www.mushawarat.org, Mob. No. 9891294692

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند سے شائع جرائد و رسائل کے خصوصی شمارہ کی اشاعت نمایاں خدمت

اللہ تعالیٰ کا شکر ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی طرف سے علم و فکر کی ترویج، ملت کی ترقی اور اصلاح معاشرہ کے لیے اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں شائع ہونے والے جرائد و رسائل کے خصوصی نمبرات شائع کیے جا رہے ہیں۔ یہ قدم بلاشبہ اس دور میں دین کی خدمت اور مسلمانوں کی علمی و فکری رہنمائی کے لیے ایک نمایاں خدمت اور لائق تحسین عمل ہے۔

قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ نے ہمیں غور و فکر کرنے، علم کی جستجو کرنے اور اس علم کو دنیا کے سامنے پیش کرنے کی بار بار تلقین کی ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے: "أَفَرَأَيْتُم مَّنْ بَنَىٰ زَنْجَبَرًا الَّذِي فَتَقَىٰ" (المعلق: ۱) یعنی "ہرگز اپنے رب کے نام سے جس نے پیدا کیا۔" اسی طرح رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: "يُحَرِّمُ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ" (بخاری) یعنی "تم میں سے بہترین وہ ہے جو قرآن سیکھے اور سکھائے۔"

علم کا سیکھنا، سکھانا اور اس کے فروغ کے لیے ذرائع کا استعمال ہمارے دین کی ایک بنیادی تعلیم ہے۔ یہ جرائد و رسائل اس فریضے کو پورا کرنے کا ایک اہم ذریعہ ہیں۔ آج کے دور میں، جہاں فکری انتشار، مذہبی تعصب اور دنیاوی چکا چوند نے نوع آدم کو بھٹکا دیا ہے، ان جرائد و رسائل کا کردار اور بھی اہم ہو جاتا ہے۔ ان کے ذریعے نہ صرف اسلامی تعلیمات کو صحیح طریقے سے پیش کیا جاتا ہے بلکہ مسلمانوں کی فکری تربیت بھی کی جاسکتی ہے۔

ہم سب پر یہ ذمہ داری عائد ہوتی ہے کہ ہم سب دین اسلام کی اصل روح کو سمجھتے ہوئے اس کا صحیح پیغام لوگوں تک پہنچائیں۔ اسی مقصد کے تحت یہ جرائد و رسائل ایک مضبوط پلیٹ فارم فراہم کرتے ہیں جہاں دین کے اصول و ضوابط، اسلامی فکر اور جدید مسائل کے حل پیش کیے جاسکتے ہیں۔



Reg. No. 763/19

امارت شرعیہ بہار، اڑیسہ و جھارکھنڈ پھلواری شریف، پٹنہ، بہار

IMARAT SHARIAH, BIHAR ODISHA & JHARKHAND

Phulwari Sharif, Patna 801505, BIHAR (INDIA)

Website : www.imaratshariah.com

حوالہ

مورخہ

میں اس موقع پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے امیر، تمام متفقین اور کارکنان و خدمت گزار کو مبارک باد پیش کرتا ہوں، جنہوں نے اس اہم علمی و تحقیقی کاوش کو غلطی جامر پہنچایا۔ ان کی محنت و لگن کے باعث یہ جہانہ و رسائل علم کے فروغ اور امت مسلمہ کی اصلاح کا ذریعہ بنیں گے، ان شاء اللہ

میں دعا گو ہوں کہ اللہ تعالیٰ اس خصوصی شمارے کو مقبول بنائے اور اس کے ذریعے مسلمانوں کے دلوں میں علم کی روشنی اور فکری بیداری پیدا فرمائے۔ میری نیک تمنائیں ان تمام لوگوں کے ساتھ ہیں جو اس کار خیر میں مصروف ہیں، اور امید کرتا ہوں کہ یہ سلسلہ کامیابی کی نئی منزلیں طے کرے گا، ان شاء اللہ

اللہ تعالیٰ ہم سب سے دین کی خدمت لیتا رہے، اعمال کو قبول کرے اور صراطِ مستقیم پر قائم رکھے، آمین۔

والسلام

۱۶ / ۱۰ / ۲۰۲۴

امد ولی فیصل زمانی

امیر شریعت بہار، اڑیسہ و جھارکھنڈ



Ameer-e-Shariat
IMARAT SHARIAH
BIHAR, ODISHA & JHARKHAND
Phulwari Sharif, Patna-801505 (India)

Ph.: 0612-2555668, 2555351, 2555014, E-mail : nazimimaratsariah@gmail.com, imaratshariahphulwarisharif@gmail.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

33



گرامی قدر مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی مدنی!

(رحمۃ اللہ علیہ)

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام منعقد ہونے والی ہینٹیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کا دعوت نامہ موصول ہوا۔ یہ جان کر بہت خوشی ہوئی کہ اس کانفرنس کا مرکزی موضوع ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ طے کیا گیا ہے۔ یہ موضوع اتنا اہم ہے کہ آج کی ملکتی سکتی انسانیت کے غموں کا مداوا اور امن عالم کا نقطہء اتحاد ثابت ہو سکتا ہے۔

انسان کے لیے اس سے زیادہ شرمندگی کی بات کچھ نہیں ہو سکتی کہ وہ انسانیت کھو بیٹھے۔ ایک خدا کی بنائی ہوئی خوب صورت دنیا کو فتنہ گاہ بنادے۔ آپس میں انس کے ساتھ رہنے کے بجائے وحشت کا سوداگر بن جائے۔ افسوس! آج یہی ہو رہا ہے اور اس کے نتائج ہر ملک، ہر مذہب اور ہر رنگ و نسل کا انسان بھگت رہا ہے۔

ایسے ماحول میں اگر مختلف مذاہب کے سنجیدہ رہنماؤں کو جمع کر کے انھیں احترام انسانیت کے نقطے پر جمع کرنے کی کوشش کی جائے تو امید ہے کہ دنیا میں برپا جنگ و جدال میں کچھ کمی آئے گی۔ اسی اصول کو سامنے رکھتے ہوئے ہم نے کئی سال پہلے اپنے ادارے انسٹی ٹیوٹ آف انٹیکلیٹیو اسٹڈیز کے زیر اہتمام قرآن کریم کی آیت مبارکہ ”وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَكُونُ بَنِي آدَمَ كَرَامَتِ انْسَانِي“ (Dignity of Humanity) کے نام سے ایک علمی پروجیکٹ شروع کیا تھا۔ اسی طرح آل انڈیا ملی کونسل نے بھی اس موضوع پر متعدد چھوٹے بڑے اجلاس منعقد کیے تھے۔ مجھے بہت خوشی ہے کہ اسی موضوع پر آپ حضرات قومی سطح کی کانفرنس منعقد کر رہے ہیں۔ یہ آپ کی دوراندیشی اور راست فہمی کا نتیجہ ہے۔ ان شاء اللہ آپ کی اس کانفرنس کا پیغام دور دور تک پہنچے گا اور احترام انسانیت کے عظیم درس کو سمجھنے کی کوشش کی جائے گی۔

دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ ہم سب کو خلاص کی دولت عطا فرمائے، آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کو اپنے مقاصد میں کامیابی عطا فرمائے اور اس کانفرنس کو احترام انسانیت کا بھولا ہوا سبق یا دولا نے کا ذریعہ بنائے۔ آمین

والسلام
ڈاکٹر محمد منظور عالم
جنرل سکرٹری



ALL INDIA IMAM ORGANIZATION

(A Representative Body of Half A Million Imams of India)

Date: 28th Oct 2024

گرامی قدر حضرت مولانا امجد علی امام مہدی مقلی صاحب مدظلہ العالی

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید کہ حراج عالی بخیر ہوں گے۔

یہ جان کر بڑی مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی سب سے قدیم دینی و اصلاحی، تعلیمی و ترجمانی اور سماجی و ثقافتی تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دو روزہ عظیم الشان سیمینار آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بتاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء مطابق ۶-۷ جمادی الاولیٰ ۱۴۴۶ھ بروز ہفتہ و اتوار بعنوان: ”اسلام انسانیت اور مذاہب عالم“ نہایت بزرگ و اہم مقام کے ساتھ دہلی کے رام لیا امیدان میں منعقد ہو رہی ہے، جس میں ملک و بیرون ملک کے مشاہیر علمائے کرام و دانشوران ملک و ملت اور اہم مذہبی و سماجی شخصیات شریک ہوں گی۔ نیز یہ کہ اس کانفرنس کے موقع پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند سے اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں کثیر تعداد میں شائع ہونے والے جرائد و رسائل کے خصوصی نمبرات کا اجرا بھی عمل میں آئے گا۔ اس اہم کانفرنس میں شرکت کی دعوت کے لیے ہم ہمیں قلب سے آپ کے منظور ہیں اور کانفرنس کی کامیابی کے حتمی اور دعاگو۔

آج کل عالمی سطح پر جو بے چینی، اضطراب، بے اعتمادی، حسد و کینہ، تکفیر، خویش تصادم اور جس کی لالچی اس کی بھینس کی صورت حال پیدا ہو رہی ہے۔ اس کی بڑی وجہ ایک دوسرے کے عقائدات، ثقافت اور مذہبی تعلیمات سے ناواقفیت یا ان کی دانستہ و نادانستہ پامالی ہے۔ مقام شکر ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ان مقاصد و مصالح کے فروغ و تحفظ اور حصول کو ترجیحی طور پر پیشانی بنانے کی کوشش کی ہے، اپنی تمام تر سرگرمیوں اور خدمات اور ہر آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس، تقویٰ سیمینار اور سیمینار کا مرکز و محور بنیں بنیادوں اور اصولوں کو بنایا ہے اور اس دشمنی کے قیام، انسانیت کی تعمیر، اخوت کا فروغ، رواداری اور تقویٰ جتنی کے استحکام، حقوق نسواں و اطفال کے تحفظ و بحران و تحفظات کی تلاش و بہبود، رہنمائی گروہ کی تبلیغ کئی اور سماجی برائیوں کے خاتمے کی نہ صرف بات کی ہے، بلکہ ان کی ناسوروں کو مٹانے کے لیے بھی پہل کی ہے۔ اور یہ سیمینار آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بھی اسی مبارک سلسلہ کی اہم مرکزی ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس بھی دیگر کانفرنسوں کی طرح اپنے موضوع و مشکلات اور زمان و مکان کے لحاظ سے سنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام امن و انسانیت، تحفظ حقوق، رواداری، تقویٰ جتنی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس، تشدد و دہشت گردی، شراب نوشی و دیگر منکرات، جہیز، جوار، رشوت، جہالت، خود غرضی، استعمار، مصلیٰ و سماجی برابری وغیرہ کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کے لیے اہم کردار ادا کرے گی، ان شاء اللہ۔

میری دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کانفرنس کو ہر اعتبار سے ملک و ملت اور انسانیت کے لیے مفید بنائے، اس کے اچھے اثرات ظاہر ہوں اور آپ کی تمام تقویٰ، ملی اور انسانی خدمات کو قبول فرمائے، آمین۔ والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

مخلص
سید الیاسی

چیف، ام آل انڈیا امام رگنا نرینیش، نئی دہلی

Central Office : Imam House, Masjid Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110 001 (India)
Phone : +91-11-2338 5777 Telefax : +91-11-2338 5963 Mobile : 9811641786
E-mail : moulanaaliyasi@gmail.com, allindiaimamorganization@gmail.com
Website : www.allindiaimamorganization.org twitter@imam_aliyasi

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

35

Pandit N.K. Sharma

Founder of Association for spiritual awareness (UASA)

संदेश

आदरणीय मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी जी
अध्यक्ष, मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द शताब्दियों से लगातार यह सम्मेलन करती आ रही है, इस सम्मेलन के माध्यम से सन्देश देते हैं, हमारा जो कुरुआन ग्रंथ है, इस में वर्णित जो शिक्षाएं हैं, यह पूरी मानव जाति के लिये हैं किसी एक धर्मवाल्मीकी के लिये नहीं हैं। बन्धुत्व की भावना, सदाचार की भावना, तप की भावना और अपने पड़ोसी के प्रति अधिक सदभावों की भावना, बन्धुत्व की भावना, सेवा, और इस माध्यम से दूसरे धर्मावलंबियों का आदर करना, किसी प्रकार की हिंसा की निन्दा करना, किसी भी प्रकार के अतिक्रमण के विरुद्ध आवाज उठाना, और ऐसी कोशिशों में लगना जिससे सब की भलाई हो सके, समाज में समरसता का समावेश हो सके, इन कोशिशों का लगातार मैं सम्बर्धन करता रहा हूँ और आगे करता रहूँगा चूंकि यही एक तरीका है समाज में बन्धुत्व की भावना को आगे बढ़ाने का, समरसता को आगे बढ़ाने का, बन्धुत्व और आपसी भाईद्वारा, समाज और देश की आधार शिला होती है, मजबूत राष्ट्र बनाने के लिये किसी समाज में भिन्न भिन्न जो धर्मावलम्बी हैं, भिन्न-भिन्न आचार विचार के लोग हैं, उनकी अलग अलग पूजा पद्धतियां हो सकती हैं, लेकिन हमारे यहां कानून तो सबके लिये बराबर है हर देश में ऐसा ही होता है।

इसी तरीके से जो धर्म का मूल आधार है। यह सबके अन्दर एकरूपता के साथ पाया जाता है। मूल भावना यही है जाहिर है इसके लिये लगातार प्रयास करते रहे हैं मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के साथ मेरा बड़ा बन्धुत्व का भाव रहा है, और वह भी मुझे बहुत अच्छे से आदर करते रहे हैं सहयोग करते रहे हैं, तो आज मैं यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि हमारी जो वैदिक सम्प्रदाय है और संस्कृति है सनातनी संस्कृति है हमारा धर्म वास्तव में सनातन धर्म है सनातन जो था, है और रहेगा सनातन का मूल यह है कि जिस से संपूर्ण सृष्टि है किस प्रकार चलायमान है किस प्रकार वह बनती है और चलती है और सहेजी जाती है संपूर्ण सृष्टि की बात हो रही है जाहिर है कि जब संपूर्ण सृष्टि की बात होगी तो संपूर्ण मानवता ही की बात होगी। सृष्टि में तो बहुत सारे गृह क्षेत्र हैं। उसमें पृथ्वी भी है तो पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मानव के लिये मानव के लिये बगैर किसी जाति, क्षेत्र, संप्रदाय, वर्ग, रूप, रंग, देश, काल का भेद किये बगैर उसकी सहजता के लिये उसकी प्रगति के लिये पूर्ण समाज की उन्नति के लिये और राष्ट्र की समृद्धि के लिये और इस भूमंडल पर रहने वाले भूमण्डल के अलावा प्राणी मात्र के लिये वनस्पति जगत के लिये जन्तुओं के लिये और हर किसी के लिये कैसे कल्याण कारी हो सके, इस दिशा में अपना अपना जीवन लगाने की जो प्रेरणा है वह सनातन धर्म के धर्मावलंबियों को अपने धर्म ग्रन्थों से प्राप्त होती हैकि यह जीव, जो भी मनुष्य है, मनुष्य ही नहीं चाहे कबूतर हो, कोई पशु हो, या कोई समुद्री जीव जन्तु हो, प्राण है, उसका जो जीव है उसमें ईश्वर का वास होता हैमैं प्रत्येक जीव में अश धारण करके रहता हूँ, ऐसा भगवद् गीता में भी कहा गया है, रामायण में भी कहा गया है, वेदों में भी कहा गया है, और वेदों की बात तो बहुत ही इस दृष्टि से अनुकरणीय हो जाती है। उसके अन्दर तो इस प्रकार का भाव है

सन्देश है मानवता के लिये और साथ में यह भी कहा गया हैयह मानवता के लिये बहुत बड़ा सन्देश है, और साथ में यह भी कहा गया है

.....
पृथ्वी अर्थात् धरती पर रहने वाले प्रत्येक जीव के साथ मेरे साथ बन्धुत्व का भाव है और यहां यह मेरा कुरुम्ब है साथ में यह भी कहा गया है.....

हे ईश्वर, हे अल्लाह, हे गण, हे खुदा, हे लाख किसी भी नाम से पुकारो सब चीजें तो एक ही हैं तो मुझे प्रार्थना में कहा गया है कि ऐसे कार्य में सबन्ध कर इस दिशा में लेकर चल ताकि मैं समागं पर खलू सदबुद्धि मेरे अन्दर बनी रहे और ऐसे कार्य में लगू जिस से कि हर मनुष्य का विकास हो।

अर्थात् ...हर मनुष्य निरोग है हर एक के कल्याण की बात को मैं देखू, सदभाव का भाव रखू, यह जो भावना है हमारे ग्रन्थों में जो वर्णित की गई है वह इस बात का द्योतक है बहुत सारी बातें देख कर कभी कभार मुझे आश्चर्य भी होता है कि जब सारे धर्मों में इस प्रकार की बात चीत है मतों में भी यह बात है फिर भी एक मत को मानने वाला दूसरे मत के मानने वाले से घृणा, नफरत और हिंसा की बात कैसे कर सकता है? हर एक में यह कहा गया है कि किसी भी जीव जन्तु को कष्ट देना ईश्वर को कष्ट देने के बराबर है, और पूरी सृष्टि को नुकसान पहुंचाने की बात है। भाई आप लोग नमाज़ अदा

करते हैं, नमाज़ में स्मरण करते हैं ईश्वर का, ज़कात निकालते हैं, रोज़े रखते हैं तो ऐसे ही नौराज़ में उपवास रखे जाते हैं दसास निकाला जाता है और संधिया मंथन किया जाता है और इस प्रकार के सूत्रों का पाठ किया जाता है। अन्तर्गतता उसी ईश्वर की जिस ईश्वर के भिन्न रूप हो शरीर हमारा एक है, लेकिन इस पावन शरीर का पावन संस्थान अलग है शरीर का जो रक्त संसाधन सिस्टम है वह अलग है, श्वास प्रश्वास की प्रणाली अलग है इन प्रणालियों को संचालित करने वाली जो शक्तियाँ हैं उनको अलग नाम और रूप दे दिया गया है और कुछ नहीं है इसके अलावा लेकिन है तो वह एक ही चीज़ तो इन रूपों का ध्यान करते हुए अन्तर्गतता बात एक ही है उसके अन्दर कि हमको

हमको असत्य से सत्य की ओर ले चल तपस्य और प्रकाश की ओर ले चल, अंधकार से हम प्रकाश की ओर आगे बढ़ें, और ऐसे कार्यों में न लगे जो कष्टकारी हों किसी के लिये भी और शुभप्रद हों, भावप्रद हों, कल्याणकारी हों, हर एक के लिये बिना किसी विभेद के किस जाति का है, किस संप्रदाय का है किसी धर्म का मानने वाला है किस क्षेत्र का है, यह जो साहयन्तुत्व की भावना है यही एक सही दिशा है तरीका है समाज को समृद्धि करने का राष्ट्र को भी समृद्धि बनाये रखने और हर एक व्यक्ति के लिये उसके परिवार के लिये समृद्ध होने का यही हमारे यहाँ भी मान्यता है। पिंड तथा ब्रह्मांड जैसे आप ब्रह्मांड के अन्दर यानी कि पूरे यूनीवर्स में तब्या पिंड वैसा सूक्ष्म रूप पिंड में मनुष्य के शरीर में भी विद्यमान है यह बहुत बड़ी विचार है वेदों का उसके माध्यम से, दर असल एक ही सन्देश देने की कोशिश की गई है और एक बात मैंने कई मंथों से कहा भी है बार बार मैं इसको दोहरा भी देना चाहता हूँ। देखिए हमारे कुरआन शरीफ की जो आयतें हैं वेद की ऋचाएं हैं हमारे धर्मावलंबियों के और भी धर्म हैं उसकी कुछ चीज़ एकलूप है समान हैं जैसे सूर्य फातिहा का आप हिन्दी में रूपान्तरण करें हमारे जो गायत्री मंत्र हैं हर समय हर मामले के लिये जिसको बोला जाना आवश्यक किया गया है, हर सनातन धर्म के मानने वालों के लिये, दोनों का एक साथ रूपान्तरण कर लीजिए, हिन्दी में दोनों एक ही हैं, यह हम कोई विचार धारा नहीं बता रहे हैं। यह सत्यता बता रहे हैं, ऐसी और भी बहुत सारी चीज़ें हैं। आप कहते हैं अल्लाहो अवबर अल्लाहो अक्बर, अभी जो मैंने अपने वेद की बात आप के सामने रखी है कुरआन शरीफ में भी कहा गया है अश्यकुल मख्लूकात.....

अन्तोगत्वा वह भी तो यही कह रहा है कि हर जीव में मेरा ही वास है तो इस समय जब कि पूरी दुनिया में तरह तरह का युद्ध का वातावरण बना हुआ है रुस और यूक्रेन में कई महीनों से लगातार हो रहा है रुक नहीं रहा है। इधर इजराइल और ईरान के बीच हानिया, हिजबुल्ला, ईरान और फिलिस्तीन के बीच जो कुछ हो रहा है उसकी वजह से बड़े भारी तनाव हुए पड़े हैं पूरे विश्व भर में, युद्ध पूरी विश्व शान्ति के लिये खतरा हो सकता है और आम लोगों के जन जीवन पर भारी दुष्प्रभाव पड़ सकता है, यह हमारी यूनाइटेड नेशन है, दुर्भाग्य का विषय है इजराइल ने राष्ट्र संघ के सेक्रेटरी जनरल को भी आने से रोक दिया, यूनाइटेड नेशन की शान्ति सेना पर भी उन्होंने आक्रमण कर दिया कितना दुःख है। 40 हजार से अधिक निराश्रय बच्चों महिलाओं को उन्होंने मार दिया। इन परिस्थितियों में इस प्रकार के शान्ति सन्देशों को लाना आयोजन करना जमीअत अहले हदीस के द्वारा, यह समय की आवश्यकता है विश्व शक्तियों को जो अपने आप को विश्व शक्ति मानती हैं उनको यह बात समझनी पड़ेगी कि अगर आप को अपना स्तित्व बचाये रखना है तो आपको दूसरों के स्तित्व की चिन्ता करनी पड़ेगी। अब तो ऐसी स्थिति बन चुकी है कि एक देश का दूसरे देश पर कई मामलों में निर्भरता है कई मामलों में इजराइल सोघता हो, अमरीका सोघता हो, या दूसरा कोई ऐसा सोघता है कि हम तो एकले सब कुछ कर लेंगे तो यह संभव नहीं है जो इकोनोमी है वह एक दूसरे पर निर्भर है देखिए यूक्रेन की लड़ाई के दौरान, कितनी चीज़ें, जो सपलाई चैन था, कितनी समस्या आ गई थी कोविड के दौरान, यह इस बात का सूचकांक है कि हमारे धर्मग्रन्थों में जो सन्देश दिया गया है जो उपदेश दिया गया है उसको अनुकरण करने की ज़रूरत है सिर्फ समाज वर्ग को नहीं बल्कि शासक वर्ग को ज़्यादा सोचने की ज़रूरत है चाहे वह अरब देश हों या यूरोप देश हों चाहे एशिया के देश हों, देश कोई भी हो शक्तिशाली राष्ट्रों को और अधिक सख्ती के साथ उसको अपनाने की ज़रूरत है अगर उनको अपना स्तित्व बचाना है, क्योंकि कोई भी शक्तिशाली राष्ट्र ईश्वर से बड़ा हो ही नहीं सकता। ईश्वर के सन्देश को जो इस काफ़ेन्स के माध्यम से दिया जा रहा है उसको अपनाने की ज़रूरत है दृढ़ता से उसको लागू करने की ज़रूरत है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस को पुनः इस बात के लिये शुभकामना दूंगा, असागर अली इगाम महेदी सफ़ली को इस बात के लिए बहुत ही प्रशंसा करूँगा। इस समय पर उन्होंने इस प्रकार का आयोजन करने का निर्णय किया हालांकि यह हमेशा करते रहे हैं मैंने शुरू में कहा कि वह शताब्दियों से करते रहे हैं पर आज इसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत है, आइये हम प्रार्थना करेंगे ईश्वर है अल्लाह है गाइ सबको सदबुद्धि प्रदान कर, सब में बन्धुत्व का प्रचार कर, हमको संमार्ग पर लाने की प्रेरणा दे ताकि हम अहंकार, हिंसा, अत्याचार, और दूसरी बुराइयों से अपने आप को दूर कर सकें।

पंडित एन. के. शर्मा

Founder of Association for spiritual awareness (UASA)

Most Rev. Anil J.T. Couto
Archbishop of Delhi



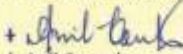
Archbishop's House
1, Ashok Place
New Delhi - 110001, India
Tel: +91-11-23343457; 23362058
e-mail: archbishopdelhi@gmail.com

I am extremely glad to know that Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees Hind is organizing the 35th All India Ahle Hadees Conference on November 9-10, 2024 at Ram Lila Ground on the topic '**World Religions and Respect for Humanity**'. I understand that this mammoth conference is expected to be graced by many renowned religious scholars, noted speakers, social scientists, eminent academicians and distinguished guests from India and abroad who will shed light on the topic through their illuminating speeches, discourses, lectures and poetries.

There is no doubt that respect for humanity is the core of all religions because all religions are founded on faith in God; and God cannot but be love and compassion, mercy and kindness, justice, truth and righteousness. We experience God not only outside of us but also inside of us as our innermost Self – the Indwelling Eternal Presence. Therefore, every human being, irrespective of caste and creed, is a reflection of the divine and shares equally in the divine life and in the one humanity. Nobody is superior or inferior to the other; to consider anyone as lower in humanity to oneself is an insult to God and contradiction of religion.

In Christianity we believe that God made everyone in his own image and likeness (cf. Genesis 1: 26). This image and likeness, which was marred by the sin of disobedience of our first parents Adam and Eve, has been restored by the obedience of Jesus Christ the Incarnate Word of God who is the "image of the invisible God, the first born of all creation" (Colossians 1:15). His sublime teachings centre on becoming God's children through love and compassion, humility and meekness, peace and reconciliation which can be summed up in his teaching on the one great commandment: "You shall love the Lord your God with all your heart and with all your soul and with all your mind. This is the great and first commandment. And a second is like it: You shall love your neighbour as yourself. On these two commandments depend all the Law and the Prophets." (Mathew 22:37-40).

I hope and pray that this Conference may indeed be one more step forward in our country and in the world to recognize the humanity that binds us all together as children of the ONE family of God and overcome the walls that divide and separate us on the basis of caste and creed, language, ethnicity and culture. May violence and warfare give place to a civilization of love.

+ 
(+Anil Couto)

Archbishop of Delhi

October 17, 2024



Acharya Yeshe Phuntsok

Former deputy speaker tibetan Parliament in exile and senior advisor
bharat Tibet sayog manch and member of Indian minority foundation and
member of Indian sarva dharam sansad.

Message

Tashi delek and Namkar

It is my pleasure to attend the 35th all India AHIE HADEES conference for two days in Delhi. Every human being in the global is wandering the peace and harmony. No one is willing to say bad things to the peoples. no one is wandering suffering in the life. life is very precious and it is very difficult to get the human life. therefore single minutes is important and values in human beings life. Motivation is very important what ever we could do in our life. Kindness and loving the other people is always value for the individual life and life is challenges and struggles. To believe own religion and to respect the other religions. Taking a positive in life. I appreciate the markazi jamiat ahle hadees hind to organising a such a great conference with inter religious thoughts and a philosophy of the various religion of the world and in being a tibetan and followers of His Holiness the 14th Dalai Lama ji. I applied to the global and the gathering must support the Tibet and wherever people needs help and support must to stand with them. that is true human beings and humanitarian. Many congratulations and best wishes for the conference.

Acharya Yeshe Phuntsok

Former deputy speaker tibetan Parliament in exile and senior advisor bharat
Tibet sayog manch and member of Indian minority foundation and member of
Indian sarva dharam sansad.

Date 22nd October 2024



ACHARYA SUSHIL MUNI MISSION (REGD.)

Founder : SHRI VIVEK MUNI JI MAHARAJ

CHIEF DISCIPLE OF

(WORLD RENOWNED HIS HOLINESS ACHARYA SHRI SUSHIL KUMARJI MAHARAJ)

Shri Shukal Dham Jain Mandir Ghevra,
Nizampur Road, Village Savda, Delhi-81
E-mail : vevekmuni1974@gmail.com

Acharya Sushil Muni Charitable Hospital
Village Ajjawal, Near Milk Plant,
Hoshiarpur-146001 Punjab (India)

Admin Office : C-11/20-21, Sector-3, Rohini, Delhi-110065
Mob.: 9971519818, 9999908287, 9212796280
E-mail : acharyasushilmunimission@gmail.com

Date: 30.10.2024

भारतीय संस्कृति में कहा गया है, “धार्यते अनेन इति धर्मः” अर्थात् जो सबको धारण करता है, यानी आधार देता है, वह धर्म है। धर्म की आधारशिला पर ही पूरी मानवता टिकी हुई है।

धर्म व्यक्ति के व्यक्तित्व और अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। धर्म मानव को नैतिकता और अध्यात्मिकता का मार्ग दिखाता है। धर्म मानव को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को समझने की शक्ति देता है। धर्म व्यक्ति को परिवार, समाज और देश से जोड़ता है।

धर्म मात्र बौद्धिक उपलब्धि नहीं है, धर्म अंतःकरण की पवित्रता है।

सत्य, अहिंसा, शांति, सह-अस्तित्व, प्रेम, आदर, सम्मान, दया, करुणा, त्याग, सहयोग, क्षमा सहानुभूति, सहिष्णुता आदि धर्म के मूलभूत सिद्धांत हैं। जिसे सभी धर्मों में स्वीकार किया है।

धर्म एक गतिशील विचार-धारा एवं प्रगतिशील व्यवस्था है। इसे किसी एक ग्रंथ, एक उपदेशक से जोड़ना संकीर्णता है।

धर्म का आधार आध्यात्मिक एवं प्रयोग व्यावहारिक होना चाहिए। विश्व को एक कुटुम्ब मानते हुए, सबके कल्याण की कामना की जानी चाहिए।

धर्म आरोपित न हो, स्वैच्छिक हो, स्वतंत्र हो, वैज्ञानिकता की कसौटी पर भी यथासंभव खरा उतरने की क्षमता रखता हो और विश्व की शांति-प्रगति में बाधक नहीं, सहायक हो। आज ऐसे धर्म की परम आवश्यकता है जिसमें संपूर्ण विश्व को, पूरी मानवता को प्रेम के एकसूत्र में जोड़ते हुए सृष्टि के सभी जीवों के हित की कामना हो।

आज ऐसे धर्म की परम आवश्यकता है जो विश्व को, पूरी मानवता को एक परिवार की तरह मानते हुए सभी के विकास के लिए, शांति के लिए सहयोगी हो। जिसमें, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का मंगल गान हो, 'सर्वे सन्तु निरामया' की पवित्र भावना हो तभी सभी महापुरुषों का विश्व शांति का स्वप्न साकार हो पाएगा।

विवेक मुनि

संस्थापक:- आचार्य सुशील मुनि मिशन, दिल्ली



BHARTIYA SARVA DHARMA SANSAD
भारतीय सर्व धर्म संसद
(INDIAN PARLIAMENT OF ALL RELIGIONS)

दिनांक: 30-10-2024

भारत दुनियाभर में अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहा है और इसमें हम सब हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, बहाई और सभी अन्य धर्म मिलकर भारत को एक विश्व गुरु बनने की ओर मदद कर रहा है। मैं आशा करता हूँ की 35वीं आल इंडिया अहले हदिस कांफ्रेंस, रामलीला मैदान इस सर्व धर्म सम्मेलन से भाइयों की एक मिसाल कायम करेगा।

महर्षि भृगु पीठाधीश्वर
श्री गुरु जी गोस्वामी सुशील जी महाराज
(राष्ट्रीय संयोजक, भारतीय सर्व धर्म संसद)

Thakar Dwar Mandir, R. B. 6, J/-
Block, Beta-2 Greater Noida, Gautam
Buddha Nagar (U.P.), India -201308
Contact No. 9899281458, 8285201520

E-mail: 2007bds@gmail.com, gswaminisushilamaharaj@yahoo.co.in Web: https://www.bds.in

محترم القام امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہندو دیگر ذمہ داران اور علماء و دانشوران! السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
ایک دینی و اصلاحی اور تربیتی تنظیم کی طرف سے اپنے سالانہ پروگرام کو احترام انسانیت کے عنوان سے منسوب کرنا بہت ہی
خوشگوار اور قابل تقلید پہلو ہے، اگر سیاسی تنظیموں کی طرف سے اس طرح کے پروگرام رکھے جائیں تو ان کے پیچھے سیاسی مقصد اور سیاسی
مفاد کا فرما ہوتا ہے؛ لیکن ایک مذہبی تنظیم کی طرف جو عقیدہ توحید اور سنت کی داعی اور ترجمان ہے، اس کو عنوان بنانا دعوت دین کی مثبت
کوشش ہے، اور بے حد اہمیت کی حامل ہے، اور باقی یہ کوشش قرآن وحدیث کے مزاج کے عین مطابق ہے۔

قرآن مجید کے ارشاد کے مطابق پوری انسانیت کا آغاز ایک ہی ہستی کے وجود سے ہوا ہے، خدا نے اسی ہستی سے اس کا جوڑا
پیدا کیا اور اس جوڑے سے پوری انسانیت وجود پذیر ہوئی :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ وَأَجْدَدُ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا
وَقِنْسَاءً۔ (النساء: ۱)

اے لوگو! اپنے پروردگار سے ڈرو، جس نے تم کو ایک ہی جان سے پیدا کیا، اور اسی سے اس کا جوڑا بنایا، اور
ان دونوں سے بہت سے مرد اور عورت پیدا دیئے۔

اس طرح اسلام کی نظر میں پوری انسانیت ایک ہی کنبدہ اور خاندان ہے، یہ ایک ہی درخت کی شاخیں اور ایک ہی گلدستہ کے
پھول ہیں، اس سے ہمیں انسانی اخوت کا سبق ملتا ہے، جیسے ایک مسلمان دوسرے مسلمان کا بھائی ہے، اسی طرح ہر انسان، انسانی رشتہ
سے ہمارا بھائی اور ہمارے وسیع تر خاندان اور کنبدہ کا ایک حصہ ہے، یہ اخوت و بھائی چارگی ہمیں محبت و پیار کا پیغام دیتی ہے اور اس
جانب متوجہ کرتی ہے کہ ہمیں ہر فرد بشر سے محبت ہونی چاہئے۔

یہی انسانی روایت کی دوسری بنیاد انسانی شرافت و کرامت اور احترام آدمیت ہے، انسان کو بحیثیت انسان اللہ تعالیٰ نے قابل
احترام قرار دیا ہے:

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ۔ (بنی اسرائیل: ۷۰)

ہم نے اولاد آدم کو عزت بخشی ہے۔

اس کے جسمانی سانچہ کو بہترین سانچہ قرار دیا گیا ہے:

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ۔ (الانسان: ۳)

ہم نے انسان کو بہترین ساخت پر پیدا کیا ہے۔

• نام: بہت فضائل والا ہے
• صدر: آل اللہ فی سلم پریسٹن لائبریری
• جرنل: مکریری: اسلامک لٹریچر ایڈیٹری
• رکن: انٹرنیشنل فز ایکسپریس

• مدیر: المعهد العالمی الاسلامی حیدرآباد
• رئیس: هيئة قانون الأحوال الشخصية الإسلامية لعلوم الهند
• امین عام: مجمع الفقه الاسلامی (الهند)
• عضو: مجمع الفقه الاسلامی بمكة المكرمة

• Director : Al Mahadi Uf Aali Al Islami, Hyderabad
• President : All India Muslim Personal Law Board
• General Secretary : Islamic Fiqh Academy, INDIA
• Member of International Fiqh Academy, Makkah Mukarramah

"Bait-ul-Hamd" H.No : 16-182/1, Quba Colony, P.O. Pahadi Sharif, Hyderabad- 500005, Telangana State, INDIA

WhatsApp : +91 8247271290, Mobile : +91 9959642747

Email : ksrachmani@yahoo.com, Website : www.khalidrahmani.in

یہ نگریم و احترام تمام بنی نوع انسانی سے متعلق ہے، پیغمبر اسلام ﷺ نے عملی طور پر اس حقیقت کو واضح فرمایا، ایک بار ایک یہودی کا جنازہ جا رہا تھا، آپ ﷺ کھڑے ہو گئے، لوگوں نے عرض کیا کہ یہ یہودی کا جنازہ ہے، آپ ﷺ نے فرمایا کہ جان تو اس میں بھی ہے، (بخاری، حدیث نمبر: ۱۳۱۲، باب سن قام بجنازۃ یہودی)

جہاں تک مسلمانوں کے دوسری اقوام سے روابط کی بات ہے تو اللہ تعالیٰ کا یہ ارشاد ہے:
 لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْا اِلَيْهِمْ، اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ۔ (المائدہ: ۸)
 اللہ تعالیٰ تم کو ان لوگوں کے ساتھ حسن سلوک اور انصاف کا برتاؤ کرنے سے منع نہیں کرتے، جنہوں نے دین کے معاملہ میں تم سے لڑائی نہیں کی اور تم کو تمہارے گھروں سے نہیں نکالا، یقیناً اللہ انصاف کرنے والوں کو پسند کرتے ہیں۔

یہ آیت بنیادی اہمیت کی حامل ہے اور اس سے یہ بات واضح ہے کہ جو غیر مسلم مسلمانوں سے برسرِ پیکار نہ ہوں، مسلمانوں پر ان کے ساتھ حسن سلوک کا معاملہ کرنا ضروری ہے، قرآن نے صاف کہا ہے کہ کسی قوم کا ہدایت کے راستہ پر آنا اور دین حق کو قبول کرنا اللہ تعالیٰ کی توفیق پر منحصر ہے؛ لیکن اس کی وجہ سے کسی گروہ کے ساتھ بے تعلقی کا معاملہ کرنا اور حسن سلوک سے رُک جانا درست نہیں ہے، مسلمان ان کے ساتھ جو بہتر سلوک کریں گے، انہیں بہر حال اس کا اجر مل کر رہے گا:

لَيْسَ عَلَيْكُمْ هٰذَا هُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ، وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَا تُنْفِسْكُمْ، وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا اِيْتِنَآءً وَ جِهَ اللّٰهِ، وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّؤْتِ الْيَتِيْمَ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ۔ (البقرہ: ۲۷۲)
 ان کو راہ ہدایت پر لانا آپ کی ذمہ داری نہیں ہے؛ لیکن اللہ ہی جسے چاہتے ہیں، ہدایت دیتے ہیں، اور جو مال تم خرچ کرو گے، وہ اپنے ہی لئے خرچ کرو گے، نیز اللہ کی خوشنودی ہی کے لئے خرچ کیا کرو، تم جو بھی خرچ کرتے ہو تم کو پورا پورا مل جائے گا اور تمہارے ساتھ ظلم نہیں کیا جائے گا۔

رسول اللہ ﷺ اور آپ کے رفقاء نے عملی طور پر اس کو کر کے دکھایا، مکہ میں شدید قحط پڑا، لوگ مردار وغیرہ کھانے پر مجبور ہو گئے، مشرکین مکہ کا فتح مکہ تک مسلمانوں کے ساتھ جو رویہ تھا، وہ ظاہر ہے، اس کے باوجود آپ ﷺ نے مکہ کے قحط زدہ مشرکین کے لئے پانچ سو دینار بھیجے؛ حالانکہ اس وقت خود مدینہ کے مسلمان مالی قحط اور قحط مستیوں سے دوچار تھے، نیز آپ ﷺ نے یہ رقم سردارانِ قریش ابوسفیان اور صفوان بن امیہ کو بھیجی، جو مسلمانوں کی مخالفت میں پیش پیش تھے اور مشرکین مکہ کی قیادت کر رہے تھے۔ (رد المحتار: ۳۰۲، باب المصرت)

سماجی زندگی میں سب سے اہم مسئلہ امن و امان کا ہے اور امن و امان کا تعلق جان و مال اور عزت و آبرو سے ہے؛ چنانچہ شریعت اسلامی میں غیر مسلموں کی جان و مال اور عزت و آبرو کو وہی اہمیت دی گئی ہے، جو مسلمانوں کی جان و مال اور عزت و آبرو کو دی گئی ہے، اس سلسلہ میں رسول اللہ ﷺ نے یہ اصولی بات ارشاد فرمائی ہے کہ ان کے خون ہمارے خون کی طرح اور ان کے مال ہمارے مال کی طرح ہیں:

وَمَا لَهُمْ كَيْدٌ مَا لَنَا، وَ اَمَّا لَهُمْ كَأَمَّا لَنَا۔ (نصب الرای: ۳۶۹/۳)
 چنانچہ قرآن مجید نے مطلق نفس انسانی کے قتل سے منع کیا ہے، ارشاد ہے:

اور جس شخص کے قتل کو اللہ نے حرام قرار دیا ہے، اس کو ناحق قتل نہ کرو۔

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا۔ (المائدة: ۳۲)

کیوں کہ اگر کوئی شخص ایک بے قصور شخص کو قتل کر سکتا ہے تو وہ انسانیت کے کسی بھی شخص کو قتل و غارت گری کا نشانہ بنا سکتا ہے؛ اس لئے گویا وہ پوری انسانیت کا قاتل ہے، ان آیات میں مسلمان اور غیر مسلم کی کوئی قید نہیں ہے؛ بلکہ مطلقاً کسی بھی انسان کے قتل کو منع فرمایا گیا ہے۔

مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ، وَإِنَّ رِيحَهَا يُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عَامًا. (بخاری عن عبد الله

بن عمرؓ، حدیث نمبر: ۳۱۶۶)

پس اسلامی نقطہ نظر سے یہ بہت اہم موضوع ہے، جس پر یہ سیدنا منتقد ہو رہا ہے، میں اس سلسلہ میں حضرت مولانا اصغر امام مہدی صاحب حفظہ اللہ کی بالغ فطری کوسلام کرتا ہوں اور دعا گو ہوں کہ یہ پروگرام اپنے مقصد میں مفید ثابت ہو اور ہمارے ملک میں یائیدار امن اور اخوت و بھائی چارہ کا ذریعہ بنے۔

اس پروگرام کی اہمیت اور امیر جمعیت سے خصوصی تعلقات کی وجہ سے بڑی خواہش تھی کہ اس میں شرکت ہو اور اہل علم سے استفادہ کا موقع ملے؛ لیکن تقریباً ایک سال پہلے سے ان ہی تاریخوں میں اسلامک فنڈ اکیڈمی انڈیا کا سالانہ سیمینار مقرر ہے، اور اکیڈمی کے ایک خادم ہونے کی حیثیت سے اس میں میری شرکت ضروری ہے؛ اس لئے جمعیت کے اس اہم سیمینار میں شرکت سے محرومی گوارا کرنی پڑی، و دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس سیمینار کو ہر طرح سے کامیاب فرمائے۔ و آخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین۔

(خادم: آل انڈیا مسلم پرسنل لا بورڈ)

۲۰/۱۰/۲۰۲۳ء

MUFTI ABUL QASIM NOMANI

MOHTAMIM (VC) DARUL ULOOM DEOBAND

Pin: 247554, (UP) INDIA

المفتي أبو القاسم النجفاني

رئيس الجامعة الإسلامية دار العلوم ديوبند، الهند

پیغام

۳۵ ویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بعنوان "احترام انسانیت اور مذاہب عالم کی تفصیلات جان کر بے حد خوشی ہوئی۔ یہ حقیقت بے حد اہم اور قابل غور ہے کہ دنیا کے تمام انسان، خواہ وہ کسی بھی جنس، عمر، طبقے، یا پس منظر سے تعلق رکھتے ہوں، قابل عزت اور محترم ہیں۔ اسلام نے انسانی جان، مال، عزت اور عقیدے کی حفاظت کو اولیت دی ہے، اور تمام مذاہب نے بھی ان اصولوں کو تسلیم کیا ہے۔ یہ اسلامی تعلیمات کی ایک عظیم پہچان ہے کہ وہ ہر انسان کے حقوق اور حرمت کی حفاظت کو یقینی بناتا ہے۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کا اس مقصد کے تحت کانفرنس کا انعقاد اس امر کی نشاندہی کرتا ہے کہ ہمارے معاشرے میں ان بنیادی انسانی اصولوں کو فروغ دینے کی ضرورت ہے۔ خصوصاً موجودہ دور میں، جہاں دنیا کو فرقہ واریت، دہشت گردی، ظلم، اور سماجی نا انصافیوں جیسے چیلنجز کا سامنا ہے، ایسی کانفرنسیں انسانیت کے احترام، قومی یکجہتی، اور رواداری کے فروغ میں اہم کردار ادا کر سکتی ہیں۔ یہ بھی خوش آئند ہے کہ اس کانفرنس میں انسانیت کو درپیش اہم مسائل پر روشنی ڈالی جائے گی، جیسے کہ شراب نوشی، منشیات کا استعمال، جہیز، جوا، اور رشوت جیسے سماجی مسائل کا خاتمہ۔ اس کانفرنس سے امید ہے کہ یہ پیغام دور دور تک پہنچے گا۔ ان شاء اللہ ادعا گوہوں کہ یہ کانفرنس دین اسلام کی سربلندی، امن و انسانیت کے فروغ، اور امت مسلمہ کی فلاح کے لیے بے حد مفید اور نتیجہ خیز ثابت ہو۔ آمین!

والسلام
رہبر اسلام ﷺ

(مفتی ابوالقاسم نعمانی)

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۱۵ ربیع الاول ۱۴۴۶ھ مطابق ۱۹ ستمبر ۲۰۲۳ء

nomani1947@gmail.com

+91 97208 19131

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

45

Dr. Saeed al Azami al Nadwi

Chief Editor: "Albaas-el-Islami"

Post Box 93, Nadwatul Ulama

Lucknow, 226007, U.P. (India)



د/ سعید الأعظمی الندوی

رئيس تحرير مجلة "البايس الاسلامي"

ص ب ٩٣ ، ندوة العلماء ، لكناؤ

اُتر پردیش (الہند) ۲۲۶۰۰۷

پیغام

الحمد لله رب العالمين ، والصلاة والسلام على سيد الأتيداء وأمام المرسلين والمنقذين محمد وعلى آله وأصحابه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين أما بعد :
یہ معلوم کر کے خوش ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے (برائے نام) دورہ عظیم الشان تین سو سالہ اہل حدیث کانفرنس ۱۰-۹ نومبر ۲۰۲۳ء بروز ہفتہ و اتوار آخر اہم انسانیت اور مذہب عالم کے موضوع پر رام لیلا کراؤن ڈبلی میں منعقد ہو رہی ہے۔ اس کانفرنس میں ملک و ملک سے باہر کے علماء و دانشور ان شرکت کر رہے ہیں، جو بہت خوش آئند بات ہے، لیکن اللہ تعالیٰ اہل حدیث کا یہ امتیاز دے کہ اس کے تعمیری بنیادوں پر ہمیشہ ملک و ملت کی خدمت کی ہے، جس کے دوران اثرات سے محروم و خواص مستفید ہونے اور اب بھی ۱۲۰۰ ہیں، لیکن امید ہے کہ یہ عالمی کانفرنس بھی اپنے موضوع پر ایسے نتائج و اثرات کے ساتھ اختتام پذیر ہوگی۔

جہاں تک کانفرنس کے موضوع کا تعلق ہے تو وہ آخر اہم انسانیت اور مذہب عالم ہے، انسان اس کا نیک نام ہے، اللہ تعالیٰ نے اس کو محمود و ماکر بنایا ہے، اور نعمت و شرف کا تاج پہنا دیا ہے، اس طرح انسان اشرف المخلوقات ہے قرآن کریم کے سورۃ اسراء میں اللہ تعالیٰ نے انسان کے اشرف المخلوقات ہونے کا تذکرہ اس طرح فرمایا ہے: وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْوِطَنِ وَالْبَحْرِ، وَوَضَعْنَاهُمْ مِنْ الطِّيبَاتِ وَخَلَقْنَا تَفْضِيلًا (الاسراء: ۷۰) اور ہم نے بنی آدم کو عزت دی، اور ہم نے ان کو خوشبو سے سجایا، اور ہم نے ان کو خوش چیزیں عطا کی ہیں اور ہم نے ان کو اپنی بہت سی مخلوقات پر فضیلت دی ہے، اور دوسرے موقع پر ایک انسان کے گل کو چوری انسانیت کے گل کے مترادف قرار دیا گیا ہے: أَلَمْ تَرَ كَيْفَ قَتَلْنَا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّفْسَ جَمِيعًا (المائدہ: ۳۳) (جو کوئی کسی کو کسی جہاں کے عوض سے یا زمین پر فساد کے عوض کے بغیر مار ڈالے تو گویا اس نے سارے آدمیوں کو مار ڈالا)۔ اس طرح قرآن کریم نے انسانیت کے کائنات کو اہمیت دی ہے۔ اور احادیث مبارکہ میں آخر اہم انسانیت کے حوالے سے غلبہ جہاں اللہ کا ایک انسانی مخلوق ہے، جس کی روشنی میں پرچھونے اور بڑے سے مردود و مرد و امیر اور غریب و یتیم یا مساکین پر ایک کے لئے رہنمائیات موجود ہیں۔

انسانیت کے آخر اہم کا عظیم مظہر یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے رسول اکرم ﷺ کے ذریعہ وحدت رب اور وحدت اب کا عظیم اعلان دینا کے سامنے کر دیا، نہ مانہ جاہلیت میں انسان کی پامالی اس طرح ہوتی تھی کہ وہ انسان جن سوساتھ میوہوں کے سامنے بھٹکا تھا، اور ان کو کھارو، مؤثر سمجھتا تھا، چنانچہ رسول اکرم ﷺ نے ایک طرف وحدت رب کا پیغام دیا، جس سے انسانی حیثیاتی ہر کس و ناکس کے سامنے بھٹکنے کے بجائے اللہ رب العزت کے حضور بھٹکنے پر مامور ہوئی، اور دوسری طرف ہے توحید سے بڑھ کر کوئی عزت نہیں، اور شرک سے بڑھ کر کوئی ذلت نہیں، دوسری طرف رسول اللہ ﷺ نے وحدت اب کا پیغام دیا یعنی ہر انسان کا مرتبہ حضرت آدم و حوا ہیں، گویا تمام انسان ایک باپ کی اولاد ہیں، اس طرح رنگ و نسل کے تمام امتیازات و تفرقوں کو مٹا دیا گیا، اور پوری انسانیت ایک جھنڈے کے نیچے جمع کر دیا گیا۔

میں اس سے پہلے متعدد اہل حدیث کانفرنسوں میں شریک ہو چکا ہوں، اور میں نے قریب سے ان کی سرگرمیاں دیکھی ہیں، اور شائع ہونے والے مجلات و جرائد کو بھی دیکھا ہے، ان تمام کوششوں اور کاوشوں پر دل کی کھیرائی سے مبارکبادیں کرتا ہوں اور کانفرنس کی کامیابی کے لئے دعا گو ہوں۔ اللہ قبول فرمائے اور نافع بنائے۔

نوٹ: میں قارئین کی ضروری صحت کی وجہ سے سفر کرنے سے معذور ہوں، بلکہ عزیز گرامی مولانا ڈاکٹر محمد فرمان ندوی (مدیر البیت الاسلامی) امام و خطیب مسجد نبویہ (علیہ السلام) استاد دارالعلوم (نور اس سے پہلے میرے ساتھ اس کانفرنس میں شریک ہو چکے ہیں ان شاء اللہ میری طرف سے کانفرنس کی آخری نشست میں حاضر ہوں گے۔

دعائیں کا طالب
سعید الرحمن ندوی
مفت دارالعلوم ندوۃ العلماء، دہلی

۱۴۴۶ھ / ۲۰۲۴ء
۲۰۲۳ء / ۲۰۲۴ء

عنوان المصنف : مكتبة الفردوس ، مكارم ماہر (بیرونی) لكناؤ (الہند) 0091-522-2741272 mamndnu@gmail.com



Adjunct Prof.
(Islamic Studies)
Jamia Hamdard
New Delhi- 110062



Vice President
Anjuman Taraqqi Urdu (Hind)
Urdu Ghar, DD Marg,
New Delhi-110002



Prof. Emeritus
(Islamic Studies)
Jamia Millia Islamia,
New Delhi- 110025

Prof. Akhtarul Wasay

24-09-2024

پروفیسر اخترالواسع

قائمہ صدارت محترم مولانا احمد علی امام مہدی سلمی حفظہ اللہ

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث، ہند

نئی دہلی

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

یہ جان کر بے حد خوشی ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دو روزہ عظیم الشان ۳۵ ویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس تاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ بروز ہفتہ اتوار بعنوان "احترام انسانیت اور مذاہب عالم" دہلی میں منعقد ہو رہی ہے۔ میں اس کانفرنس کی کامیابی کے لیے بارگاہ ایزدی میں دعا گو ہوں۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ اسلام انسانی عزت و وقار کا خواہاں مذہب ہے اور مجھے خوشی ہے کہ مسلمان اس بات کو بخوبی مانتے رہے ہیں اور اس کا پیغام جاکتا ثبوت یہ ہے کہ آٹھ سو سال کی حکومت کے باوجود اس ملک میں مسلمان سدا سے اقلیت میں رہے ہیں کیوں کہ انھوں نے قرآن کریم کے اس پیغام ربانی کو اپنے لیے حرز جہاں بنا کر رکھا کہ "لا اکراہ فی الدین" (مذہب میں کوئی زورزدہ بردستی نہیں)۔ مجھے یقین ہے کہ آپ کی کانفرنس ملک کے موجودہ حالات میں بہت معنی خیز اور پراثر ہوگی اور اس بات کو دنیا کو بتائے گی کہ اسلام اور مسلمان دہشت و وحشت، عناد و فساد اور ہر طرح کے نفاق کے خلاف ہیں اور ہر طرح کی تفریق سے بالاتر ہو کر انسان کے افضل و اشرف ہونے کے قائل ہیں۔

جیسا کہ آپ نے اپنے خط میں واضح کر دیا ہے کہ آج ضرورت اس بات کی ہے کہ تمام اہل مذاہب اپنے مذہبی معتقدات پر عمل پیرا رہے ہوئے پیغام امن و انسانیت، تحفظ حقوق، رواداری، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس، شراب نوشی و دیگر منکرات، جہیز، جوار، رشوت، جہالت، خوف رخنہ، استحصال، صنفی و سماجی نا برابری وغیرہ کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کے لیے ایک مشترکہ جام حکمت عملی اور منشور کو تیار کر کے انسانی فلاح و صلاح کے لیے کام کریں۔ امید ہے کہ آپ کی کانفرنس اس پیغام کو عام کرنے میں ان شاء اللہ ورک کامیاب ہوگی۔

آپ کی قیادت باسعادت میں جس طرح مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کام کر رہی ہے وہ بلاشبہ ہر طرح کی ستائش کے قابل ہے۔ اللہ تعالیٰ آپ کی صحت و عافیت اور آپ کے ساتھیوں کے تعاون میں اضافہ فرمائے۔ ایک بار پھر میں مجوزہ کانفرنس کی کامیابی کے لیے دعا گو ہوں اور ان شاء اللہ آپ کے حکم کی تعمیل میں ۱۰ نومبر ۲۰۲۳ بروز اتوار ضرور حاضر ہوں گا۔

خلص و نیاز آجی

(اخترالواسع)

H. No. 32, Arun Vihar, Ward 11A, Sector 37, Noida-201303 (Gautam Buddha Nagar, UP)
Mob.: +91 9810541045, Email: wasay27@gmail.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

47

General Secretary: All India Muslim Personal Law Board
Ex. Member: Consultative Group for Empowerment of Minorities,
 Planning Commission of India (11th Plan.)
 A.M.A. Planning Commission of India (12th Plan.)
 Central Waqf Council (Ministry of Minority Affairs)
 Aligarh Muslim University (A.M.U.) Court
Member: Executive Council, Nadwatul Ulama, Lucknow
Chairman: Maulana Abdur Rahim Educational Trust
 Strive for Eminence & Empowerment
 Crescent Academy for Civil Services Exams
 Foundation for Civil Liberties
 Al-Hidaya Islamic Studies & Research Centre
 Imam Rabbani Public School (Series)

محمد فضل الرحیم مجددی
MOHAMMED FAZLURRAHIM MUJADDIDI
Rector : JAMEA-TUL-HIDAYA, JAIPUR

Postal Address: 4650, Imam Rabbani Public School
 Hidayat Bagh, Char Darwaza,
 Subhash Chowk, Jaipur-302002 (Rajasthan)
WhatsApp: (+91) 9887868814
E-mail: mfaizurrahim@yahoo.com

Ref. No. _____

Dated _____

پیغام

نحمدہ نصلی علی رسولہ الکریم۔ اما بعد!
 یقیناً یہ جان کر انتہائی خوش ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند آپ کی سرکردگی میں اپنا دوروزہ ہینتیسویں اہل حدیث کانفرنس
 بعنوان ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ منعقد کر رہی ہے۔

اس وقت ایک طرف ضرورت ہے کہ بین المذاہب پروگرام کے ذریعہ انسانیت کے احترام کا درس دیا جائے اسی کے ساتھ دوسری
 طرف یہ بھی ضروری ہے کہ اتحاد امت پر توجہ دی جائے اور ملک ہندوستان کے منظر نامہ میں تیزی کے ساتھ جو تبدیلی آ رہی ہے اس کے تناظر
 میں ضروری ہے کہ اتحاد ملت کے پیغام کو عام کیا جائے اور ساتھ ہی ہمارے مسلم معاشرہ میں تعلیمی فقدان پر بھی غور کرنے کی شدید ضرورت ہے
 اور مسلمانوں کے اندر تعلیمی تہذیب اور خاص طور پر اردو کے بڑھتے معاملے کے پیش نظر گاؤں گاؤں میں بنیادی دینی تعلیم کے نظام کو منظم کرنے
 کی ضرورت کے ساتھ مسلمانوں کے اندر تعلیمی بیداری لانے کی طرف بھی ہمیں توجہ کرنے کی ضرورت ہے۔

ہمیں امید ہے کہ یہ کانفرنس اپنے موضوع و مشتملات کے لحاظ سے سنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام
 امن و انسانیت، تحفظ حقوق، رواداری، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس اور سماجی برائیوں کے ازالہ میں اہم کردار ادا
 کرے گی۔ اور ہندوستان جیسے ملک میں تعلیمی میدان کے اندر مسلمانوں کی گرتی ساکھ کو بچانے اور مسلمانوں کو بنیادی تعلیم سے لیکر اعلیٰ تعلیم کی
 طرف متوجہ کرنے میں بھی کامیاب ہوگی۔ انشاء اللہ

اللہ رب العزت سے دعا ہے کہ وہ اس کانفرنس کو کامیاب کرے اور ہم سب کی خدمات کو قبول فرمائے۔ آمین
 ربنا تقبل منا اللہ انت السميع العليم

والسلام
محمد فضل الرحیم مجددی
 امیر جامعۃ الہدایہ جے پور
 جنرل سکرٹری آل انڈیا مسلم پرسنل لا بورڈ

۱۳ ربیع الثانی ۱۴۴۶ھ
 ۱۸ اکتوبر ۲۰۲۳ء

بخدمت گرامی:

فضیلۃ الشیخ اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب
 امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند و نائب صدر آل انڈیا مسلم پرسنل لا بورڈ

JAMEA TUL HIDAYA: Ramgarh Road, Near Manpur Sadwa, P.O. Lalwas, Jaipur - 302027 (Rajasthan)
 E-mail: jameatulhidaya@gmail.com | Web: www.jameatulhidaya.org



ڈاکٹر مفتی محمد مکرم احمد

DR. MUFTI M. MUKARRAM AHMED

SHAHI IMAM

Ph D

SHAHI MASJID FATEHPURI, Ch. Chowk, Delhi-6 (India)

Telephone : 23918322. E-mail : info@masjidfatehpuri.in

بسم اللہ الرحمن الرحیم

”احترامِ انسانیت“

زندگی میں رشتے بہت سے ہوتے ہیں ان میں سے بڑا اور سب سے بغیر رشتہ انسانیت کا ہوتا ہے۔
اللہ تعالیٰ نے انسان کو اشرف المخلوقات بنایا تو اس کو اشرف الاخلاق بھی ہونا چاہیے
انسان کا رشتہ ہر انسان کے ساتھ محبت، ہمدردی، انصاف اور رواداری کا ہونا چاہیے
تیسری وہ انسان کے لئے کا حق دار ہوگا۔

پیغمبر اسلام صلی اللہ علیہ وسلم محسنِ انسانیت بن کر شرفِ لائے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی تمام زندگی
اعلیٰ انسانی اقدار کا نمونہ ہے۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی شفقت، محبت اور حسن سلوک کے ساتھ ملے تھے
سب کی مدد فرماتے تھے بلا تفریق سماج کے ہر طبقہ کا پورا پورا خیال فرماتے تھے۔ قرآن کو لے کر
اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے (مفہوم) ”پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم“ بے شک آپ اخلاق کے عظیم
اور اعلیٰ مرتبہ پر مائیں ہیں۔ یقیناً آپ کی سیرت طیبہ جو نوعِ انسانی کے لئے مکمل نمونہ ہے۔
آج کچھ لوگ ایسے میاں مائیں فائدہ کے لئے مذہبِ اسلام اور مسلمانوں کو بدنام کر رہے ہیں، اللہ تعالیٰ
انہیں ہدایت عطا فرمائے اور ملتِ اسلامیہ کو بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی سچی پیروی کی
توفیق عطا فرمائے۔ آمین۔

بڑے انصاف کی بات ہے کہ آج انسانیت کا احترام ناپید ہوتا جا رہا ہے، خود غرضی، مادیت
اور سیاسی معاملات نے سارا ماحول خراب کر رکھا ہے۔ انسانیت کا احترام ہر حال
میں ہونا چاہیے یہی کامیابی کا راستہ ہے۔

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

بندہ ناچیز
محمد مکرم احمد
۱۰ ربیع الثانی ۱۴۴۵ھ
۱۳ اکتوبر ۲۰۲۴ء





ALL INDIA MUSLIM MAJLIS-E- MUSHAWARAT

(UMBRELLA BODY OF INDIAN MUSLIM ORGANISATIONS AND EMINENT PERSONALITIES)

آل انڈیا مسلم مجلس مشاورت

ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिसे मुशावरत

22 اکتوبر 2024

حضرت مولانا حفیظ الرحمن صاحب دامت برکاتہم العالی

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

اسلام آباد، پاکستان

مکرمی

گرامی نامہ موصول ہوا۔ یادآوری کا بیحد و حساب شکریہ

یہ جان کر خوش ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی عظیم الشان ہینٹیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس تاریخ 9-10 نومبر 2024ء مطابق 6-7 جمادی الاولیٰ 1446ھ کو منعقد ہو رہی ہے جس کا موضوع "احترام انسانیت اور مذہب عالم" ہے۔ دہلی کے تاریخی رام ایلا میڈان میں منعقد کی جانے والی اس کانفرنس کی کامیابی کے لیے ہم ہمہ گیر قلب سے دعا کرتے ہیں اور اس میں شریک ہونے والے ہر ایک کے شایر اور دانشور ان کی خدمت میں سلام و تحیت پیش ہے۔ توقع ہے کہ ملک و ملت اور بنی انسان کو درپیش مسائل و مشکلات پر ان کے خطابات و مقالات اور اس موقع پر شائع کیے جانے والے رسائل و جرائد کو لوگوں کے لیے ایمان افروز ہوں گے۔

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند قرآن و حدیث اور اسلامی عقائد کی ترویج و اشاعت کی ایک بڑی و قیہ تاریخ رکھتی ہے اور یہ بدصبر میں متحج صنف کی ایک بڑی معتبر اور مرکزی آواز ہے۔ اس نے اہل حدیث کے عقائد و نظریات کی صحیح تفہیم اور اسلامی تعلیمات کی روشنی میں لوگوں کی رہنمائی کا فریضہ بیحد مضبوطی سے انجام دیا۔ اپنی دینی اور ملی سرگرمیوں کے ذریعے مسلمانوں میں دینی شعور و آگاہی کو بڑھایا۔ مسلمانوں کے اجتماعی مسائل پر توجہ دی اور ان کے حل کے لئے کام کیا۔ مختلف مذاہب کے مابین احترام و ہم آہنگی کو فروغ دیا تاکہ معاشرتی امن و سکون قائم رہے۔

جمعیت کے زیر نگرانی کام کرنے والے تنظیمی ادارے، ہر سال منعقد کیے جانے والے اجتماعات اور کانفرنس، اس کے عظیم منصوبے، اپنی جوں اور ضرورت مندوں کی امداد کے پروگرام اور اس کی شائع کردہ کتب و رسائل افادیت اور معیار میں اپنی مثال آپ ہوتے ہیں۔ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ملک کے اہل حدیث مدارس کی جوڈائیزیکیشن شائع کی ہے، ملک کی کوئی اور دینی جماعت اس کی کوئی نظیر نہیں رکھتی۔

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے اسلامی تعلیمات کے فروغ اور مسلمانوں کی فلاح و بہبود کے لئے جو خدمات انجام دی ہیں، وہ قابل ستائش ہیں۔ اس کی کوششیں نہ صرف اہل حدیث حضرات کے لئے بلکہ تمام مسلمانوں کے لئے ایک مثالی نمونہ قرار کرتی ہیں۔ جس کا مقصد علم، امن، اور محبت کی بنیاد پر معاشرتی ہم آہنگی کو فروغ دینا ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس بھی اس راہ میں ایک سنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام امن و انسانیت، حقوق و حقوق اور فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و دہشت، بے جا نفرت اور غرضی اور سماجی برائیوں کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کی راہ میں اہم کردار ادا کرے گی۔

تماری دعا ہے کہ آپ کے اس کانفرنس کو ملک و ملت کے لیے مفید بنائے اور آپ کی خدمات طویلہ کو قبول فرمائے۔ آمین

آپ کا

اکتوبر 2024

نویسہ

سابق صدر، آل انڈیا مسلم مجلس مشاورت

D-250, Abul Fazal Enclave Part-1, Jamia Nagar, New Delhi-110025 ● Tel.: 011-26946780, 26941341, Mob.: +91-9811643929
E-mail : almmmm.delhi@gmail.com | Website : www.mushawarat.org

Maulana Zahid Raza Rizvi

Ex Chairman

- Madarsa Board Uttarakhand
- State Haj Committee, Uttarakhand
- Ameer-E-Shariat, Uttarakhand
- President Uttarakhand Ulama Council
- Founder Madarsa Jamiatul Hasnaat



مولانا زاہد رضا رضوی

- امیر شریعت، اتر اکھنڈ
- سابق چیرمین مدرسہ تعلیمی یورڈ، اتر اکھنڈ
- سابق چیرمین اسٹیٹ حج کمیٹی، اتر اکھنڈ
- سربراہ اعلیٰ مدرسہ جامعہ اکنسات، رورپور

گرامی قدر حضرت مولانا حافظ علی امام مہدی سلفی صاحب / مدظلہ العالی

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید کہ مزاج عالی بخیر ہوں گے۔

یہ جان کر بے حد مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی سب سے قدیم دینی و اصلاحی، تعلیمی و تربیتی اور سماجی ورفائی تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دورہ عظیم الشان ہینٹیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بتاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء مطابق ۶-۷ جمادی الاولیٰ ۱۴۴۶ھ بروز ہفتہ والتوار بعنوان: "احترام انسانیت اور مذاہب عالم" نہایت تزک و احتشام کے ساتھ دہلی کے رام لیا امیدان میں منعقد ہو رہی ہے، جس میں ملک و بیرون ملک کے مشاہیر علمائے کرام و دانشوران ملک و ملت اور اہم مذہبی و سماجی شخصیات شریک ہوں گی، جو ملک و ملت اور انسانیت کو درپیش اہم مسائل و مشکلات کے تناظر میں مذکورہ مرکزی موضوع کے مختلف پہلوؤں پر چرچہ کشا، پسیر آئینہ، ایمان افروز خطابات، تقاریر، مقالات اور منظوم کلام پیش کریں گی، نیز یہ کہ اس کانفرنس کے موقع پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند سے اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں کثیر تعداد میں شائع ہونے والے جرائد و رسائل کے خصوصی نمبرات کا اجرا بھی عمل میں آئے گا۔ اس اہم کانفرنس میں شرکت کی دعوت کے لیے ہم معین قلب سے آپ کے مشکور ہیں اور کانفرنس کی کامیابی کے متمنی اور دعا گو۔

آج ملکی و عالمی سطح پر جو بے چینی، اضطراب، بے اعتمادی، حسد و کینہ، کھٹکش، خوٹنیں تصادم اور جس کی انھی اس کی ہمیش کی صورت حال پیدا ہو رہی ہے۔ اس کی بڑی وجہ ان اعلیٰ قدروں سے ناواقفیت یا ان کی دانستہ و نادانستہ پامالی ہے، جو تمام مذاہب عالم میں مسلمات کی حیثیت رکھتے ہیں اور بطور خاص جن کا علمبردار اور نقیب مذہب اسلام ہے۔ مقام شکر ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ان مسلمہ اقدار و تعلیمات کو فروغ دینے کے لیے ہمیشہ مساعی صرف کی ہے اور اپنی تمام تر سرگرمیوں اور خدمات اور ہر آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس، قومی سیمینار اور سیمینار کا مرکز و محور انہیں اقدار و تعلیمات کے فروغ و تحفظ کو بنایا ہے اور اسمن و شائقی کے قیام، انسانیت کی تعمیر، اخوت کا فروغ، رواداری اور قومی یکجہتی کے استحکام، حقوق نسواں و اطفال کے تحفظ، محروم طبقات کی فلاح و بہبود، و ہشت گردی کی سخت سزا اور سماجی برائیوں کے خاتمے کی نہ صرف بات کی ہے، بلکہ ان کی ناسوروں کو مٹانے کے لیے بھی پہل کی ہے۔ اور یہ ہینٹیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بھی اسی مبارک سلسلہ کی اہم کڑی ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس بھی دیگر کانفرنسوں کی طرح اپنے موضوع و شمولات اور زمان و مکان کے لحاظ سے سنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام امن و انسانیت، تحفظ حقوق، رواداری، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس، تشدد، و ہشت گردی، شراب نوشی و دیگر منکرات، جہیز، جوا، رشوت، جہالت، خود غرضی، استحصا، صنفی و سماجی نابرابری وغیرہ کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کے لیے اہم کردار ادا کرے گی، ان شاء اللہ۔

میری دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کانفرنس کو ہر اعتبار سے ملک و ملت اور انسانیت کے لیے مفید بنائے، اس کے اچھے اثرات ظاہر ہوں اور آپ کی تمام قومی، ملی اور انسانی خدمات کو قبول فرمائے، آمین۔

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

مخلص
زاہد رضا رضوی

صدر علماء کونسل اتر اکھنڈ

"आम्ही रोटी खाईये, बच्चों को पढाईये"

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

51



اما بعد

الحمد لله وحده والصلوة والسلام على من لا نبی بعده

اسلام ایک آفاقی مذہب ہے جس میں ہر عام و خاص کو داخل کی اجازت ملتی ہے، اور یہ آفاقیت اسلام کا ایک خاص امتیازی وصف ہے، مذہب اسلام میں نہ علاقہ کا حصار ہے اور نہ سلطنت کی تحدید، نہ قومیت کی دبا ہے نہ نسل پرستی کا مرض، دراصل مذہب اسلام اپنی ذات میں بے پناہ وسعت رکھتا ہے، اس لئے حرام انسانوں کو احترام انسانیت کی تلقین و ترغیب دیتا ہے، اسی وجہ سے دین اسلام، دین رحمت قرار پایا لیکن ملکی و قومی اناری، غیر فطری سماجی تقسیم اس پر مستزاد اسلام مخالف طبقات کی تحریشی ریشہ دوانیاں، اخلاقی، معاشرتی اور سیاسی استحصال یہ ایسے اسباب ہیں جن سے انسانیت کی حقیر و تذلیل ہوتی ہے اور صحیح معنوں میں اسلام مجروح ہوتا ہے، اس لئے ہر دور اور ہر زمانہ میں صحیح اسلامی فکر کے حامل داعیان اسلام و بزرگان دین نے ان تمام غیر اسلامی اور غیر فطری امور کی منہج کئی کی محمود کو ششیں کی ہیں اور اسلام کی صحیح اور سچی تصویر پیش کر کے انسانیت کے وقار کو بحال کیا ہے۔

مرکزی جمعیت تہذیبی و علمی ہند کی جانب سے منعقدہ بین الاقوامی کانفرنس کا بیانیہ موضوع بھی ”احترام انسانیت“ ہے اور اسی موضوع کے تعلق سے اس کی جانب سے اس موقع پر متعدد رسائل و جرائد کی اشاعت اور پھر ان رسائل و مجلات کا اجراء کیا جا رہا ہے، صحیح دینی اصولوں کی پاسداری اگر کی جائے تو یہ مقصد اقام ہے اور دعوت دین و اشاعت اسلام کی ایک بہتر صورت سامنے آنے کی امید ہے جس سے تعمیر ملک و ملت کی نمایاں خدمات انجام پا سکتی ہیں۔

اللہ تعالیٰ ہم سب کو اپنے اکابر و اسلاف کے دینی و علمی افکار کو اپنانے اور ان کو مشعل راہ بنا کر اشاعت دین و احترام انسانیت کی مفالہ خدمت کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین

محمد صالح

سیکرٹری مدرسہ مظاہر علوم سہارنپور

بندہ محمد صالح الحسنی

۱۱ ربیع الثانی ۱۴۴۶ھ / ۱۵ اکتوبر ۲۰۲۳ء

دارل موسننہفین شبلہ اکیڈمی



دار لمصنّفین شبلہ اکیڈمی

DARUL MUSANNEFIN SHIBLI ACADEMY

P.O. Box 19, Shibli Road, Azamgarh 276001 (U.P.) India Tel: +91-5462-265017, 265080
Email: info@shibliacademy.org Website www.shibliacademy.org

بسم الله الرحمن الرحيم

۲۰۲۳ اکتوبر

پینتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند مسلمانان ہند کی ایک اہم تنظیم ہے جس نے ماضی اور حاضر میں بڑی خدمات انجام دی ہیں۔ مجھے یہ جان کر خوشی ہے کہ جمعیت اپنی آل انڈیا کانفرنس اگلے ۹-۱۰ نومبر کو دہلی میں منعقد کر رہی ہے جس میں ملک بھر سے اہم علماء اور شخصیات کی شرکت ہوگی اور ملک و ملت و انسانیت کو درپیش اہم مسائل پر سیر حاصل کنگلو ہوگی۔

مجھے امید ہے کہ یہ کانفرنس اہم ملی و ملکی مسائل پر کنگلو کے ساتھ ساتھ ہمارے سماج میں پھیلی ہوئی بہت سی برائیوں، کمیوں اور جہالتوں کے بارے میں بھی آواز بلند کرے گی اور ان کے سدباب کے لئے فعال طریقوں کی نشاندہی کرے گی۔ اس کانفرنس کی کامیابی کے لئے میری پر خلوص اور نیک خواہشات قبول فرمائیں۔

والسلام

حفیظ حفیظ

ڈاکٹر حفیظ الاسلام خان
ناظم دارالمصنّفین، اعظم گڑھ

بخدمت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی حفظہ اللہ تعالیٰ
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث

Ref. No.

Date:

پیغام

مکرمی الاحقرم حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی مصلیٰ صاحب حفظہ اللہ تعالیٰ

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

حراج عالی!

مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام پینتیسویں دوروزہ عظیم الشان آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بعنوان ”احترام انسانیت اور مذہب عالم“ بتاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء بروز منیچر واتوار بمقام رام لیلہ میدان، نئی دہلی کا دعوت نامہ موصول ہوا۔ جس کے لیے میں آپ کا مصیم قلب سے ممنون و مشکور ہوں۔ حسب روایت و معمول اس موقر اجلاس میں حاضری کا شرف حاصل کروں گا۔ ان شاء اللہ

بلاشبک وشبہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کی دیگر آل انڈیا کانفرنسوں کی طرح اس کانفرنس کے ذیلی عنوانات بھی بڑے اہم اور عصری تقاضے کے عین مطابق ہیں اور مجھے یقین کامل ہے کہ ان متنوع موضوعات سے اسلام، اسلامی تعلیمات و احکام اور مقاصد شریعت پر مستشرقین یورپ اور ملک کے مخصوص طبقہ کی جانب سے اٹھائے گئے شکوک وشبہات اور بے بنیاد دعوے اساس اعتراضات و اثرات کا یقیناً دفع و ازالہ ہوگا اور اسلام اور سلف صالحین کی شاندار مذہبی رواداری، وسطیت و میان روی، معروضیت اور مثبت سوچ و روش دنیا کے سامنے آئے گی اور ان کی لاعلمی و نادانیت کی بنیاد پر پیدا شدہ غلط فہمیاں و بدگمانیاں بھی دور ہوں گی۔ مزید برآں میری محدود معلومات کے مطابق مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند فکر و فی الحالی اور منہج حضرت شہیدین پر قائم جماعت و جمعیت ہے، جو اپنے قیام و تاسیس کے روز اول سے قرآن و حدیث کی خالص تعلیمات اور صحیح عقائد و نظریات بالخصوص عقیدہ توحید کے علم بردار رہی ہے، جس کا جہاں ایک طرف تحریک آزادی اور حریت و استخلاص وطن میں نمایاں حصہ رہا ہے، وہاں دوسری طرف انسانی اقدار و روایات کے فروغ و ارتقاء میں اہم کردار رہا ہے، جس کی موجودہ محافظ و پاسبان اور قائد و رہنما آپ کی معتدل و متوازن شخصیت ہے، جو جماعتی و گروہی حد بند یوں اور انتہا پسندیوں سے بہت بلند و بالا اور اعتدال و توازن کی علامت و استعارہ کی حیثیت رکھتی ہے اور ملی و قومی مفادات اور اجتماعیت کی خاطر جماعتی تہمیدوں کو سن لیتی ہے لیکن الحمد للہ ملت کو بے آبرو اور رسوا ہونے سے بچا لیتی ہے۔

آخر میں اس باوقار کانفرنس کے انعقاد پر آپ اور آپ کے رفقاء کا رکو دلی مبارکباد دیتا ہوں اور امید رکھتا ہوں کہ اس کانفرنس کا مثبت اور اہم پیغام دور دور تک پہنچے گا اور انسانوں کی سوچ و فکر میں تبدیلی لانے کا باعث ہوگا۔ والسلام

انور الحقی الاسلام
عطاء الرحمن قاسمی

چیرمین شاہ ولی اللہ انسٹی ٹیوٹ نئی دہلی

حفظه الله

فضيلة الشيخ أصغر علي إمام مهدي السلفي

أمير جمعية أهل الحديث المركزية لعموم الهند

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته، وبعد:

فأسأل الله لفضيلتكم العون ودوام التوفيق، وبطيب لي أن أتقدم إلى فضيلتكم وإلى كافة منسوبي جمعية أهل الحديث المركزية لعموم الهند بخالص الشكر والتقدير على دعوتكم الكريمة للمشاركة في المؤتمر العالمي المزمع عقده في مدينة نيودلهي ياهند تحت عنوان: "دور الأديان العالمية في صيانة كرامة الإنسانية"؛ إذ تأتي هذه الدعوة في إطار جهد مشكور يهدف إلى إعلاء قيمة من أسمى القيم التي أجمعت عليها الأديان والشعوب، وهي كرامة الإنسان.

ولا يخفى أن موضوع كرامة الإنسان يأتي في وقت خرج تتزايد فيه التحديات التي تواجه المجتمعات الإنسانية، بما في ذلك التمييز العنصري، وانتهاكات حقوق الإنسان، وهنا يظهر دور الأديان العالمية التي لم توجد لتكون مصدراً للقيم الروحية فحسب، بل كانت دائماً ركيزة أخلاقية أساسية في وضع معايير السلوك الإنساني القويم، في الدعوة إلى احترام حقوق الإنسان وصيانة كرامته.

إن كرامة الإنسان، كما عرفت الشرائع السماوية والقوانين الوضعية، هي القيمة الجوهرية التي تمنح الإنسان حق الاحترام والتقدير لجرده كونه إنساناً، بغض النظر عن عرقه أو لونه أو دينه أو جنسه. وقد جاءت الأديان كافة لترسخ هذا المفهوم العظيم، مؤكدة على أن صون كرامة الإنسان أساس بناء المجتمعات المتحضرة، وشرط من شروط العدالة والمساواة. وهنا أسلط الضوء على ديني الإسلام، الذي شدد على تكريم بني آدم، وصان له هذه الكرامة من جميع الجوانب من أن تُمن أو تُخذش، حيث أخبرنا الله سبحانه وتعالى في كتابه الكريم عن هذا التكريم لابن آدم، قال تعالى: "وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ" [الإسراء: 70]، فكرامة ابن آدم أمر واقع لا جدال فيه، ثم جعل التفاضل بين الناس قائماً على التقوى والعمل الصالح، لا على أي معيار آخر من معايير الدنيا.

وقد أكد الإسلام بشكل خاص على المساواة بين البشر، ورفض كافة أشكال التفرقة، إذ قال النبي صلى الله عليه وسلم: "لا فضل لعربي على عجمي، ولا لأحمر على أسود، إلا بالتقوى". إن هذا التوجيه النبوي يوضح بجلاء كيف أن الإسلام يرفض التمييز العنصري بكافة أشكاله وأوجهه، ويؤكد على أن كرامة الإنسان ليست مقتصرة على فئة أو شعب، بل هي حق لكل إنسان على وجه الأرض.

وفي ضوء هذه المبادئ الراسخة، يأتي انعقاد هذا المؤتمر ليكون منصة مهمة لإعادة التأكيد على القيم الإنسانية المشتركة بين الأديان، ومناقشة السبل العملية التي يمكن من خلالها للأديان أن تساهم في مواجهة التحديات الإنسانية المعاصرة. إن الحوار بين العلماء والمفكرين من مختلف الأديان يشكل فرصة ثمينة لصياغة رؤى جديدة تعمل على تعزيز السلام العالمي، وتحقيق العدالة الاجتماعية، وضمان حياة كريمة لكل إنسان.

ختامًا، أجدد شكري وتقديري لفضيلة أمير جمعية أهل الحديث المركزية على الجهود المتميزة للجمعية في تنظيم هذا المؤتمر الملهم، وأدعو الله أن يبارك في أعماله، ويجعل هذا المؤتمر نقطة مضيئة في مسيرة تعزيز كرامة الإنسان وحياته. والسلام عليكم ورحمة الله وبركاته،،

رئيس جامعة الإمام ابن تيمية

د. عبد الله بن محمد السلفي

Tasmia

All India Educational And Social Welfare Society



1, Inder Road, Dehra Dun - 248001 (Uttarakhand) Ph.: 0135 -2982845

باسمہ تعالیٰ شادہ

بتاریخ: ۱۷ اکتوبر ۲۰۲۲ء

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

جناب حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

آپ نے مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام بعنوان "احترام انسانیت اور مذاہب عالم" پر منعقد ہونے والی کانفرنس میں شائع ہونے والے سو وینیر کے لئے پیغام لکھنے کا حکم دیا جس کی تعمیل میں یہ مختصر پیغام تحریر نمند مت ہے۔

پیغام

میں مبارکباد دیتا ہوں کہ "احترام انسانیت اور مذاہب عالم" کے عنوان سے ایک عظیم کانفرنس مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند مورخہ: ۱۰ نومبر ۲۰۲۲ء میں منعقد کر رہی ہے۔

انسانیت انسان کے لئے پہلا پیغام ہے۔ بلا تفریق مذہب و ملت ہر انسان کی جان و مال، عزت و آبرو اور بنیادی انسانی حقوق کو تحفظ فراہم ہونا چاہئے۔ ہر انسان کو ایک دوسرے کا احترام کرنے اور باہمی تعلقات کو خوش گوار بنانے پر زور دینا چاہئے۔ انسان اشرف المخلوقات ہے اس کا احترام و اکرام کرنا چاہئے، جیسا کہ ایک بار غیر مسلم کا جنازہ گزر رہا تھا، سرکار دو عالم ﷺ کا جنازہ دیکھ کر کھڑے ہو گئے صحابہ کرامؓ نے عرض کیا کہ یہ تو یہودی کا جنازہ ہے، آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ موت ایک خوف ناک چیز ہے، پس تم جنازہ دیکھ کر کھڑے ہو جایا کرو۔

آج انسان چاند پر پہنچ گیا لیکن زندگی دنیا کے علاوہ کہیں اور نہیں ہے لہذا ہمیں اس کی قدر کرنی چاہئے اور امن پیدا کرنے کی پوری کوشش کرنی چاہئے۔

والسلام

بہر حال آخر میں ایک بار پھر میں آپ کو مبارکباد دیتا ہوں۔

دعاؤں کا طالب

ڈاکٹر فارق

بخدمت حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

Head Office : 321-D, Okhla Village, New Delhi - 110025

Website : www.tasmia.in

E-mail : dr.sfarooq.him@gmail.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

57

حضرت مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب حفظہ اللہ

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ

امید کہ ان حضرت خیریت سے ہوں گے

دہلی کے تاریخی رام لیلا میدان میں 910/نومبر 2024ء کو مرکزی جمعیت اہلحدیث حدیث ہند کے زیر اہتمام بینتیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بعنوان "احترام انسانیت اور مذاہب" کا دعوت نامہ موصول ہوا جس کے لیے میں دل کی گہرائیوں سے شکر گزار ہوں میری دعا ہے کہ یہ کانفرنس ہر طرح سے کامیابیوں سے ہمکنار ہو اور اس کا پیغام انسانیت ہر فرد بشر تک پہنچے مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند، اس کے ذمہ داران و کارکنان خصوصاً آپ دلی مبارکباد کے مستحق ہیں جو نفرت، عداوت، تشدد، عدم برداشت، نابرابری، ظلم، استحصال، قانون شکنی، جان و مال کی ارزانی اور مسلمہ اقدار و اخلاق کی پامالی اور دین بیزاری کے ماحول میں احترام انسانیت، بھائی چارہ، محبت و یگانگت، رواداری، خیر سگالی اور فرقہ وارانہ ہم آہنگی کا پیغام عام کرنے کے لیے قومی راجدھانی میں آل انڈیا کانفرنس منعقد کر رہی ہے۔ یقیناً مذہبی اور مسلکی سطح سے اٹھ کر ایک قومی اور انسانی خدمت ہے جس میں بحیثیت انسان، مسلمان اور ذمہ دار شہری شامل ہونا ہمارے لیے اعزاز کی بات ہے۔ بلاشبہ کانفرنس کا موضوع وقت کی ضرورت اور آواز ہے اور ہمارے علماء، مشائخ، بزرگوں، پیروں، ولیوں، دھرم گروؤں اور فقیروں نے مساجد، مدارس، خانقاہوں، درگاہوں، تکیوں اور زاویوں سے ہمیشہ اسی پیام احترام انسانیت اور امن و اخوت کو پھیلانے اور عام کرنے کی مبارک اور کامیاب کوشش کی ہیں اور ملک میں گنگا جمنی تہذیب و تمدن کی خوش نما روایت کو اپنے خون جگر سے پروان چڑھایا ہے۔ آج اسی پیام احترام انسانیت کو عام کرنے کی اشد ضرورت ہے۔

اس حوالے سے سووینیر کے لیے ایک مضمون پیش خدمت ہے۔

ایک بار پھر کانفرنس کے انعقاد کے لیے دلی مبارکباد اور نیک تمنائیں۔

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

خواجہ صوفی سید اجمل نظامی

سجادہ نشین

درگاہ حضرت نظام الدین اولیاء

بستی حضرت نظام الدین





HEMANT SOREN
CHIEF MINISTER



MESSAGE

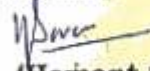
It is with great pleasure and honor that I extend my warm greetings to all participants of the Conference being organized under the aegis of Markazi Jamiat Ahle-Hadees Hind. The theme, "World Religions and Respect for Humanity," could not be more timely and relevant in the world we live in today.

Our world is rich in its diversity of cultures, faiths, and traditions. This conference, with the participation of renowned religious scholars, noted speakers, social scientists, eminent academicians, and distinguished guests from both India and abroad, offers a unique platform to discuss the values that bind humanity across all religions. Such gatherings are a powerful reminder of the universal truths that lie at the core of every faith—love, compassion, tolerance, and the dignity of human life.

India, known for its pluralism, is a land where multiple religions have coexisted for centuries in harmony and respect. It is through dialogue and mutual understanding that we continue to strengthen this heritage. Today, more than ever, it is essential to uphold and promote these values in every corner of the globe. Respect for humanity, irrespective of caste, creed, or color, is the cornerstone of a peaceful and prosperous society.

I commend the organizers for their efforts in fostering such meaningful discussions. Let us use this opportunity to deepen our understanding of one another, reflect on our commonalities, and work together towards building a world where respect for humanity reigns supreme.

I wish all the participants success in their deliberations and hope that this conference will inspire constructive dialogue and enduring unity.


(Hemant Soren)

Kanke Road, Ranchi - 834 008 (Jharkhand)
Tel.: 0651-2280886, 2280996, 2400233 Fax: 0651-2280717, 2400232
E-mail: chiefminister.jharkhand19@gmail.com



**Lalduhoma
Chief Minister
Mizoram**



Off : (0389) 2342150/2322517
Fax : (0389) 2342245/(R)2342425
E-mail : cm@mizoram.gov.in
cmmizoram@hotmail.com



MESSAGE

It is with great admiration and respect that I extend my heartfelt greetings to all the participants of the esteemed 35th All India Ahle Hadees Conference on the topic of "World Religions and Respect for Humanity," organized by Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind. It is a profound opportunity to promote the shared values that bind us as human beings—peace and tranquility, understanding, universal brotherhood and respect for diversity.

In a world often marked by division, the unifying wisdom of world religions can serve as a guiding light, reminding us that humanity is our common bond. By fostering dialogue and building bridges across faiths and cultures, we not only enrich our own lives but also contribute to a more peaceful and just society.

May this conference inspire us to recognize the beauty in our differences and encourage us to work together for the greater good of all. I commend the efforts of Markazi Jamiat in organizing such an important event, and I am confident that the insights shared here will leave a lasting impact on promoting unity and respect for humanity.

Wishing you a successful and enlightening conference.

With regards,

**Dated Aizawl,
the 24th September, 2024**


(LALDUHOMA)



सत्यमेव जयते

Dated: 24-10-2024

گراں قدر حضرت مولانا صفی علی رام مہدی مفتی صاحب / مدظلہ العالی
ہیر مرگزی جمعیت اہل حدیث دہ
اسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
امید کہ حوزہ اعلیٰ بخیر ہوں گے۔

واللہ ماوصل ہوا۔ یہ جان کر بڑی مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی سب سے قدیم تاریخی و صحافتی تنظیم، اعلیٰ تعلیمی اور سماجی و سیاسی تنظیم مہتمم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام ہندوستان ہندوستان میں مقیم مسلمانوں کی اہل خانہ اہل حدیث کانفرنس منعقد 10-9 نومبر 2024ء مطابق 6-7 جمادی الاول 1446ھ بروز ہفتہ و اتوار بمقام: احقرام فائیت اہل ہند، جامعہ عالم ہدایت، ترکہ احقرام کے ساتھ ہوئی کہ ہم اہل اسلامین میں منعقد ہو رہی ہے جس میں ملک و بیرون ملک کے شیعہ علماء و کرام، اہل تشویش ملک اہل بیت اور ائمہ دینی و اعلیٰ مقامات شریک ہوئے۔ ملک و ملت اہل فائیت ہند کو خوش نام مسائل و مشکلات کے تناظر میں مذکورہ کنوینشن کو موضوع کے مختلف پہلوؤں پر اہتمام فرماتے ہوئے اہل ایمان اور فاضلہات، فقہاء، مقتدا اور مظلوم کام پیش کریں گے نیز یہ کہ اس کانفرنس کے موقع پر مہتمم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے اردو ہندی اور انگریزی زبانوں میں شیعہ قیود میں شائع ہونے والے جرائد اور رسائل کے خصوصی ضرورت کارہ بھی عمل میں آئے گا۔

اس نام کا غرض میں شرکت کی دعوت کے لیے ہم عظیم قلب آپ کے متعلق ہیں اور کاغذ غرض کی کامیابی کے حتمی اور دعا گو۔
 اس میں کوئی شک نہیں کہ دنیا کے سلسلے انسان خود مادیوں کی محبت اور بڑے سوں یا انہوں نے جسے سوں اپنے گھر سوں یا غریب سوں کا گھر سوں یا اور، ہر شے کے ہر طریقہ و گروہ
 اور ہر منصف اور صاحبکار کم محترم اور افضل و شرف ہے اور ان کی جان بدل، عزت و آوارہ و عقل، شعور اور دین و عقیدہ کی حرمت اور کرامت اور خدایت و صیانت کو دنیا کے ہر دین و مذہب نے مختلف
 طور پر تسلیم کیا ہے۔ اسلام اور مسلمان اسی کے لقب و معنی اور مادی و مثالیوں کے آئینہ و عالمی شہر پر جو ہے یعنی، مغرب ہے انہی، اسد و کبوتر، کھٹکھٹ، خدیں خدیں سہم جو جس کا عقلی اس کی
 جہنمی کی صورت حال یہ ہے اور ہے۔ اس کی بڑی وجہ ان اعلیٰ قدر سے ہے کہ انھیں ایمان کی سزا و عاقبت پہلے سے تمام غریب کے ہر کڑی محبت میں حدت سے نہ ان کا مقصد و مصالح کے
 فروغ، حفظ اور حصول کو ترجیح طور پر دینی بدلنے کی کو شش کی ہے۔ یعنی تمام تر سرگرمیوں اور خدایت اور ہر اعلیٰ مثالی حدت کاغذ اس کوئی، قوی، سیکلہ اور سپورڈیکاس کر دے جو انھیں بدلیں اور
 اصولوں کو بدلے اور امن و امان کی قیام بدلیت کی تعمیر و ساخت فروغ اور خدایت اور قوی کھیتی کے انتظام، حقوق نسواں، مسائل کے مختلف، عزم و محنت کی قیام، بہبود و بہشت گروہ کی حق
 کا گھر، ملحقہ راہوں کے غایت کی نہ صرف بدلیت کی ہے، بلکہ ان کی حاصلوں کو جاننے کے لیے بھی بدلیں کی ہے اور یہ بدلیت سوں یا اعلیٰ مثالی حدت کاغذ اس کی بھی ایک جہد کی سلسلہ کی ہم کڑی

[illegible]

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

مجلس

محلى الفقهन्दون

محبت اللہ عذری

ممبر آف پارلیمنٹ (راہیو)



Dr Fauzia Khan
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

MP/Pbn/message/2024/234
18.10.2024

Mr Asghar Ali Imam Mahadi Salafi
President Markazi Jamat Ahle Hadees Hind
Ahle Hadees Manzil 4116, Urdu Bazar,
Jama Masjid, New Delhi 110006

**Subject: Message on the eve of conference organized on the topic of WORLD
RELIGIONS AND RESPECT FOR HUMANITY**

Respected sir

Assalamo Alaikum Wa Rahmatullah wa Barakatuhu

I am honoured to have recieved a letter from your organization. The Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind holds the distinction of being one of the oldest organizations of its kind.

The work you do promoting peace and harmony between communities and the emphasis you put on brotherhood and national intergration is exactly the sentiment we need in these divisive times.

I am certain that the scheduled summit will fulfil its objective of fighting the evil of terrorism and championing the cause of humanity at large as you have beautifully put, inshallah.

My warmest regards and best wishes!

Yours sincerely

Dr Fauzia Khan

Address: Sundkhedu Road Parbhani (Maharashtra) 431401 Mobile: 9823144575 E-mail: fauziakhan.51@rediffmail.com
Delhi Address: Bungalow Number C-1/5 Humayun Road New Delhi 110003 Phone: 011-24641101 E-mail: phocamp11@gmail.com

दिल्ली स्टेट हज कमेटी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
(संसद के अधिनियम 35/2002 के अंतर्गत स्थापित)



समर्पण - जयते

دہلی اسٹیٹ حج کمیٹی

Delhi State Haj Committee

Government of NCT of Delhi

[Constituted under the Act of Parliament No. 35 of 2002]

KAUSAR JAHAN
Chairperson

It gives me immense pleasure to know that the Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees Hind is going to organize its 35th All India Ahle Hadees Conference on the Theme **'Word Religions and Respect for Humanity'**. As I am well aware, the Markaz has always been engaged in campaigning and establishing Human respect, Love to mankind and Fraternity through its multi-dimensioned program and activities since its inception. Irrespective of the different religious philosophy regarding creations of the universe and mankind, its core and central purpose is Love to mankind and human beings. The ultimate thrust of all religious preaching is only to love mankind and teach humanity.

Here I would like to draw the attention of all concerned that specially in pluralistic society like India, the role and responsibilities of the institution and organization such as the **Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees** is manifold towards the establishment and nurturing of a human-loving society which ensures a favorable environment for all-round development and progress of the Nation, Society as well as the mankind ultimately.

I wish my all the best for a great success and achievements on this occasion.

With Love and Respect for Mankind and Humanity.

Kausar Jahan
(Kausar Jahan) 14/10/24
Chairperson

To
Janab Maulana Asghar Ali Imam Mehdi Salfi Sahab,
President,
Markazi Jamat Ahle Hadees Hind,
New Delhi.

Office: Haj Manzil, Asaf Ali Road, New Delhi-110002, Phone: 011-23216730, 011-23230507, Fax: 011-23234041
Mobile : 7042169999, Email: delhistatehajcommittee@gmail.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

63

SALMAN KHURSHID**PRESIDENT**

BA (Hons) Delhi, MA (Oxon), BCL,
Senior Advocate
Former Minister of Law & Justice and
External Affairs, Govt. of India
Hon. Fellow, St. Edmund Hall, Oxford

**India Islamic Cultural Centre****IICC/PO/MSG/24-25/D-****Date: 17.10.2024****Message**

Dear Hazrat Maulana Asghar
Ali Imam Mahdi Salafi Sahib,
Central Amir of Jamiat-e-Ahl-e-Hadith Hind
New Delhi

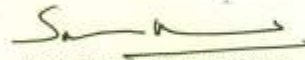
It is a pleasure to acknowledge the invitation to the 35th All India Ahl-e-Hadith Conference, scheduled for November 9-10, 2024, at Ramlila Maidan, Delhi, under the theme "Respect for Humanity and Religions of the World." We commend the Central Jamiat Ahl-e-Hadith for consistently addressing vital issues concerning humanity and promoting peace, tolerance, and social harmony through its events and activities.

The recognition of human dignity, the sanctity of life, and the rights of all individuals has been upheld by all religions, with Islam championing these values. At a time when social unrest and violence pose significant challenges globally, it is heartening to see efforts made to foster national unity, eliminate social evils, and ensure the welfare of the underprivileged.

We pray for the success of this important conference and hope it will continue to inspire and advance the cause of peace, humanity, and social justice.

May Allah bless these endeavors.

Peace and blessings be upon you.


(SALAMAN KHURSHID)

87-88, Lodhi Road, New Delhi-110003 (India) | Tel : +91-11-43535353, +91-11-43535350
Email : iiccdelhi@gmail.com, president@iiccentre.com | Website : www.iiccentre.com

جامیہ میللیا اسلامیا

(سنٹرل یونیورسٹی)

سولنا موہمہد علی جوہر مارگ، نئی دہلی - 110025

JAMIA MILLIA ISLAMIA

(Central University)

Maulana Mohamud Ali Jauhar Marg, New Delhi-110025

(NAAC Accredited A++ Grade)

جامعہ ملیہ اسلامیہ

(مرکزی یونیورسٹی)

سولنا موہمہد علی جوہر مارگ، نئی دہلی - 110025

Tel.: 011 - 26984650, 26985180, Fax : 0091-11-26981232 | Email: vc@jmi.ac.in | Web: jmi.ac.in

کولپتی کار্যাল

Office of the Vice Chancellor

دفتر شیخ الجامعہ



جامعہ
ملیہ
اسلامیہ

گرامی قدر حضرت مولانا امجد علی امام مہدی سلفی صاحب / مدظلہ العالی

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید کہ مزاج عالی بخیر ہوں گے۔

یہ جان کر بڑی مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی سب سے قدیم دینی و اصلاحی، تعلیمی و تربیتی اور سماجی و رفاہی تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دو روزہ عظیم الشان بینیتسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بتاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء مطابق ۶-۷ جمادی الاولیٰ ۱۴۴۶ھ بروز ہفتہ و اتوار بھٹوانہ، "اتحاد اہل فتنیت اور مذاہب عالم" نہایت ترک و اشتہار کے ساتھ دہلی کے رام لیلا میدان میں منعقد ہو رہی ہے، جس میں ملک و بیرون ملک کے مشاہیر علمائے کرام و دانشوران ملک و ملت اور اہم مذہبی و سماجی شخصیات شریک ہوں گی۔ نیز یہ کاس کانفرنس کے موقع پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند سے اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں کثیر تعداد میں شائع ہونے والے جلد و رسائل کے خصوصی نمبرات کا اجرا بھی عمل میں آئے گا۔ اس اہم کانفرنس میں شرکت کی دعوت کے لیے ہم ہمیں قلب سے آپ کے منظور ہیں اور کانفرنس کی کامیابی کے متنبی اور دعا گو۔

آج کلکی دینی و سماجی سطح پر جو بے چینی، اضطراب، بے اعتمادی، حسد و کینہ، تکفیر اور غلو میں تصادم کی صورت حال پیدا ہو رہی ہے۔ اس کی بڑی وجہ ایک دوسرے کے معتقدات، ثقافت اور مذہبی تعلیمات سے ناواقفیت یا ان کی دانستہ و نادانستہ پامالی ہے۔ مقام شکر ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ان مقاصد و مصالح کے فروغ و تحفظ اور حصول کو ترجیحی طور پر چینی ہانے کی کوشش کی ہے، اپنی تمام تر سرگرمیوں اور خدمات اور ہر آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس قومی سمینار اور سیمینار کا مرکز و محور انکسار بنایا اور اصولوں کو بنایا ہے اور امن و مشافقت کے قیام، انسانیت کی تعمیر، اخوت کا فروغ، رواداری اور قومی یکجہتی کے استحکام، حقوق نسواں و اطفال کے تحفظ، بحروم طبقات کی فلاح و بہبود، و بشت گردی کی تیغ کٹی اور سماجی برائیوں کے خاتمے کی نہ صرف بات کی ہے، بلکہ ان کی تاسوروں کو مٹانے کے لیے بھی پہل کی ہے۔ اور یہ بینیتسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بھی اسی مبارک سلسلہ کی اہم گڑی ہے۔

توقع ہے کہ یہ کانفرنس بھی دیگر کانفرنسوں کی طرح اپنے موضوع و مشتملات اور زمان و مکان کے لحاظ سے رنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام امن و انسانیت، تحفظ حقوق، رواداری، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس، تشدد، و بشت گردی، شراب نوشی و دیگر خبیثات، جہیز، جوار، رشوت، جہالت و خود غرضی، استحصال، صنفی و سماجی نا برابری و غیرہ کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کے لیے اہم کردار ادا کرے گی، ان شاء اللہ۔

میری دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کانفرنس کو ہر اعتبار سے ملک و ملت اور انسانیت کے لیے مفید بنائے، اس کے اچھے اثرات ظاہر ہوں اور آپ کی تمام قومی، ملی اور انسانی خدمات کو قبول فرمائے، آمین۔ والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

مخلص

پروفیسر مقیم آصف

وائس چانسلر

جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی



PROF. NAIMA KHATOON
M.Phil, Ph.D. (Psychology)

Vice-Chancellor

ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

Aligarh - 202 002, UP., India.

A Central University (NAAC ACCREDITED "A+" GRADE)

Phone: (Off) +91-571-2700994/2702167
(Res) +91-571-2700443
Fax: (Off) +91-571-2702607
Email: vcamu@amu.ac.in

October 24th, 2024

Message



It is heartening to note that the *Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees Hind*, is organising a conference entitled "World Religions and Respect for Humanity", at New Delhi.

World religions, while diverse in their practices and beliefs, converge on the fundamental principle of respect for humanity. In a world that often seems divided along religious and cultural lines, it is crucial to recognise the shared values that bind us together and reiterate the values of kindness, mutual respect and harmony among people of different religious backgrounds.

In multicultural societies like ours, people of various religious traditions often live, work, and interact with one another. This presents both opportunities and challenges for promoting mutual respect. On one hand, it offers the chance to learn about and appreciate diverse belief systems. On the other hand, it can also lead to misunderstandings, prejudice, and conflict; however, true respect means valuing the dignity and humanity of all individuals, regardless of their religious or cultural background.

The *Markazi Jamiat Ahl-e-Hadees*, being an old organisation, has a role to play in national integration. I hope this conference will provide an opportunity to engage in conversations that explore the similarities between religious traditions and foster a deeper sense of mutual respect among different faith communities.

I congratulate the organisers and wish the conference a great success.


Prof. Naima Khatoun

Prof. Shehpar Rasool

Vice-Chairman, Urdu Academy (Govt. of Delhi)
C.P.O. Building, Kashmere Gate, Delhi-110006



اردو اکادمی
(دہلی)

پرو۔ شہپر رسول

उपाध्यक्ष, उर्दू अकादमी, दिल्ली

सी.पी.ओ. बिल्डिंग, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

Tel: (O) 011-23863858, 23863566, 23863697, 23865436, Extn. 26

Website: http:// urduacademydelhi.com E-mail: urduacademydelhi@gmail.com

پروفیسر شہپر رسول

وائس چیئرمین، اردو اکادمی، دہلی

سی۔ پی۔ او۔ بلڈنگ، کشمیری گیٹ، دہلی 110006

پیغام

محترم و کرم اصغر علی امام مہدی سلفی صاحب

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

یہ معلوم ہو کر حد درجہ مسرت ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند، دہلی میں دو روزہ آل انڈیا کانفرنس بعنوان ”احترام انسانیت اور مذاہب عالم“ ترک و احتشام کے ساتھ منعقد کر رہی ہے۔

آپ کا موضوع پڑھ کر مزید مسرت اور اطمینان ہوا۔ آج کی دنیا کے معاشرتی رویوں کے پیش نظر یہ کہنا غلط نہ ہوگا کہ فی الوقت حیات انسانی میں انسان، انسانیت نیز علوم انسانیات کو کم لگائی اور کچھ نبی کے سبب جس انداز میں دیکھا جا رہا ہے اور مذکورہ الفاظ و تصورات جس بے وقعتی اور ناتقدری کے شکار ہو گئے ہیں اس کی مثال ملنا مشکل ہے۔ جس سماج میں انسانیت پر مادیت کو فوقیت ملنے لگتی ہے اور مذاہب کی اصل روح کو کبھی بغیر ہی مذہبی ہونے کی نمائش کو اہمیت حاصل ہو جاتی ہے یا مذاہب کے پردے میں حصول دنیا کے حربوں کی کارفرمائی شروع ہو جاتی ہے، وہاں نہ صرف احترام انسانیت کا جذبہ عمل مفقود ہو جاتا ہے بلکہ پست کرداری، باطل پرستی، ظلم و جبر اور قتل و غارتگری کا بازار گرم ہو جاتا ہے۔ چنانچہ اس وقت ایسے اہم موضوع پر گفتگو کا دروازہ کھول کر آپ نے قابل تحسین اقدام کیا ہے۔ میں اس کے لیے آپ کو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔ گزشتہ برسوں میں بھی آپ کی مساعی اسن و آشتی، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی، انسانی مساوات اور مذہبی رواداری کے تعلق سے بہت اہم رہی ہیں۔ اس کانفرنس سے بھی انشاء اللہ ایک مثبت اور نتیجہ خیز پیغام انسانی معاشرے میں عام ہوگا اور آپ کو اپنے مقاصد میں کامرانی مہتر آئے گی۔ آمین

دعا گو

پروفیسر شہپر رسول

وائس چیئرمین، اردو اکادمی، دہلی

سابق صدر شعبہ اردو، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

Res: B-32, Mujeeb Bagh, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Mobile : 9891721187, 8422804444, E-mail: rasoolshahpar@gmail.com



مرکز الدراسات العربية والإفريقية
Centre of Arabic and African Studies
School of Language, Literature and Culture Studies
Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110 067
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली - 110067

٢٩ أكتوبر ٢٠٢٤

حفظه الله ورعاه

إلى سعادة الأستاذ الفاضل فضيلة الشيخ أصغر علي إمام مهدي سلفي

أمير جمعية أهل الحديث المركزية، الهند

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته وبعد،

فاود أن أعبّر لكم عن عميق امتناني وشكري على دعوتكم الكريمة لي للمشاركة في المؤتمر السنوي الخامس والدلائل على مستوى عموم الهند، المقرر انعقاده في ٩-١٠ نوفمبر، ٢٠٢٤ في نيودلهي تحت عنوان "احترام الإنسانية وأديان العالم" من قبل جمعية أهل الحديث المركزية. إنني اعتبر هذه الدعوة شرفاً كبيراً لي، إذ سيجمع المؤتمر تحت سقف واحد كبار العلماء والمفكرين والشخصيات الدينية المؤثرة من مختلف أنحاء الهند وخارجها، مما يسهل تبادل الآراء والتجارب حول أبرز القضايا التي تواجه بلدنا والإنسانية جمعاء.

تتحلى أهمية هذا المؤتمر في الفكرة الجوهرية المتمثلة في التأكيد على أن جميع الأديان السماوية تدعو بلا استثناء إلى حماية وصيانة كرامة الإنسان وعرضه وحياته ودينه وعقيدته. لا تستند هذه القيم إلى الشرائع الدينية فحسب، بل هي أيضاً موثقة في المعاهدات والمواثيق العالمية التي تسعى جميعها إلى تحقيق العدالة والمساواة بين البشر وضمان الكرامة لكل فرد. ومع ذلك، فإن البشرية لا تزال تعاني من أزمات سياسية واجتماعية وأخلاقية شديدة، حيث تظل الحروب والصراعات تهدد السلام والأمن في العالم.

إننا اليوم في أمس الحاجة إلى تحقيق سلام شامل ومستدام في اجتماعات كلها، ولن يتحقق ذلك إلا من خلال تعزيز الاحترام المتبادل بين جميع الأفراد والشعوب، والعمل الجاد على نشر قيم الوئام الطائفي والتسامح. من الضروري أيضاً القضاء على خطاب الحقد والكراهية والتطرف الفكري الذي تنتشره بعض الجماعات لخدمة مصالحها الشخصية، ولا بد من التصدي لكل ما يسهم في تعزيز الاستغلال والعنف واللامساواة الاقتصادية والاجتماعية. لذلك، فإني على يقين بأن هذا المؤتمر، مثل المؤتمرات السابقة التي عقدتها الجمعية المركزية لأهل الحديث، سيكون بمثابة منارة تنشر السلام وتعزز التفاهم بين المجتمعات، وتعزز الوئام الطائفي، ويبث التواد والتراحم فيما بين مختلف طوائف المجتمع، وهو أمر نحن في أمس الحاجة إليه في ظل الظروف الراهنة.

أشكركم مرة أخرى على هذه الدعوة الكريمة، وإن شاء الله أحاول للمشاركة في هذا المؤتمر المهم، الذي سيقدّم منصة قيمة لتبادل الأفكار والخبرات، ويعزز الجهود الرامية إلى تحقيق التعايش السلمي بين مختلف الأديان والثقافات.

Mujeeb Rahman

مع خالص الشكر والتقدير،

أ.د. مجيب الرحمن

رئيس مركز الدراسات العربية والإفريقية

جامعة جواهر لال نهرو، نيودلهي



Prof. Mujeeb Rahman
 Centre of Arabic & African Studies
 School of Language, Literature and Culture Studies
 Jawaharlal Nehru University
 New Delhi- 110067



شعبہ اردو، دہلی یونیورسٹی، دہلی

DEPARTMENT OF URDU, University of Delhi, Delhi-110007



۱۵ اکتوبر ۲۰۲۳

مکرمی اصغر علی امام مہدی ملتانی صاحب

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

سلام مسنون!

آپ کا دعوت نامہ ملا، بے حد شکر یہ، جزاک اللہ۔

یہ جان کر اذ حدوثی ہوئی کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام ہینٹیسویں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس بعنوان "احرام انسانیت اور مذاہب عالم" تاریخ ۹-۱۰ اکتوبر ۲۰۲۳ء بمقام رام لیلا میدان، نئی دہلی میں منعقد ہو رہا ہے جس کا مقصد مذاہب عالم بالخصوص اسلام کے پیغام امن و انسانیت کو دنیا میں عام کرنا ہے۔

یقین ہے کہ اس دو روزہ عظیم الشان کانفرنس میں پڑھے جانے والے مقالوں، تقریروں اور پاس کی جانے والی تجویزوں کے نتیجے میں قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی، ہر طرح کے انسانی حقوق کی بحالی اور بشر دوستی کو فروغ ملے گا۔ نفرت و استحصال، خوف و ہراس، ظلم و جبر اور کسی بھی نوع کے تشدد کو ختم کرنے میں یہ کانفرنس اور اس کے پیغامات اہم رول ادا کریں گے۔

آپ کے مجوز و منصوبوں کو دیکھتے ہوئے کہا جاسکتا ہے کہ آپ خوشگوار ماحول خلق کرنے، گلوبل جمنی تہذیب کی روایت کو زندہ رکھنے، ایک بہتر سانچہ تشکیل دینے اور ملک کے امن و آشتی کو مزید مستحکم بنانے میں حتی الامکان اپنے وسائل و ذرائع کا استعمال کریں گے۔

کانفرنس کی کامیابی، اس کے پیغام کو عام کرنے کے خیال اور آپ کے عمدہ ہدایات کے لیے نیک خواہشات۔

ابوبکر عباد

(پروفیسر) ابوبکر عباد

صدر شعبہ اردو

دہلی یونیورسٹی، دہلی

E-mail : departmentofurdu.du@gmail.com

JAMIA MILLIA ISLAMIA

(A Central University by an Act of Parliament)

Maulana Mohammad Ali Jauhar Marg, New Delhi - 110025.

جامیہ ملیہ اسلامیہ

(संसदीय अधिनियम-नुसार केंद्रीय विद्यालय)
मौलाना मुहम्मद अली जौहर मार्ग, नई दिल्ली-110025

Website : jmi.ac.in/islamicstudies

جامعہ ملیہ اسلامیہ

(پارلیمانی ایکٹ کے تحت مرکزی حکومت کے زیر نگرانی)
مولانا محمد علی جواہر مارگ، نئی دہلی-110025



Department of Islamic Studies

دیپارٹمنٹ آف اسلامیک سٹڈیز

شعبہ اسلامیات اسلام آباد

گرامی قدر حضرت مولانا اصف علی امام مہدی مصلیٰ صاحب مدظلہ العالی

امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند

اسلام ٹیکم و ریسرچ، اللہ و برکات

امید کہ مزاج عالی بخیر ہوں گے۔

یہ جان کر بڑی مسرت ہوئی کہ ہندوستانی مسلمانوں کی سب سے قدیم دینی و اسلامی تعلیمی و تربیتی اور سماجی و ثقافتی تنظیم مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند کے زیر اہتمام دو روزہ عظیم الشان بینیت سو سال انڈیا اہل حدیث کانفرنس تاریخ ۹-۱۰ نومبر ۲۰۲۳ء مطابق ۶-۷ جمادی الاولیٰ ۱۴۴۶ھ بروز ہفتہ و اتوار منعقد ہوئی۔ ”احقر امام انسانیت اور مذاہب عالم“ نہایت بزرگ و اہم مقام کے ساتھ دہلی کے رام لیا میڈان میں منعقد ہو رہی ہے، جس میں ملک و بیرون ملک کے مشاہیر علمائے کرام و دانشوران ملک و ملت اور اہم مذہبی و سماجی شخصیات شریک ہوں گی۔ نیز یہ کہ اس کانفرنس کے موقع پر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند سے اردو، ہندی اور انگریزی زبانوں میں کثیر تعداد میں شائع ہونے والے جرائد و رسائل کے خصوصی نمبرات کا اجرا بھی عمل میں آئے گا۔ اس اہم کانفرنس میں شرکت کی دعوت کے لیے ہم ہمیشہ سے آپ کے مشکور ہیں اور کانفرنس کی کامیابی کے حتمی اور دعا گو۔

آج کل عالمی سطح پر جو بے چینی، اضطراب، بے اعتمادی، حسد و کینہ، تشکیک اور غمخیزی تصادم کی صورت حال پیدا ہو رہی ہے۔ اس کی بڑی وجہ ایک دوسرے کے معتقدات، ثقافت اور مذہبی تعلیمات سے ناواقفیت یا ان کی دانستہ و نادانستہ پامالی ہے۔ مقام شکر ہے کہ مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند نے ان مقاصد و مصالح کے فروغ و تحفظ اور حصول کو ترجیحی طور پر پیشی بنانے کی کوشش کی ہے، اپنی تمام تر سرگرمیوں اور خدمات اور ہر آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس، قومی سیمینار اور سہ روزہ کیمپوں اور انٹرنیشنل میٹا دوں اور اصولوں کو بنایا ہے اور امن و شاقی کے قیام، انسانیت کی تعمیر، اخوت کا فروغ و رواداری اور قومی یکجہتی کے استحکام، حقوق نسواں و اطفال کے تحفظ، بھرم و جھوٹات کی خلاج و بے ہودہ دہشت گردی کی ختم کئی اور سماجی برائیوں کے خاتمے کی نہ صرف بات کی ہے، بلکہ ان کی ناسوروں کو مٹانے کے لیے بھی پائل کی ہے۔ اور یہ بینیت سو سال انڈیا اہل حدیث کانفرنس بھی اسی مبارک سلسلہ کی اہم گڑی ہے۔

واقع ہے کہ یہ کانفرنس بھی دیگر کانفرنسوں کی طرح اپنے موضوع و مشغولات اور زمان و مکان کے لحاظ سے سنگ میل ثابت ہوگی اور مذاہب عالم خصوصاً اسلام کے پیغام امن و انسانیت، تحفظ حقوق و رواداری، قومی یکجہتی، فرقہ وارانہ ہم آہنگی کے فروغ، خوف و ہراس، تشدد و دہشت گردی، شراب نوشی و دیگر خبیثات، جہیز، بچہ و عورت، جہالت، خود غرضی، استحصال، مصلحتی و سماجی برابری وغیرہ کے خاتمے اور ماحولیات اور قدرتی وسائل کے تحفظ کے لیے اہم کردار ادا کرے گی، ان شاء اللہ۔

میری دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کانفرنس کو ہر اعتبار سے ملک و ملت اور انسانیت کے لیے مفید بنائے، اس کے اچھے اثرات ظاہر ہوں اور آپ کی تمام قومی، ملی اور انسانی خدمات کو قبول فرمائے، آمین۔ والسلام ٹیکم و ریسرچ، اللہ و برکات

مخلص

محمد امجد علی

پروفیسر افتخار محمد خان
صدر شعبہ اسلامیات اسلام آباد
جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی

Dr. Suhail Hasan

- Chairman, Al-Quran Society, London (1978)
- Secretary General, Islamic Sharia Council UK (1982)
- Founder, Masjid Al-Tawhid London-UK (1984)
- Founder Trustee, Muslim Aid (1985)

الدكتور / صهيب حسن عبدالغفار

- رئيس جمعية القرآن (لندن) (1978م)
- الأمين العام لمجلس الشريعة الإسلامية (بريطانيا) (1982م)
- مؤسس مسجد التوحيد لندن - بريطانيا (1984م)
- عضو تأسيسي للكون الإسلامي (1985م)

مکرمی جناب اصغر علی نام مہدی لعلی
ایر رکنی جمعیت اہل حدیثہ صند
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔

سب سے پہلے تو میں جناب جمیل احمد شیر خان کے توسط سے آپ کے خطاب دعوت ارسال کرنے کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔
اور پھر آپ کے سالانہ اجتماع اور نوٹر کانفرنس کی کامیابی کے لئے دعاگو ہوں کہ آپ سر زمین صندیں
السلام کی سچی اور گہری دعوت کو پیش کرنے میں ہمہ تن مصروف ہیں۔

میں تو ہمیشہ خواہش مند رہا ہوں کہ کم از کم ایک مرتبہ اپنی زندگی میں اپنی جائے ولادت (مالیر ٹولہ)
اور اپنے والدین کی جائے تعلیم (رحمانیہ، دہلی) کا دیدار کر سکوں لیکن ویزا کے عدم حصول کی بنا پر
ایسا نہ ہو سکا۔

آپ کی حالیہ دعوت ویزا کے حصول کی ایک اور کوشش کا سبب بن سکتی تھی لیکن فی الحال اس کا
موقع نہیں دیکھ رہا ہوں اور وہ اس لیے کہ آپ کی کانفرنس کا وقت بہت قریب ہے اور اپنی ذمہ داریوں
انہی (یورپین کونسل برائے قومی اور تحقیق) کے جس میں صدر بھی ہوں گا سالانہ اجلاس نومبر میں
ترکی کے شہر قونیا میں ہو رہا ہے جس میں نہ صرف مجھے شرکت کرنا ہے بلکہ ہمیں ایک تحقیقی مقالہ بھی
پیش کرنا ہے جس کی تحریر میں میرا اجماعاً وقت صرف ہو رہا ہے۔ آپ کا اپنا مطلوبہ مقالہ لکھنا بھی اس
وقت میرے لئے ممکن نہیں کہ اس کے لئے مناسب وقت درکار ہے۔

فی الحال میری معذرت قبول فرمائیں لیکن آئندہ کسی اجلاس کی حاضری مطلوب ہو تو کم از کم چھ ماہ قبل
دعوت ارسال کریں تاکہ ویزا کا حصول یقینی بنایا جاسکے۔

اللہ تعالیٰ آپ کے اور آپ کے معاونین کے شکریہ کے ساتھ، والسلام
لندن: تیار پنج ۲۳، ستمبر ۲۰۲۴



المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة
The World Muslim Communities Council

بسم الله الرحمن الرحيم

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته

يسرني في البداية أن أتوجه بالشكر الجزيل إلى الإخوة في جمعية أهل الحديث المركزية بجمهورية الهند ممثلة بفضيلة الشيخ أصغر علي إمام مهدي السلفي، على دعوتهم لي للمشاركة في المؤتمر الخامس والثلاثين لعموم الهند والذي يحمل عنوان: "دور الأديان العالمية في صيانة الكرامة الإنسانية"، إن هذا المؤتمر الذي يأتي في وقت يمثل لنا جميعاً فرصة عظيمة للتأكيد على أهمية دور القيادات الدينية في ترسيخ قيم التعايش السلمي والحوار البناء بين كافة أتباع الأديان وإعلاء الكرامة الإنسانية، ما هو إلا تأكيد على الدور الرئيسي والفعال للقيادات الدينية في تعزيز أمن واستقرار وازدهار الأوطان وتنميتها.

ولا يخفى علينا جميعاً أن الأديان على مر العصور والأزمنة لعبت دوراً محورياً في تعزيز التعايش والتسامح بين أتباعها، حيث تستند في نصوصها المقدسة وتعاليمها الدينية على إرساء مبادئ ومفاهيم المحبة، والسلام، والاحترام المتبادل، وحفظ كرامة الإنسان وتقديس حقه في حياة آمنة مطمئنة، ولنا في ديننا الإسلامي الحنيف أسوة حسنة، حيث يقول المولى عز وجل في كتابه الكريم، "وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْوَرْدِ وَالْأَنْخَرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلاً" (الإسراء، 70)، حيث شملت الكرامة الإنسانية جميع بني آدم بغض النظر عن أديانهم وأعراقهم وثقافاتهم، وهي رسالة عظيمة علينا أن نتلقفها وندرك مقاصدها من خلال تطبيقها

ص.ب. 769688 أبوظبي، الإمارات العربية المتحدة | P.O.Box 769688 Abu Dhabi, UAE

info@twmcc.com | www.twmcc.com



في إدارة شؤون مجتمعاتنا عبر التأكيد على احترام الإنسان وإعلاء كرامته التي ذكرها سبحانه وتعالى في محكم تنزيله، وأوصى بها نبيه الكريم صلى الله عليه وسلم. واليوم ونحن نجتمع في مدينة نيودلهي عاصمة جمهورية الهند، فإننا لابد وأن ندرك أن التعددية الدينية كانت ولا تزال من أبرز السمات التي تتميز بها الهند دون غيرها من البلدان، حيث يعد هذا التنوع الديني مصدر القوة لهذا البلد وصمام أمان لشعبه، ومنازة للتعايش السلمي بينهم بكل ود واحترام وولاء للوطن جنباً إلى جنب في مجتمع يغلب عليه روح التسامح وقبول الآخر.

إن الهند، هذا البلد العظيم، يضم على أرضه أكثر من مليار وأربعمائة مليون نسمة، يتحدثون لغات متعددة وأعراق مختلفة ويمارسون طقوساً دينية متنوعة، تكمن قوة التعايش فيه بقدرة أبناء شعبه على احتضان هذا التنوع والعيش بكل ود ووثام بغض النظر عن الاختلافات الدينية والتباينات العقدية، فالهندوس والمسلمون والمسيحيون والسيخ والبوذيون وغيرهم يتشاركون شؤون الحياة اليومية على مستوياتها الاقتصادية والاجتماعية والسياسية والرياضية والفنية كافة، ويتعاونون فيما بينهم في تنظيم الفعاليات الوطنية ومهرجاناتهم الثقافية واحتفالاتهم الدينية، مدركين في الوقت ذاته حرية الإيمان بالمعتقد ووجوب احترام المقدسات، وهو ما جعل من الهند أنموذجاً عالمياً يحتذى به في التعايش والتسامح واحترام الآخر.

إن تمسك الهند بروح التسامح والتعايش لا يمنحها فقط الاستقرار الاجتماعي والنمو الاقتصادي، بل يقدم للعالم نموذجاً إيجابياً يمكن الاحتذاء به، يبرز التعايش السلمي

ص.ب. 769688 أبوظبي، الإمارات العربية المتحدة | P.O.Box 769688 Abu Dhabi, UAE

info@twmcc.com | www.twmcc.com



المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة
The World Muslim Communities Council

بين أتباع الأديان كمبدأ أساسي لبناء مجتمع أكثر عدلاً وازدهاراً، يتاح فيه للجميع فرصة الإبداع، والإسهام في مسيرة التقدم، والازدهار.

وإننا من خلال هذا الجمع الكريم في مؤتمر "دور الأديان العالمية في صيانة الكرامة الإنسانية"، علينا أن نستذكر جميعاً الدور التاريخي والمهم الذي لعبه علماء الهند المسلمين في ترسيخ قيم المواطنة والتعايش بين مختلف أتباع الأديان في هذا البلد، ويشهد التاريخ وتراث الهند كيف ساهم العلماء المسلمون في تعزيز التناغم الاجتماعي والاحترام المتبادل بين جميع مكونات المجتمع، واليوم فإن المسلمين في الهند عليهم مسؤولية عظيمة في الحفاظ على خصوصية المجتمع الهندي، وإحياء تراثه الإسلامي من خلال التعريف بالدور الكبير الذي لعبه أسلافهم في بناء هذا الوطن، وتربية الأجيال الناشئة على قيم الولاء لوطنهم وإدراكهم لواجباتهم وحقوقهم كمواطنين هنود يفخرون بانتمائهم لدينهم ووطنهم ومجتمعهم، ويكنون كل الاحترام والتقدير لشركائهم في الوطن على اختلاف أديانهم ومعتقداتهم وثقافتهم.

لقد أدرك علماء الهند المسلمون قبل استقلال الهند وبعده أهمية السلام والعدل والتسامح، مسترشدين بالنصوص الدينية والسيرة النبوية التي تشجع على الرفق والعدالة والعيش السلمي وإعلاء الكرامة الإنسانية، من خلال الخطب والمحاضرات والمؤلفات والمناقشات العلمية، ودعوا إلى نبذ التعصب والكراهية واعتماد الحوار كوسيلة لحل الخلافات، كما آمنوا بالمشاركة الفعالة في الحياة العامة والسياسية لتحقيق المساواة وضمان حقوق الجميع في الوطن، مؤكدين على إعلاء قيم المواطنة

ص.ب. 769688، أبوظبي، الإمارات العربية المتحدة | P.O.Box 769688 Abu Dhabi, UAE

info@twmcc.com | www.twmcc.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

74



المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة
The World Muslim Communities Council

والالتزام بواجباتها، إن هذه الجهود المستمرة ساهمت ولا تزال في بناء مجتمع هندي متماسك ينعم بالتعايش السلمي واحترام الاختلافات، مما أسهم في تعزيز الاستقرار والتقدم للبلاد.

إن المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة وإذ يبارك لجمعية أهل الحديث المركزية بجمهورية الهند حسن اختيارها لموضوع المؤتمر، بما يسهم في تعزيز الحوار البناء وقيم العيش المشترك وإعلاء قيم المواطنة والكرامة الإنسانية، ودعم مشاركة المسلمين في مجتمعاتهم وتعايشهم بطريقة فعّالة مع شركائهم في الوطن، بما يعزز بناء جسور التواصل والتفاهم مع الثقافات والأديان الأخرى.

فإنه كذلك يؤكد على أن المؤتمر يتوافق مع الأهداف التي يسعى المجلس لتحقيقها في كافة المجتمعات المسلمة في العالم عبر تعزيز الحوار بين الأديان والثقافات، وإعلاء حق الإنسان بالعيش الكريم والحياة الآمنة، وتعزيز الفهم المتبادل وتقديم النظرة الصحيحة للإسلام والمسلمين، تلك النظرة المبنية على نشر قيم التسامح والسلام والاحترام المتبادل.

كما أن المجلس يشجع المسلمين وغيرهم على الانخراط الإيجابي في المجتمعات التي يعيشون فيها، مشدداً على أهمية أن يكون الفرد المسلم مواطناً صالحاً يسهم في رفاهية وتقدم بلده، دون تمييز أو تحزب، ويشجع المجلس أيضاً على المشاركة الفعّالة في الحياة المدنية والسياسية، والتأكيد على أن المواطنة ليست مجرد هوية، بل هي مسؤولية تتطلب العمل من أجل الصالح العام، عبر تنفيذ مبادرات تسهم في تعزيز

ص.ب. 769688 أبوظبي، الإمارات العربية المتحدة | P.O.Box 769688 Abu Dhabi, UAE

info@twmcc.com | www.twmcc.com



المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة
The World Muslim Communities Council

التفاعلات البناءة مع الشركاء في الوطن، مما يساهم في نزع أي مخاوف أو سوء فهم يمكن أن تنشأ بسبب الاختلافات الثقافية أو الدينية.

إن المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة وإذ يشجع على احترام التعددية والاعتراف بأهميتها لبناء مجتمعات قوية ومستقرة، فإنه وفي الوقت ذاته يؤكد على أهمية هذا المؤتمر وغيره من الفعاليات في ترسيخ قيمة العمل المستدام الهادف إلى خلق مناخ يتيح للمسلمين ولغيرهم من شركاء الوطن على حد سواء، الاستفادة من التنوع الثقافي والديني في وطنهم، والعمل سوياً نحو مستقبل مشرق للجميع، مع تمنياتنا الخالصة الصادقة للمؤتمر والقائمين عليه بالنجاح والتوفيق.

والسلام عليكم ورحمة الله وبركاته...

الدكتور علي راشد النعيمي

رئيس المجلس العالمي للمجتمعات المسلمة
دولة الإمارات العربية المتحدة

ص.ب. 769688 أبوظبي، الإمارات العربية المتحدة | P.O.Box 769688 Abu Dhabi, UAE

info@twmcc.com | www.twmcc.com

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

76

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



رَبِطَةُ الْعَالَمِ الْإِسْلَامِيِّ
MUSLIM WORLD LEAGUE
مكتب نائب الأمين العام
Office of the Deputy Secretary General

فضيلة الشيخ أصغر علي إمام مهدي السلفي
أمير جمعية أهل الحديث المركزية بالهند
وفقه الله

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته

وبعد : فقد تلقيت خطابكم برقم 830 / MJA / E / 24 ، وتاريخ
٢٠٢٤ / ١٠ / ١ م ، المتضمن دعوتي للمشاركة في المؤتمر الخامس والثلاثين
للجمعية بعنوان : دور الأديان العالمية في صيانة كرامة الإنسانية ، المزمع عقده
بالعاصمة نيودلهي ، في الفترة ٧-٨ جمادى الأولى ١٤٤٦ هـ الموافق ٩-١٠
نوفمبر ٢٠٢٤ م .

ويطيب لي أن أتقدم لفضيلتكم بخالص الشكر وصادق التقدير على
دعوتكم الكريمة ، ويشرفني حضور المؤتمر بعون الله تعالى .
وأسأل الله عز وجل أن يوفقنا وإياكم لمحبتة ومرضاته ، وأن يحفظكم
ويرعاكم ، ويسدد على طريق الحق خطاكم .
والله يحفظكم .

أفوضكم

نائب الأمين العام لرابطة العالم الإسلامي

د. عبد الرحمن بن عبد الله الزيد

P.O. Box: 537 - Tel: +966 12 5600919
Fax: +966 12 5601319 / +966 12 5601267
Tlx: 540009 RABITA SJ / 540390 / WO SJ
Cable: (RABITA - MAKKAH)

www.themwl.org

info@themwl.org

صندوق البريد: 537 هاتف رقم 5600919 966 12 +
فاكس رقم 5601319 / 5601267 966 12 +
تلخيص رقم 540009 برابطة (إسلا - مكة)

@mwlorg

1C04661

الرقم:

16-10-2024

التاريخ:



الندوة العالمية
للشباب الإسلامي
World Assembly
of Muslim Youth

حفظه الله

الأخ الفاضل الشيخ / أصغر علي إمام مهدي سلفي
الأمير لجمعية أهل الحديث المركزية بالهند

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته.

أرجو أن يصلكم خطابي هذا وأنتم في صحة جيدة وحال طيبة، وبعد:
أشير إلى خطابكم الكريم رقم (736/MJAC/24) في 2024/9/25م، بشأن
دعوتي لحضور المؤتمر الخامس والثلاثين لعموم الهند في يومي السبت والأحد الموافق
2024/11/10-9م، بتبؤدهي عاصمة الهند بعنوان (دور الأديان العالمية في صيانة
كرامة الإنسانية).

أشكركم جزيل الشكر للدعوة، وسوف ينوب عني في الحضور سعادة أ. د. سليمان بن قاسم
العيد، في الموعد المحدد بعون الله تعالى،
والله تعالى يحفظكم ويرعاكم،
والسلام عليكم ورحمة الله وبركاته.

الأمين العام



د. صالح بن سليمان الوهبي



صورة مع النسخة لإدارة المكتب، والعلاقات الدولية.

020611000
800124400
info@wamy.org

عضو المنظمات غير الحكومية - هيئة الأمم المتحدة
عنا: +966 11 2050000 - فاكس: +966 11 2050011 - wamy.org
ص:ب 10845 الرياض 11443 - رقم البريد: 3879 - طريق الملك فهد - حي المصنعية - المنطقة الحرة السعودية

इसलाहे समाज
नवंबर 2024

78

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

فقد تلقيت دعوة كريمة من صاحب الفضيلة الشيخ أصغر علي بن إمام مهدي السلفي -حفظه الله- أمير جمعية أهل الحديث المركزية لعموم الهند؛ للمشاركة في مؤتمر الجمعية الخامس والثلاثين لعموم الهند في يومي السبت والأحد (٧-٦) جمادى الأولى ١٤٤٦هـ الموافق لـ (٩-١٠) نوفمبر ٢٠٢٤م: عن حفظ الدين الإسلامي للكرامة الإنسانية وواجب الأديان تجاه ذلك، فألفيته موضوعاً مهماً للغاية للدفاع عن الإسلام وإبراز محاسنه في ظل الهجمات الإعلامية التي تحاول النيل منه كذباً وزوراً، مثمناً دور جمعية أهل الحديث المركزية لعموم الهند في خدمة الإسلام والمسلمين والدعوة إلى الله بالحكمة والموعظة الحسنة، وسعيها لجمع الكلمة، وتعزيز الأمن والسلم، ونيل العنف والتطرف والظلم، وترسيخ مبادئ الكرامة الإنسانية التي جاءت بها الشريعة الغراء هدى ورحمة للعالمين.

وإني في هذا المقام أتقدم بالشكر الجزيل إلى فضيلة أمير الجمعية الشيخ أصغر علي السلفي والقائمين عليها؛ لما يقومون به من جهود جبارة في الدفاع عن الإسلام والمسلمين ونشر العقيدة الصحيحة، كما أشيد بدور الجمعية على مر التاريخ في الدفاع عن المملكة العربية السعودية وقيادتها الرشيدة وتأييد مواقفها السياسية ورسالتها السامية لتعزيز الأمن والسلم العالميين ومبادئ الإنسانية الحقة.

وأدعو الله -جل وعلا- أن يوفق القائمين على الجمعية الموقرة وعلى هذا المؤتمر المهم في موضوعه ومضامينه وتوقيته، راجياً من المولى العلي القدير أن يحظى هذا المؤتمر بالقبول وأن يثري الساحة الإعلامية والدعوية والفكرية والثقافية بمخرجاته الثمينة لإبراز محاسن الإسلام ودحض الشبهات المثارة حوله، وكما يحب ربنا ويرضى. وصلى الله وسلم وبارك على نبينا محمد وعلى آله وصحبه وسلم.

وكتبه

د/ عبدالمحسن بن عبد الرحمن الفريواني



٣٠/٤/١٤٤٦هـ - مدينة الرياض

حضرة المكرم فضيلة الشيخ أصغر علي إمام مهدي السلفي / حفظه الله وبارك في سعيه
أمير جمعية أهل الحديث المركزية، بالهند.

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته، وبعد:

فأتشرف بتقديم التحيات المباركات لشخصكم الكريم ولجميع منسوبي جمعية أهل
الحديث بالهند، سائلًا الله تبارك وتعالى الصحة والعافية لفضيلتكم، والتوفيق والسداد في
خطواتكم، والحفظ والأمان لكم وللجمعية ومنسوبيها.

ثم إنني قد تشرفت بدعوة مباركة وصلّني من جمعية أهل الحديث المركزية لعموم
الهند، للمشاركة في «المؤتمر الخامس والثلاثين لعموم الهند» الذي تعقده الجمعية في يومي
السبت والأحد، بتاريخ ٦ و٧ من جمادى الأولى ١٤٤٦ هـ، الموافق: ٩ و ١٠ من شهر نوفمبر
٢٠٢٤ م، بنيو دلهي عاصمة الهند، وتعتبر هذه فرصة سعيدة للقاء العلماء الأجلاء، والدعاة
الفضلاء، وكبار الشخصيات من داخل الهند وخارجها، وبخاصة أنّ موضوع المؤتمر: «دور
الاديان العالمية في صيانة كرامة الإنسانية» موضوع مهم، ونافع لأهل الإسلام، ويعطي للداعية
فرصة سعيدة لإبراز محاسن الإسلام من خلال المشاركة فيه.

وبمقدار سعادتي بهذه الدعوة الكريمة، كان أسفي الشديد لعدم تمكّني من المشاركة في
المؤتمر، وتلبية دعوتكم في ذلك؛ لأن وقت المؤتمر يوافق وقت عقد «دورة علمية في نجران»،
وقد سبقوا في الدعوة، وقبلت دعوتهم قبل أن تصلني الدعوة للمشاركة في مؤتمركم المبارك،
وأسعد وأتشرف لو حصلت الفرصة مرة أخرى في مستقبل الأيام.

أسأل الله تبارك وتعالى أن يحفظ جمعية أهل الحديث ومنسوبيها، ويسددها في
خطواتها، وأن يبارك في المؤتمر، ويحقق أهدافه ورسائله، ويجعله نافعا للأمة الإسلامية.

والسلام عليكم ورحمة الله وبركاته

أ.د. عمر مصلح الحسيني

رقم الجوال والواتس: +٩٦٦٥٠٣٣١٩٩٧٦

البريد الإلكتروني: ohosyni@gmail.com



☎ : 06182 - 242134

Madrasa Ahmadiya Salafia

Milki Mohallah, Arrah, Dist. Bhoj Pur
(Bihar) India - 802301

(Founded by: Late Allamah Abu Mohd. Ibraheem Arvi)



المدرسة الأحمدية السلفية

ملکی محلہ، آره، مدیریہ : بہوجپور
بیہار، ہند - ۸۰۲۳۰۱

(المؤسس : العلامة أبو محمد إبراهيم الأروى رحمه الله)

Ref. No. Regd No: 515 الرقيم

Date: ۰۶-۱۱-۲۰۲۴ = ۳ ربیع الثانی ۱۴۴۶ھ التاريخ

گرامی قدرمخترم جناب مولانا اصغر علی امام مہدی سلفی مدنی صاحب / خطہ اللہ و رعایا
امیر مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند، دہلی
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

امید کہ مزاج گرامی بخیر ہوگا۔

عرض رینک ۳۵ روپے آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس منعقدہ ۹-۱۰ دسمبر ۲۰۲۳ء کے لیے مہمان خصوصی کے طور پر تاجپور کو
شرکت کی دعوت موصول ہوئی۔ جزاکم اللہ خیر الجزاء
مرکزی جمعیت اہل حدیث ہند اور مدرسہ احمدیہ سلفیہ ملکی محلہ، آره کے بچ بڑا گم اور تاریخی تعلق ہے۔ خادم قوم و ملت حضرت
علامہ ابوالفتح ابراہیم آروہی رحمۃ اللہ علیہ کے قائم کردہ ادارہ مدرسہ احمدیہ سلفیہ ملکی محلہ، آره کے مذاکرہ علیہ کے سترہویں سالانہ اجلاس
۲۳-۲۴ دسمبر ۱۹۰۶ء میں منعقد ہوا جس کی صدارت مولانا شاہ مبین الحق چلواری رحمۃ اللہ نے کی اور اسی اجلاس میں جمعیت اہل حدیث کی
بنیاد رکھی گئی۔ جس کے پہلے ناظم مولانا ثناء اللہ امرتسری مقرر کئے گئے جبکہ علامہ عبداللہ غازی پوری رحمۃ اللہ جمعیت کے صدر منتخب کئے گئے
اور اللہ اللہ مدرسہ احمدیہ سلفیہ آره میں جمعیت اہل حدیث ہند کا لگایا ہوا شجر شمر آروہی بچکا ہے جس کو جماعت کے بزرگان اور تقاضا اساطین علم
وفن نے بیچا ہے۔ اللہ کے فضل و کرم سے جمعیت اپنے مقاصد میں سرگرم عمل ہے۔ اور اس کی دینی و دنیوی، دفاعی اور سماجی خدمات قابل
دشک ہیں۔ موجودہ منعقدہ کانفرنس کے لیے منتخب عنوان "احترام انشائیت اور تقاضا ہب عالم" سماجی، ملکی اور عالمی حالات اور ضرورت کے
عین مطابق ہے۔ شرکت کی آرزو تھی۔ لیکن بروقت ہفتہ عشرہ سے عمل ہونے کے باعث کانفرنس میں شرکت سے معذرت خواہ ہوں۔ دعا
کرتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ آپ ذمہ داران مرکزی جمعیت کو حوصلہ اور ہمت عطا کرے۔ کانفرنس بخیر و خوبی اپنے اختتام کو پہنچے اور یرادگان
اسلام کی ہدایت و فائدہ کار رہے۔ آمین
ان شاء اللہ پھر بھی ملاقات ہوگی۔ میری صحت کے لیے اور مدرسہ احمدیہ سلفیہ ملکی محلہ، آره کی ترقی کے لیے دعا کی
درخواست ہے۔

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

تیرا پیش

انور علی آروہی

ناظم اعلیٰ

مدرسہ احمدیہ سلفیہ ملکی محلہ، آره، بہار
رابطہ کے لیے: 09934247575

Email: ahmadiyasalafiaara@gmail.com



बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम

दाइश के आतंकवाद के खिलाफ अहले हदीस ओलमा का सामूहिक फतवा

प्रश्न:9. इस हकीकत के बावजूद कि इस्लाम अमन व शान्ति का धर्म है और इसमें किसी भी प्रकार की हिंसा अतिवाद और आतंकवाद की गुंजाइश नहीं है, भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में जारी आतंकवाद की घटनाओं और कार्रवाइयों को इस्लाम और मुसलमानों से जोड़ कर पेश किया जाता है जबकि इस्लाम और उसके प्रतिनिधि महान ओलमा-ए-इस्लाम ने आतंकवाद को हराम करार दिया है और आज से लगभग दस साल पूर्व मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने भी उसकी अवैधता पर फतवे जारी किये। इसके बावजूद मुसलमानों पर ऐसे आरोप लगाये जा रहे हैं और क्या प्रतिक्रिया के तौर पर भी आतंकवाद का जवाब आतंकवाद से दिया जा सकता है जैसा कि कुछ लोग आत्मघाती हमलों के द्वारा इस तरह के काम करते हैं इस्लाम में इसका क्या हुकम है?

प्रश्न२: आज कल खिलाफते इस्लामिया का दावा करने वाली तथाकथित संगठन दाइश और इस जैसे दूसरे संगठन जो कि विभिन्न देशों में भय व आतंक फैलाये हुये हैं हुकूमतों और अवाम के खिलाफ हथियार उठाये हुये हैं, निर्दोष मर्दों, औरतों बूढ़ों और बच्चों पर जान लेवा हमले कर रहे हैं और उनके इन आतंकी हमलों और तकफ़ीरी कार्रवाइयों की वजह से अमन व शान्ति भंग हो चुकी है। इन हमलों में अब तक हज़ारों लोग मर चुके हैं माल असबाब तबाह हो चुके हैं और अवाम को हर घड़ी अपने जान व माल परिवार और साथी संबन्धियों के लिये भय और आतंक लगा रहता है तो क्या तथाकथित खिलाफत के नाम पर दाइश या इस जैसे संगठन के द्वारा देश के अमन व शान्ति और कानून को हाथ में लेने की कोशिश करना, चौक चौराहों और आम जगहों पर बम धमाका करना, सरकारी और व्यक्तिगत समपदाओं और सैनिक प्रतिष्ठानों को तबाह करना, जहाजों को हाईजेक करना, पर्यटकों, पत्रकारों और गैर मुल्की कर्मचारियों और नर्सों को बन्धक बनाना या कत्ल करना, पर्दा न करने वाली औरतों, शैक्षिक संस्थानों, समाचार पत्रों और दूतावासों पर हमला करना अवाम और देश के अमन व शान्ति को भंग करने की कोशिश करना क्या इस्लामी कानून के एतबार से दुरुस्त है?

कुरआन और हदीस की रोशनी में इन महत्वपूर्ण और संवेदन शील प्रश्नों का ज़बाब देने की कृपया करें।

अल मुस्तफती (फतवा पृष्ठने वाली संस्था)
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

उत्तर: निसंदेह इस्लाम पूरी सृष्टि के पालनहार अल्लाह का दिया हुआ अमन व शान्ति का धर्म है और वह पूरे संसार के लिये पूर्ण रूप से रहमत है उसमें किसी तरह के आतंकवाद की कोई गुनजाइश नहीं है। मध्यमार्ग पर आधारित इस धर्म ने मानव समाज की महानता व सम्मान का हमेशा ख्याल रखा है और अमन व शान्ति काइम करने में प्रशंसनीय रोल अदा किया है। “न नुकसान पहुँचाओ और न नुकसान उठाओ” के महान सिद्धांत पर आधारित इस धर्म ने समाज में बेचैनी पैदा करने वाले तत्वों के खिलाफ हमेशा आवाज उठायी है। अल्लाह तआला अत्यंत दयालु और अत्यंत मेहरबान है उसके अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजे गये। आप की शिक्षाएं हिंसा से खाली और दया व करुणा से भरपूर हैं। इस्लाम मध्यमार्ग, आपसी भाई चारा, मानवता और बिना किसी मतभेद के पड़ोसियों और मानव अधिकार को अदा करने का आदेश व उपदेश देता है अल्लाह के अधिकार के साथ मानव अधिकार को अदा करने

का आदेश देता है इस्लाम में अत्याचार और कत्ल शिर्क के बाद सबसे बड़ा अत्याचार और पाप है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“जिस शख्स ने किसी निर्दोष को कत्ल कर दिया तो गोया वह पूरे संसार का कातिल है और जिस ने किसी जान को बचा लिया तो गोया उसने पूरी मानवता को जिन्दा कर दिया”। (सूरे माइदा ३२)

इस्लाम की शिक्षा है कि जिहाद के समय भी दुश्मन के बच्चों, औरतों, बूढ़ों, पूजा करने वालों, प्रोहितों और जो अपने पूजा स्थलों में हों उनकी हत्या न की जाये, न बागात काटे जायें, न खेतियां जलाई जायें, न जानवरों को मारा जाये। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि एक नेक औरत जहन्नम में दाखिल हो गयी क्योंकि उसने एक बिल्ली को भूखा प्यासा बांध रखा था जिस की वजह से मर गयी। और एक गुनहगार इन्सान जिस ने एक प्यासे कुत्ते को कुर्वे से पानी भर कर पिला दिया था, वह स्वर्ग में चला गया।

इस्लाम की न्यायिक व्यवस्था में इस बात की कदापि गुनजाइश

नहीं है कि एक शख्स की गलती का इन्तेकाम दूसरे से लिया जाये। (सूरे अंआम-१६४)

इस्लामी हुक्मत में रहने वाले गैर मुस्लिमों को सुरक्षित रखना हुक्मत और मुसलमानों की जिम्मेदारी है उनको नाहक कत्ल करने वाले को स्वर्ग की हवा भी नहीं लगेगी। (सहीह बुखारी)

इसी प्रकार जंग के मैदान से बाहर रहने वाले कुफ़ार से भी लड़ाई नहीं की जा सकती। इमाम इब्ने कुदामा कहते हैं: इस्लाम के इमामों के दर्मियान इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि नाहक कत्ल हराम है।

इमाम इब्ने तैमिया और इमाम नव्वी फरमाते हैं: सबसे बड़ा पाप कुफ़र और शिर्क है तो इन्सान को नाहक कत्ल करना कैसे वैध हो सकता है। (फतहुल बारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं हिलाकत का गढ़ा जहां गिरने के बाद बाहर निकला असंभव है वह नाहक कत्ल है।

इस लिये बाज संगठनों के द्वारा देश के अमन व कानून को हाथ में लेने की कोशिश करना, सरकारी और व्यक्तिगत सम्पदाओं और सैनिक प्रतिष्ठानों

को तबाह करना, जहाजों को हाईजेक करना, पर्यटकों, पत्रकारों और गैर मुल्की कर्मचारियों और नर्सों को बन्धक बनाना या कत्ल करना, पर्दा न करने वाली औरतों शैक्षिक संस्थानों, समाचार पत्रों और दूतावासों पर हमला करना अवाम और देश के अमन व शान्ति को भंग करने की कोशिश करना, चौक चौराहों आम सड़कों पर बम फैंकना व बम धमाका करना, इस्लाम की दृष्टि से दुरुस्त नहीं है इस्लाम में भलाई का हुक्म देना और बुराई का इन्कार करने के लिये शर्त और सिद्धांत हैं इस पर उसको लागू नहीं किया जा सकता। और इस्लाम ने हर व्यक्ति के लिये तमाम मामलात की तरह कार्य सीमा निर्धारित की है जिनका पास न रखने की वजह से फितना व उपद्रव पैदा होता है और अशान्ति पैदा होती है।

दुर्भाग्य से आधुनिक युग में कुछ ऐसे संगठन वजूद में आ गये हैं जो इस्लाम का नाम लेकर मुसलमान के लिये बदनामी का कारण बने हुये हैं और उनके इकदामात किसी भी तरह से इस्लामी शिक्षाओं से मेल नहीं रखते बल्कि जो कार्य वह करते

रहे हैं वह इस्लाम में बिल्कुल हराम हैं और स्पष्ट रूप से आतंकवाद है और खिलाफत और इस्लामी हुक्मत का उनका स्वयंभू दावा एक पाखण्ड है और इस्लामी खिलाफत के विपरीत है न इसमें वह शर्तें पायी जा रही हैं और न ही खिलाफत के काइम होने के तकाज़े पूरे करते हैं हरम के प्रहान मुफ्ती और सऊदी उच्चतम ओलमा परिषद के अध्यक्ष मौलाना अल्लामा अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह आले शैख फरमाते हैं: दाइश और इस जैसे संगठन इस्लाम का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

सम्माननीय मौलाना अब्दुल मुहसिन बिन हम्द अल इबाद, शैख मु० अल मुंजिद इत्यादि और अरब के दूसरे महान व विश्वसनीय ओलमा-ए-किराम ने खुले शब्दों में कहा कि यह लोग उम्मत के ख्वारिज हैं भूतपूर्व में भी उनकी कम इल्मी और अज्ञानता की वजह से इस्लाम बदनाम हुआ है और जिसे यह लोग जिहाद कह रहे हैं वह एक फितना और आतंकवाद है क्योंकि जिहाद के कुछ सिद्धांत और शर्तें हैं जिनकी इनके पास कोई रियायत नहीं है और न वह इसके हकदार हैं इसी तरह इस्लामी खिलाफत के कुछ सिद्धांत

और शर्तें हैं जिन की पाबन्दी के बिना न कोई मुसलमानों का खलीफा हो सकता है और न ही किसी के लिये यह जाइज है कि ऐसे अत्याचारी के लिये अमीरुल मोमिनील जैसे भारी भरकम शब्द प्रयोग करें।

दाइश और इस जैसे संगठन जो हरकतें कर रहे हैं उनकी खबरें सुन कर और तस्वीर देख कर इन्सानियत चीख उठती है। यह हिंसा, अत्याचार, हत्या, लूटमार, फितना व फसाद देश के शान्ति पसन्द नागरिकों को बंधक बनाकर उन्हें हलाक करना, जला देना यह ऐसे कुकृत्य हैं जो इन्सान तो इन्सान जानवरों के साथ भी वैध नहीं हो सकते हैं और जिस खिलाफत का लिबादा ओढ़ कर इस्लाम के नाम पर बदनाम किया जा रहा है जो निसंदेह इस्लाम दुश्मन ताकतों और मानवता के कातिलों की गहरी साजिश का नतीजा मालूम होता है।

अफसोस है कि कुछ भोले भाले लोग इन अपराध को पीड़ित इन्सानों और मुसलमानों पर होने वाले अत्याचार की प्रतिक्रिया से परिभाषित करते हैं जो निसंदेह ज्ञान और विचार की कोताही है।

इस्लाम धर्म में किसी के पाप का बदला दूसरे निर्दोष इन्सानों को हलाक करके लेना वैध नहीं है जैसा कि कुरआन और हदीस और पूर्वजों (सलफ) के कथनों से स्पष्ट होता है।

हमारे सामने मजलूम हज़रत खुबैब बिन अदी का आदर्श मौजूद है कि जब जेल में उनके हाथों में चाकू देख कर एक औरत कांप उठी और उसे यह खतरा हुआ कि इस चाकू से मेरे निर्दोष बच्चे की गर्दन न काट दी जाये हज़रत खुबैब ने इस औरत के भय या बेचैनी को महसूस किया और उसके भय को खत्म करने के लिये फरमाया हम मुसलमान निर्दोष

बच्चों की हत्या नहीं करते और इस बच्चे को मां के हवाले कर दिया हालांकि उस वक्त उनको फांसी पर लटका देने और उनके बच्चों को अनाथ और बीवी को बेवा बना देने की तैयारी हो चुकी थी। दाइश एक ऐसा संगठन और सरफिरे लोगों का एक ऐसा गुट है जो इस्लामी ताकतों को कमजोर करने मुसलमानों में विखराव पैदा करने और इस्लाम की क्षवि को दुनिया के सामने बिगाड़ने और दुनिया को इस आसमानी मानवतावादी धर्म से घृणा के लिये वजूद में लाया गया है। यह निसंदेह मानवता के लिये

खतरा और उम्मते मुस्लिमा के पतन का कारण है।

इसलिये ऐसे संगठन आतंकवादी हैं और निंदनीय हैं और उनका सपोट करना और उनका किसी प्रकार से सहयोग करना इस्लाम में हराम है। मुस्लिमों के बुद्धिमान वर्ग का यह धार्मिक और चारित्रिक कर्तव्य है कि वह उनके खतरात से दुनिया को बतायें और मुस्लिम नौजवानों को उनका सपोट और भौतिक समर्थन से बचाने की कोशिश करें।

नोट:- यह फ़तवा दिनांक १५ फरवरी २०१५ को जारी किया गया।

आतंकवाद के विरोध में

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का सामूहिक फतवा

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की तरफ से आतंकवाद के विरोध में महान ओलमा और लगभग एक दर्जन मदर्सों के हस्ताक्षर से यह फतवा जारी किया जा रहा है।

प्रश्न: इस वक्त आतंकवाद के नाम पर पूरी दुनिया में हंगामा है। वैश्विक मीडिया से लेकर नेशनल मीडिया तक हर जगह आतंकवाद की चीख सुनाई देती है और देखने में इसके कई रूप हैं। धमाके, विनाशकारी, अपहरण, कत्ल आत्मघाती हमले, बसों और हवाई जहाजों को हाईजैक करना और उसे तबाह करना आदि। इस आतंकवाद के कारण जान माल सरकारी और प्राइवेट सम्पदाओं को नुकसान पहुंचता है। जनहित के अनेक प्रतिष्ठान तबाह होते हैं और निर्दोष लोग मारे जाते हैं। इस्लामी ओलमा और मुफ्ती इन सब चीजों के बारे में क्या राय रखते हैं कृपया हमें यह बतायें कि आतंकवाद को किसी भी सूरत में जगह मिल सकती है। इस्लामी कानून की दृष्टि से असमाजिक कार्रवाइयों

की क्या हैसियत है और इन्हें शरीअत किस नजर से देखती है?

उत्तर: धमाके, अपहरण, हत्या, आत्मघाती हमले, हवाई जहाजों और बसों को हाईजैक करके यात्रियों सहित तबाह करना और निर्दोष लोगों को जान से मारना आदि इन सब कामों की इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है। इस्लामी कानून में यह सब काम बिल्कुल हराम हैं। इन्हें कोई भी नाम दिया जाये और इनके पीछे कोई भी सबब बयान किया जाये यह सब काम हर हाल में हराम और गलत हैं। यह काम चाहे कोई मुसलमान करे या गैर मुस्लिम, चाहे आतंकवाद किसी मुस्लिम मुल्क में हो या किसी गैर मुस्लिम मुल्क में, हर हाल में हराम है।

हकीकत यह है कि जब कोई धमाका होता है या कोई विनाशकारी कार्रवाई होती है, अपहरण या हत्या होती है, या आत्मघाती हमले होते हैं, किसी आम सवारी या जहाज की हाई जैकिंग होती है तो लोगों के जान माल इज्जत और धर्म और

विश्वास खतरे में पड़ जाते हैं। शान्ति तहस नहस हो जाती है। निर्दोष लोग मारे जाते हैं, जन सम्पदा (पब्लिक प्रापर्टी) तबाह होती है। इंसान भावुकता का शिकार हो जाता है और सारी धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं का दामन छोड़ देता है जब कि इस्लाम इन सबकी सुरक्षा की गारंटी देता है। अल्लाह तआला फरमाता है “इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फसाद करने (की सज़ा) के मारता है वह गोया (हकीकत में) तमाम लोगों को कत्ल करता है जो लोग दंगा फसाद करके गोया अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और मुल्क में फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं उनकी सजा बस यही है कि कत्ल किये जायें या उनके हाथ पांव उल्टे सीधे काट दिये जायें या उनको देश से निकाल दिया जाये (यह सब सूरतें हाकिम की राय के अनुसार हों) यह

जिल्लत उन (फसादियों के लिये दुनिया में है और) अभी आखिरत में बड़ा अजाब (बाकी) है। सूरे माइदा-३२-३३

कुर्आन की इन दो आयतों से स्पष्ट है कि इस्लामी सजाओं का मकसद ही यह है कि इंसानों की जान माल इज्जत और धर्म व अक्ल तबाह न हो, उनको सुरक्षा मिले, जन शान्ति बाकी रहे, किसी आदमी या गुट को कानून को तोड़ने और मनमानी का अवसर न मिले, और जो विनाशकारी हरकत करें, उपद्रव फैलायें, हत्या करें उन्हें निश्चय सजा मिलनी चाहिये।

कुर्आन में अल्लाह तआला फरमाता है: और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी बातें तुझ को दुनिया में भली मालूम होती हैं और जो कुछ दिल में है उस पर अल्लाह को गवाह करता है, जब फिर जाता है तो जमीन में दौड़ धूप करता है कि उसमें फसाद फैलाये और खेतों को बर्बाद करे और चौपायों और नस्ल को मार दे। और अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता है। (सूरे बकरा-२०४-२०५)

ऐसी मेहनत और प्रयास जो इंसान को तबाह कर दे, सम्पदा को नुक्सान पहुंचाये, जिससे शान्तिपूर्ण माहौल में उपद्रव फैल जाये, यह

सब चीज अल्लाह को बिल्कुल पसंद नहीं है इसको किसी भी तरह वैध (जायज) नहीं ठहराया जा सकता। जो लोग अक्ल से काम नहीं लेते, नफरत और दुश्मनी उनकी सोच बन जाती है, इंतेंकाम (प्रतिशोध) उनका लक्ष्य बन जाता है, इस्लाम और क़ानून की उन्हें कोई परवाह नहीं होती, ऐसे ही लोग जमीन में उपद्रव फैलाते हैं। इन सब अपराधों का कामों की कुर्आन ने निंदा की है और सख्ती से रोका है। साथ ही सकारात्मक व्यवहार अपनाने पर उभारा है। अल्लाह तआला फरमाता है।

“और किसी कौम की दुश्मनी से अन्याय न करने लगे बल्कि हर हाल में न्याय ही किया करो क्योंकि न्याय परहेजगारी के बहुत ही करीब है (सूरे माइदा-८)

किसी भी इंसान या गुट को किसी कौम या किसी इंसान से दुश्मनी है तो उसके लिये यह जायज नहीं कि वह दुश्मनी के नशे में सारी सीमाओं और क़ानून को तोड़ डाले और जिस से दुश्मनी है उसके साथ जुल्म और अन्याय का व्यवहार करे। इस्लाम ने हर हाल में इंसफ की तालीम दी है चाहे किसी से कितनी ही दुश्मनी क्यों न हो।

विनाशकारी कामों में जुल्म सिर्फ

एक आदमी पर नहीं बल्कि बहुत सारे निर्दोष लोगों पर होता है। कभी कभार इसमें सैकड़ों बल्कि हजारों जानें तबाह हो जाती हैं। और जन सम्पदा बर्बाद हो जाता है।

ऐसी सूरत में इन कामों के हARAM होने में क्या शक हो सकता है? यह बिल्कुल हARAM हैं। इंसफ करने का आदेश कुर्आन की दूसरी आयतों में भी दिया गया है। अल्लाह तआला फरमाता है “अल्लाह तुम को इंसफ करने का हुक्म देता है और (हर एक के साथ) एहसान करने का और संबन्धियों को जरूरत के मुताबिक देने का और बेहयाई (यानी ज़िना, उसकी तरफ उभारने वाली चीजों) और नाजायज हरकतों से और अत्याचार करने से मना करता है तुम को नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत पाओ। (सूरह नहल-१०)

इस आयत में इंसफ, संबन्धियों के साथ भलाई का हुक्म और बेशर्मी, अत्याचार हिंसा और बगावत से रोका गया है।

यह सारी आयतें इतनी व्यापी हैं कि इनकी रोशनी में किसी भी तरह की मनमानी अत्याचार अधिकार हनन, जान माल, इज्जत और दीन धर्म पर हमला करने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

हर तरह के अत्याचार हिंसा और अधिकार हनन का उपचार इस्लाम में मौजूद है और उसका तरीका भी बताया गया है, उनको दूर करने के लिये जिस को कानूनी अधिकार दिये गये हैं उसे यह अधिकार इस्तेमाल करना चाहिये और लोगों को निराज और उपद्रव नहीं फैलाना चाहिये।

अल्लाह ने मुसलमानों को मुसलमानों पर भी किसी तरह का अत्याचार करने से रोका है। अल्लाह फरमाता है “जो लोग मुसलमान मर्दों और औरतों पर बगैर किसी (लानत मलामत) के काम की यातनायें देते हैं वह बहुत बड़ा बोहतान और खुले पाप का बोझ अपनी गर्दन पर उठाते हैं (सूर अहजाब ५८१)

मुहम्मद स० ने फरमाया

हर मुसलमान की जान इज्जत और माल दूसरे पर हाराम है। (बुखारी, ४०४ मुस्लिम-२५२४)

मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से मुसलमान महफूज रहें। (बुखारी ५१ मुस्लिम-४०)

रसूल स० ने फरमाया: बेशक अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि तुम नर्मी अपनाओ ताकि कोई किसी पर अत्याचार न करे और न कोई किसी पर फख (गर्व) करे। इन

हदीसों से स्पष्ट है कि किसी मुसलमान के लिये जायज नहीं कि किसी को किसी तरह सताये और किसी के जान माल और इज्जत के लिये खतरा बने या किसी पर

अत्याचार करे। इस फतवे पर जिन मुफती ओलमा और मदर्सों के पद्धतारियों के हस्ताक्षर हैं। वह यह है।

● ● ●

Handwritten signatures and text in Urdu, including dates like 18/3/2006 and 14/3/2006, and names of religious scholars.

Handwritten signatures and text in Urdu, including names of religious scholars and dates.

यह फतवा दिनांक

१८ मार्च २००६ को जारी किया गया।

हम आतंकवाद के निरन्तर विरोध में क्यों?

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

पिछले दिनों कुछ मुस्लिम और गैर मुस्लिम लीडरों की तरफ से यह बात आती रही कि हम आतंकवाद पर शुरू ही से निरन्तर काफ्रेन्स, सिम्पोज़ियम, सेमीनार, सम्मेलन और सभाएं क्यों आयोजित करते हैं? आतंकवाद विरोधी व्यक्तिगत बयानात, सामूहिक बयानात और विरोध का यह सिलसिला मुसलमान विशेष रूप से जमीअत और जमाअत अहले हदीस ने क्यों शुरू कर रखा है? सामूहिक और व्यक्तिगत फतवा के जारी करने का जो असीमित सिलसिला मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने २००६ के आरंभ से शुरू किया था और पूर्व प्रधान मंत्री, ग्रह मंत्री, ग्रह राज्य मंत्री, डिप्टी स्पीकर, मुख्य मंत्री, विभिन्न दलों के प्रतिनिधि, सांसद, मुस्लिम, हिन्दू, ईसाई धार्मिक एवं समाजी मार्गदर्शक, राजनीतिक लीडरान और राजनीतिज्ञ, ओलम, धर्म गुरु, मुस्लिम संगठनों के मुखिया और प्रतिनिधि के हाथों आतंकवाद विरोध की फतवों का विमोचन और इसका

बार बार प्रकाशन और प्रचार व प्रसार क्यों होता है? मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द आतंकवाद के विरुद्ध अपनी पत्रिकाओं के विशेष एडीशन बार बार क्यों प्रकाशित करती है। इसके पदधारी केवल राष्ट्रीय राजधानी ही नहीं बल्कि देश के लगभग हर राज्य और जिलों में आतंकवाद के खिलाफ प्रेस रिलीज, जनसभाएं, सम्मेलन, सिम्पोज़ियम का आयोजन और प्रेस रिलीज क्यों जारी करते हैं? इतनी अधिकता से जमीअत अहले हदीस विभिन्न जिलों, नगरों और राज्यों में आतंकवाद के खिलाफ प्रेस रिलीज, जन सभाएं, सम्मेलन, सिम्पोज़ियम का आयोजन और प्रेस रिलीज क्यों जारी करते हैं? इतनी अधिकता से जमीअत अहले हदीस विभिन्न जिलों, नगरों और राज्यों में आतंकवाद के विरोध में क्यों इतना संगठित काम करती है? आखिर मुसलमान ही यह सफाई क्यों दे रहे हैं आदि? जवाब यह है कि हम आतंकवाद को हराम करार देते हैं

हमारे धर्म और विचारधारा (मसलक) में सबसे बदतरीन बुराई आतंकवाद है जो वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर है। हत्या और गारतगरी से बढ़कर आतंकवाद का फितना है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है “और (सुनो) फितना कत्ल से ज्यादा सख्त है” (सूरे बकरा १६१) इस आयत में जो चेतावनी, शिक्षा उपदेश फितनों से दूर रहने की दी गयी है और इन फितनों में सबसे बदतरीन मनहूस और निन्दनीय अतिशयोक्ति अतिवाद, हिंसा और आतंकवाद है और सलफ सालिहीन इमाम, मुहद्दीसीन और औलिया ने बगावत ही को सबसे बड़ा फितना माना है और इब्ने अशअस और खवारिज के फितने के बाद लगभग तमाम इमामों ने बगावत और भय व आतंक के इन कामों और विचारों को खत्म करने का हर संभव प्रयास किया है। उन्होंने शासकों खलीफ़ा और समय के शासक का आज्ञापालन को फर्ज करार दिया और आस्था विचार धारा

और सिद्धांत से संबन्धित किताबों में शासकों, और सम्माननीय खलीफा का आज्ञापालन का स्थायी रूप से उल्लेख करना शुरू किया अर्थात् इस्लामी आस्था का एक महत्वपूर्ण अंग शासकों का आज्ञापालन बताया गया है और हमेशा के लिये आस्था का बुनियादी अध्याय शासकों का आज्ञापालन करार दिया गया और उनके खिलाफ बगावत को असली गुमराही बताया गया और यह सर्वमान्य बातों में से है और बुद्धिमान अमन व शान्ति की महत्ता को जानता है मगर इस्लाम ने अमन व शान्ति की जो महत्ता बतायी है उसका सारांश यह है कि दुनियावी नेमतों में से सबसे बड़ी नेमत शान्ति और सुरक्षा है।

इस्लाम वास्तव में प्राकृतिक और मानवता का धर्म है और पूरी सृष्टि के स्वामी ने ही इस्लाम के उज्ज्वल सिद्धांत और उसकी सुनहरी शिक्षाएं प्रदान की हैं इसलिये वह पूरी मानवता के लिये रहमत और करुणा है। इस्लाम का अर्थ ही अमन व शान्ति सुरक्षा और अल्लाह और उसके आदेशों के सामने स्वयं को समर्पित करने के हैं और उसका आज्ञापालन करने वाले को मुसलमान कहते हैं

अतः मुसलमानों का काम ही यह है कि वह अल्लाह के सामने हमेशा आज्ञापालन करते रहें, उसकी खुशी के इच्छुक रहें उसकी नाराज़गी से बचें, और यह बात हर मुसलमान अच्छी तरह जानता है कि अल्लाह अत्यन्त दयालू है वह अपने बन्दों से असीम प्रेम करता है इसी लिये उसने अधिकार तय किये हैं जिनको पूरा करना हर मुसलमान और इन्सान पर फर्ज करार दिया है। अल्लाह ने अत्याचार को अपने ऊपर हराम कर लिया है और रहमत और मुहब्बत में संपूर्ण होने की वजह से उसने अत्याचार को इन्सानों के लिये भी हराम करार दिया है और इससे दूर रहने का कड़ा आदेश दिया है। अल्लाह ने अपने तमाम बन्दों को बिना किसी भेद भाव, रंग नस्ल, धर्म समुदाय और क्षेत्र एक दूसरे पर आतंकवाद को हराम करार दिया है और अत्याचार को अपने क्रोध का कारण बताया है। अल्लाह कहता है कि ऐ मेरे बन्दों हमने अपने ऊपर अत्याचार को हराम करार दे दिया है और तुम्हारे बीच भी अत्याचार को हराम करार दे दिया है इसलिये तुम एक दूसरे पर अत्याचार न करो। (सहीह मुस्लिम)

इस आदेश में मुसलमान और

गैर मुसलमान के बीच कोई अन्तर नहीं रखा है जैसा कि एक दूसरी हदीस में है जिसमें ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मजलूम की बददुआ से बचो अगरचे वह मजलूम काफिर ही क्यों न हो क्यों कि इस बददुआ (अभिशाप) के बीच कोई पर्दा और रुकावट नहीं होती (तिर्मिज़ी)

ईश्वर ने हर काम के शुरू में बिस्मिल्लाह को ज़रूरी करार दिया है उसने अपनी विशेषता रहमान (कृपाशील) रहीम (दयावान) की विशेषता को अल्लाह के साथ बिस्मिल्लाह में प्रयोग करने का हुक्म दिया है क्यों कि उसकी तमाम खूबियाँ संपूर्ण होने के बावजूद उसकी रहमत कष्ट और क्रोध पर हावी है अल्लाह के दया करुणा में परिपूर्णता का भी तकाज़ा है कि उसने अत्याचार भय और आतंक को हराम करार दिया और उसे अपनी हिकमत और न्याय में परिपूर्ण होने की वजह से अत्याचार को हराम ठहराया और अत्याचारी को सज़ा सुनायी यहां तक कि अत्याचारी अपने अत्याचार से रुक जाये अपने पालनहार से क्षमायाचना करे और उसके बन्दों से अपना मामला साफ और मआफ करा ले।

वास्तव में अल्लाह ने जो इस्लामी कानून और जो आदेश अपने बन्दों के लिये जारी किये हैं वह स्वयं रहमत है और अत्याचार और आतंकवाद के खात्मे के लिये इस्लाम ने जो सजायें तय की हैं वह आतंकवादियों के लिये जाहिरी तौर पर बहुत कड़ी और सख्त हैं मगर न्याय और मानव अधिकार की सुरक्षा की जमानत भी लेती हैं इसलिये कि सास (खूने के बदले खून) जो हुक्म तलेती है उसे मानव की सुरक्षा और जीवन करार दिया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है “अकलमन्दों केसास में तुम्हारे लिये जीवन है इसकी वजह से तुम नाहक कल्ल से रूकोगे”। (सूरे बकरा-99६)

कुरआन में ईश्वर ने फरमाया “उनकी सज़ा जो अल्लाह तआला से और उसके रसूल से लड़ें और जमीन में फसाद करते फिरें, यही है कि वह कल्ल कर दिये जायें या सूली पर चढ़ा दिये जायें या मुखालिफ जानिब से उनके हाथ पांव काट दिये जायें या उन्हें जिलावतन (देश निर्वासित) कर दिया जाये यह तो हुयी उनकी दुनियावी जिल्लत (अपमान) और आखिरत में उनके लिये बड़ा भारी

अजाब है”। (सूरे माइदा ३३)

कुरआन की इस आयत में हर देश, समुदाय, सूसाइटी और नागरिक के लिये दया करुणा का पैगाम है यह कड़ी सजायें जहां ईमान विश्वास और स्पष्टीकरण उपदेश के काम नहीं आती वहां अत्याचार, आतंकवाद और बगावत को रोकने के काम आती हैं।

दूसरे यह कि इस्लाम धर्म भलाई चाहने वाला है इसलिये भलाई वाले धर्म और मुसलमान होने का तकाजा यह है कि पूरी मानवता की भलाई की जाये। कुरआन में ईश्वर फरमाता है “तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों की भलाई के लिये पैदा किये गये हो कि तुम अच्छी बातों का हुक्म करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो”। (सूरे आल इमरान 99०)

चूंकि आतंकवाद वर्तमान काल की सबसे बड़ी बुराई है इससे रोकने और देश एवं समाज को बचाने की जिम्मेदारी भी हम मुसलमानों की सबसे ज्यादा है इसलिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द इस पवित्र भावना और उच्च मकसद, आवश्यकता और कर्तव्य के तहत २००४ ई०

से ही अम्न व शान्ति सौहार्द, राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ावा देने के लिये अभियान छेड़ रखा है और इस बारे में कांफ्रेंस, सेमीनार, सिम्पोज़ियम और पत्रिकाओं के विशेष अंको का विमोचन और हर संभव साधन प्रयोग कर रही है और पूरी ऊर्जा के साथ आतंकवाद के उन्मूलन और तआकुब (विरोध) में लगी हुयी है यहां तक कि देश और पूरी दुनिया में अम्न व शान्ति स्थापित हो जाये और लोग बिना भय और शंकाओं के जीवन की बहारें लूटने लगे यही हमारी आस्था विचार और सिद्धांत है और कटटरवाद के आरोप और सलफी विचार धारा के हिंसक और अहिंसक होने की बातें दुश्मनों और अशुभचिंतकों की उड़ाई हुयी हैं और इस्लाम दुश्मनों का शोशा और षड़यंत्र है जो सहीह सिद्धांत न रखने वाले, सहाबा का अपमान करने वाले, शासकों और समाज को काफिर करार देने वाले अपने अपरिणाम दर्शिता को छुपाने के लिये कर रहे हैं। ऐ अल्लाह हमें ऐसे लोगों से सुरक्षित रख।



गैर-मुस्लिमों के साथ मध्यम व्यवहार

प्रो० डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

इस्लाम शान्ति प्रदान करने वाला धर्म है। इसीलिए अल्लाह ने मुहम्मद स० को रहमतुल्लिल आलमीन (सारे संसार के लिए दयानिधि) बनाकर भेजा। आप स० ने मक्का विजय होने के बाद अपने उन शत्रुओं को भी माफ कर दिया जो आपको कत्ल करने का षड़यंत्र रच रहे थे और जिनके कारण आपको मक्का से हिजरत (देश त्याग) करनी पड़ी। आप ने एक से अधिक अवसरों पर अपने शत्रुओं को क्षमा कर दिया, जिससे आपके जीवन चरित्र की महानता के रूप को देखा जा सकता है।

कुरआन भी इस बात की पुष्टि करता है कि गैर मुस्लिमों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए।

“जिन लोगों ने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला उनके साथ अच्छा व्यवहार करने, और उनके साथ न्याय करने से अल्लाह तुम्हें

नहीं रोकता। अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है”। (सूरा ६० अल मुत्तहिना, आयत-८)

यहां तक कि अगर कोई मुसलमान हो जाए और उसके माता-पिता विधर्मी ही रह जाएं तो भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश है।

“यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा साझी बना, जिसका तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं तो उनका कहना न मानना, और दुनिया में उनके संग अच्छा व्यवहार करना” (सूरा-३१ लुकमान आयत-१५)

सार यह कि न तो सारे गैर मुस्लिम हमारे शत्रु हैं, न हम उनके शत्रु हैं, बल्कि वे तो इस्लामी संदेश के प्रथम संबोधित हैं, और हम पर यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि उन तक सही इस्लामी संदेश पहुंचाएं।

“निसन्देह अल्लाह न्याय और भलाई करने, और नातेदारों को उनका

हक देने का हुक्म देता है। और निर्लज्जता के कर्मों तथा बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें सदुपदेश देता है, ताकि तुम ध्यान दो”। (सूरा-१६, अन नहल आयत-६०)

इस प्रकार इस्लाम जीवन के हर क्षेत्र में मध्यमार्ग अपनाने का आदेश देता है और इससे इतर मार्ग को अपनाने से कठोरता से मना करता है, ताकि एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा सके, जहां मुस्लिम और गैर-मुस्लिम समुदाय के सभी लोग मिल जुलकर जीवन व्यतीत कर सकें, और किसी को किसी से भय न हो।

इसलिए हर मुसलमान पर अनिवार्य है कि इस मध्यमार्ग को अपनाए, ताकि दूसरों के लिए इस्लाम उत्तम आदर्श बन सके।

